I, II.

श्रीः

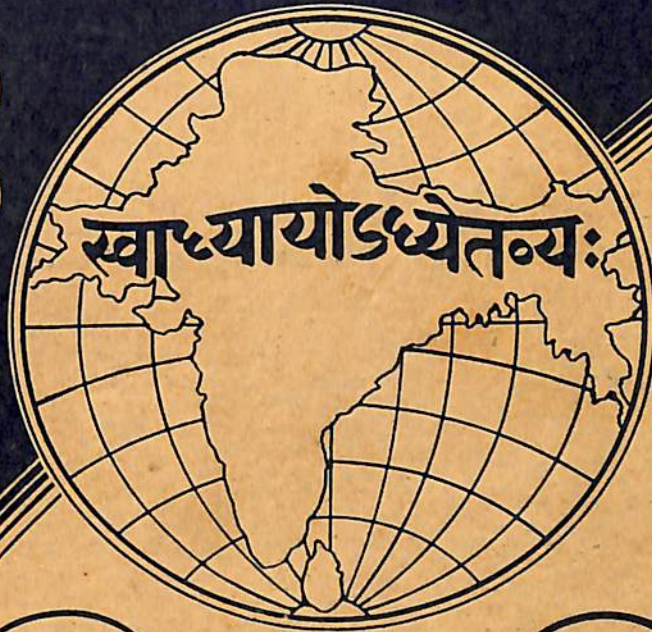
त्रैमासिक

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्ताङ्क]

वर्ष १
सं० १९९८

संख्या २
पौष



वार्षिक मूल्य २) रु०

इस अङ्क का मूल्य ।।=)

संस्थापक—
श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्य

सम्पादक—
श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी

* विषय-सूची *

❀ श्रीः ❀

श्रीस्वाध्याय

[त्रैमासिक-पत्र]

संस्थापक तथा प्रधानाध्यक्ष—

श्रीस्वाध्याय—

सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य

श्री १०८ मान् अमृतवाग्भवजी महाराज

संरक्षक—

बघाटमहीमहेन्द्र धर्ममार्तण्ड

राजा श्री १०५ मान् दुर्गासिंहजी बहादुर C. I. E. सोलन (शिमला)

रावजी साहब श्री १०५ मान् गिरिधारीशरणसिंहजी भरतपुर ।

सहायक—

श्री १०५ मती मांजी महाराणी साहिबा (सिरमौरीजी) बघाटराज्य ।

श्रीमान् सरदार कुँवर रणदीपसिंहजी नाहन (सिरमौर)

श्रीमान् कुँवर शिवसिंहजी B. A., L-L. B. सेशन जज सोलन ।

श्रीमान् कुँवर ईश्वरीसिंहजी सुपरिण्टेण्डेण्ट कोर्ट आफ वार्ड्स उदयपुर (मेवाड़)

श्रीमान् सरदार जगजीतसिंहजी ढिल्लों B. A., L-L. B. नाभा ।

सम्पादक और व्यवस्थापक—

ज्योतिषमार्तण्ड ज्योतिर्विद्यारत्न दैवज्ञमणि गणकरत्न

श्री पं० हरदेव शर्मा त्रिवेदी ज्योतिश्शास्त्री

प्रकाशक—

श्रीस्वाध्यायसदन सोलन (पंजाब)

श्रीस्वाध्यायके नियम तथा उद्देश्य

उद्देश्य—

समस्त संसारको हितकी ओर ले जाना तथा ऐहलौकिक और पारलौकिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्त कराना "श्रीस्वाध्याय" का उद्देश्य है।

संचालक गणोंके नियम—

संरक्षक—

(१) जो महानुभाव ३००) तीन सौ रुपये से अधिक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के संरक्षक माने जाएंगे।

सहायक—

(२) जो सज्जन ५०) से ३००) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सहायक माने जाएँगे।

सम्मान्य ग्राहक—

(३) जो सज्जन २) से अधिक ५०) रु० तक प्रति वर्ष सहायता देंगे वे 'श्रीस्वाध्याय' के सम्मान्य ग्राहक माने जाएंगे।

श्रीस्वाध्यायके नियम—

(१) 'श्रीस्वाध्याय' (जब तक त्रैमासिक रहेगा तब तक) आश्विन शुक्ल १०, पौष शुक्ल १०, चैत्र शुक्ल १० और आषाढ़ शुक्ल १० को प्रकाशित हुआ करेगा। इस त्रैमासिक संस्करणका वार्षिक मूल्य २) रु० है। एक प्रति का ।।=) और विशेषांक का मूल्य ।।।) होगा। श्रीस्वाध्यायके स्थाई ग्राहकों को हमारी "श्रीग्रन्थमाला" की सभी अद्भुत अमूल्य पुस्तकें बिना मूल्य (मुफ्त) दी जावेंगी। ऐसी सर्वोपयोगी अमूल्य पुस्तकें कोई भी मासिक पत्र प्रति वर्ष अपने ग्राहकों को बिना मूल्य नहीं देता। यह 'श्रीस्वाध्याय' के ग्राहकों को विशेष लाभ है। पर्याप्त संरक्षक, सहायक और ग्राहक होने पर बहुत शीघ्र ही 'श्रीस्वाध्याय' को मासिक कर दिया जायगा।

(२) जिन सज्जनोंके लेख श्रीस्वाध्याय सदनकी ओरसे प्रार्थना पूर्वक मँगवाये जाएँगे वे अवश्य प्रकाशित होंगे। अन्य लेख यदि गवेषणापूर्ण मौलिक और उपयोगी समझे जायेंगे तो यथा समय प्रकाशित हो जावेंगे, अन्यथा नहीं।

(३) लेख, कविता, चित्र, समालोचनार्थ पुस्तकों की दो-दो प्रतियां और विनिमय (परिवर्तन) के पत्र पत्रिकायें सम्पादक श्रीस्वाध्याय सोलन (पंजाब) के पते से भेजने चाहियें। १६

(४) लेख, कविता आदि प्रकाशनार्थ सामग्री स्पष्ट अक्षरोंमें कागजके एक ओर ही लिखी होनी चाहिए।

(५) किसी लेखके प्रकाशित करने या न करने, उसे घटाने बढ़ाने तथा उसे लौटाने या न लौटाने का सम्पूर्ण अधिकार सम्पादक को है। जिस अस्वीकृत लेखको सम्पादक लौटाना स्वीकार करें, उसका डाक और रजिस्ट्री का खर्चा लेखक को भेजना होगा। अधूरे लेख नहीं लिये जाते।

विज्ञापन छपाईके नियम—

१ पृष्ठ या दो कालम की छपाई	२०) प्रति अंक
आधा पृष्ठ या एक कालम की छपाई	११) ,,
चौथाई पृष्ठ या आधा ,, ,,	६) ,,

पूरे वर्ष या चार अंकों में एक पृष्ठ की छपाई ६५) रु० होगी।

त्रैमासिक 'श्रीस्वाध्याय' के पृष्ठका आकार २०×३० अठपेजी। कालम स्थान ८×३ इञ्च है।

आधे पृष्ठ से अधिक विज्ञापन देनेवालों को 'श्रीस्वाध्याय' बिना मूल्य भेजा जावेगा। छपाई की रकम पेशगी प्राप्त होने पर ही विज्ञापन पत्र में छापा जावेगा।

विशेष जानने के लिए—

व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (शिमला)

से पत्र व्यवहार करें।

श्रीस्वाध्याय

(त्रैमासिक पत्र)



श्रीस्वाध्याय—अत्यन्त लोकप्रिय हो रहा है। कारण—

श्रीस्वाध्याय—मोक्ष रहस्य तथा दार्शनिक मतमतान्तरोंका परिचय करानेमें अद्वितीय पत्र है।

श्रीस्वाध्याय—धर्मके मर्म समझनेमें अत्यन्त सुन्दर सरल रीतिसे सहायता करता है।

श्रीस्वाध्याय—द्रव्योपार्जन तथा संरक्षण करनेके अनेक प्रकारोंको बतलाता है।

श्रीस्वाध्याय—सांसारिक सुख, स्वास्थ्यसाधन तथा कला-कौशलका तत्त्व प्रकाशित करता है।

श्रीस्वाध्याय—भारतीय इतिहास प्रकाशित करनेका असाधारण साधन है।

श्रीस्वाध्यायको—भलीभांति पढ़ने और समझनेसे मनुष्य स्वावलम्बी, निर्भय, उदार, आर्य एवं व्यवहारकुशल होकर संसारयात्रामें विजयी हो सकता है।

श्रीस्वाध्यायने—अपने प्रथमाङ्कमें ही आगामी वर्ष भरके भारतीय वेधसिद्ध दैनिक सूक्ष्मग्रह तथा शर, क्रान्ति, योग प्रतियोग आदि प्रचारित करनेका दृढ़ निश्चय करके महान् लोकोपकार किया है।

श्रीस्वाध्यायके लिए—भारतके प्रसिद्ध विद्वानोंकी सुन्दर २ सम्मतियां और महापुरुषों के आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं।

श्रीस्वाध्यायसे—भारतीय महान् आदर्श तथा हमारी प्राचीन विद्याओंका पुनरुद्धार होगा।

श्रीस्वाध्यायका—पठन पाठन प्रत्येक प्रकारके उन्नति मार्गका प्रबोधन करायेगा।

श्रीस्वाध्यायमें—राष्ट्रको स्वतन्त्र करनेके प्रत्येक वैध उपायोंके साथ दर्शन, अर्थशास्त्र, ज्योतिष-गणित-फलित-मुहूर्त, संस्कार, व्रतोत्सवादि निर्णय, दायभागादि धर्मशास्त्र निर्णय, सामाजिक व्यवस्थाएँ, संसारकी सामाजिक-धार्मिक-राजनैतिक व व्यापारिक परिस्थिति पर महत्वपूर्ण चमत्कारी भविष्य-वाणियां, आयुर्वेद, भूगोल, खगोल, महापुरुषोंके जीवन-चरित्र, विज्ञानके चमत्कार, ग्रन्थ-परिचय समालोचन इत्यादि विषयों पर अनुभवी विद्वानोंके गम्भीर लेख प्रकाशित होते हैं।

पता—व्यवस्थापक श्रीस्वाध्यायसदन, सोलन (पंजाब)।

श्रीस्वाध्यायका—

भारतीय विचक्षणवर्ग

किस दृष्टिसे देखता है !—

"श्रीस्वाध्याय" पर प्राप्त हुई सम्मतियोंमेंसे भारतके सम्मानित विद्वानोंकी कुछ सम्मतियाँ देखिये—

अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातिप्राप्त विद्वान् मध्यभारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलनके सभापति श्री पं० सूर्यनारायणजी व्यास उज्जैन से लिखते हैं—

"स्वाध्याय" सुन्दर निकला है, काफी सुन्दर सामग्री भी उसमें संजोई गई है।

❀ ❀ ❀

सनातनधर्म प्रतिनिधिसभा पंजाबकी विद्वत्परिषद्के मंत्री श्री पं० रघुनाथदत्त जी 'बन्धु' शास्त्री लाहौर से लिखते हैं—

श्रीयुत त्रिवेदी जी ! आपका भेजा श्रीस्वाध्यायका शरदङ्क मिला। पत्र सुन्दर है, लेख सभी अच्छे हैं। श्री अमृतवाग्भवाचार्यजीके लेख बड़े महत्त्वके हैं, आचार्य धर्मके रहस्य सरल रोचक तथा युक्ति-युक्त बनाने में सिद्धहस्त हैं।

श्री सूर्यनारायणजी व्यासके लेखमें लिखा है..................ऐसे विद्वानोंके लेखोंसे भारतीय फलित ज्योतिषका गौरव अवश्य ही बढ़ेगा।

श्री० सखाराम पुरुषोत्तम जी जोशीके संवत् १९९९ के दैनिक ग्रह ज्योतिषियोंके बड़े कामकी चीज है, उससे मुहूर्त जन्म-पत्र वर्ष-फल बनानेमें उन्हें विशेष सुविधा होगी..................। आपके लेख तो सुन्दर होते ही हैं; और रावजी साहेबने भी अपने अच्छे अनुभव लिखे हैं।

❀ ❀ ❀

पंजाबके सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्र "विश्व-बन्धु" के सुयोग्य प्रधान सम्पादक श्री० बी० पी० माधवजी लाहौरसे लिखते हैं—

"स्वाध्याय" का शरदङ्क देखा, चित्त प्रसन्न हुआ। काफी परिश्रम किया है आपने, और काफी पठनीय सामग्री दी है। ऐसे गम्भीर पत्र से पंजाब का मुख उज्वल होगा।

❀ ❀ ❀

अखिल भारतवर्षीय श्रीगुर्जरगौड़ ब्राह्मण महासभाके प्रधान मंत्री श्री पं० बालकृष्णजी द्विवेदी बन्दबरेठा भरतपुर से लिखते हैं—

"श्रीस्वाध्याय" जिन उद्देश्योंको लेकर संसारमें आयाहै, ईश्वर इसको सफलता दे। आज दिन इसकी बड़ी आवश्यकता थी जो आपने पूरी की। इसके लिए आपको धन्यवाद है।

भारतका वायुशास्त्र—वृष्टिप्रबोध—संक्रान्तिफलप्रकाश सुदर्शनचक्र ग्रहणफलदर्पण बृहदर्ध्यमार्तण्ड आदि अनेकों ग्रन्थोंके रचयिता ज्योतिश्शास्त्रके मर्मज्ञ भारतके वयोवृद्ध प्रसिद्ध विद्वान् श्री पं० मीठालाल जी व्यास जोधपुर से लिखते हैं—

"श्रीस्वाध्याय" को आद्योपान्त देखनेसे विदित हुआ कि यह पत्र ज्योतिर्विज्ञानके क्षेत्रमें भी काफी ख्याति प्राप्त कर सकेगा। ग्रहोंके चमत्कारमें सूक्ष्म गणितके दैनिक स्पष्ट ग्रह शर क्रान्ति सहित लिख कर तथा ग्रहोंका योग प्रति योग देकर ज्योतिषियोंका अच्छा उपकार किया है...............अब अंग्रेजी रैफल्ज-ऐफेमैरीजकी आवश्यकता ही नहीं रहती।

जयपुर राजकीय गाणितिक वेधशालोपाध्यक्ष (असिस्टेंट एस्ट्रानामिकल अवझर वेटरी) श्री पं० कन्हैयालाल जी ज्योतिषी जयपुरसे लिखते हैं—

"श्रीस्वाध्याय" पत्र अत्युत्तम है। वर्तमान युगके लिए अतीव सुन्दर कार्य किया है।

आनन्द ज्योतिष-कार्यालयके अध्यक्ष दैवज्ञरत्न श्री पं० आनन्दस्वरूप जी ज्योतिषी लुधियानासे लिखते हैं—

"स्वाध्याय" की प्रति धन्यवाद सहित प्राप्तकी। इस विशेषाङ्कको पढ़कर मनको बड़ी प्रसन्नता हुई। इस परिश्रमके लिए आप धन्यवादके पात्र हैं और परमेश्वरसे प्रार्थना है कि वह आपको इस कार्यमें पूर्णतया सफल करें। इसमें जो आपने दैनिक ग्रह स्पष्ट लिखे हैं यह बड़े परिश्रमका कार्य है और ऐसा कार्य है जो भारतके किसी भी पञ्चाङ्ग में प्राप्य नहीं है।

राजकुमारगुरु ज्यौतिषालङ्कार ज्योतिर्भूषण दैवज्ञभूषण विद्याभूषण पं० तारादत्तजी राज ज्योतिषी जुब्बल स्टेटसे लिखते हैं—

श्रीशप्रसादादिदमद्य लब्धं स्वाध्यायपत्रं हृदयारविन्दम्।
आह्लादयन्नेत्रपथेन साक्षात् कृत्वा सुधाया इव सुप्रवेशम्॥

श्रीस्वाध्यायमें क्या क्या होगा ?

विज्ञ पाठकोंको 'श्रीस्वाध्याय' के उद्देश्य तथा नीतिका ज्ञान तो भलीभांति हो ही गया है। इसमें जो मोक्षादि पांच प्रधान स्तम्भ रक्खे गये हैं—उनके अन्तर्गत किन किन विषयों पर लेख लिखे जा सकते हैं? इसकी एक संक्षिप्त सूची हम नीचे दे रहे हैं। इस तालिका द्वारा हमारे विद्वान् लेखकोंको विषय चुननेमें सुविधा होगी।

मोक्षस्तम्भमें—

भारतीय दर्शनोंका संक्षिप्त परिचय। न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त (शाङ्कर रामानुज निम्बार्क माध्व श्रीकण्ठ भास्कर आदि मतोंका संक्षिप्त सार) शैव (त्रिक प्रत्यभिज्ञा पाशुपत आदि मतोंका संक्षिप्त परिचय) शाक्त (दक्षिण वाम कौल तन्त्र सिद्धान्त त्रैपुर आदि मतोंके संक्षिप्त परिचय) पारमार्थिक मोक्ष, व्यावहारिक मोक्ष आदि आदि।

धर्मस्तम्भ में—

वेदोंका स्वाध्याय। राष्ट्रिय शिक्षा। घरेलू शिक्षा। स्त्री शिक्षा। धर्म रहस्य। धर्ममें स्मृतियोंका स्थान। कल्प सूत्र। स्त्री धन। दत्तक दाय। दाय भाग। प्रायश्चित्त विधान। पर्व व्रतोत्सवादि निर्णय। मुहूर्त्तादि निर्णय। पर्व किस प्रकार मनाये जायें। पर्व और त्यौहारोंका राष्ट्रिय महत्त्व। पर्व मनानेमें धार्मिक दृष्टिसे हानि लाभका विचार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार तात्कालिक शुभाशुभ योग और भविष्यवाणियां। राशि फल। खगोलके ग्रह नक्षत्रादिकोंका परिचय।

अर्थस्तम्भमें—

अर्थ शास्त्र। चाणक्यके विचार। घरकी व्यवस्था। पारिवारिक आय व्यय। राष्ट्रको समृद्ध करनेके उपाय। यातायातमें अर्थ प्राप्ति। व्यापार। ज्योतिश्शास्त्रानुसार महर्घ समर्घ (तेज़ी मन्दी) विचार। खानोंसे अर्थ प्राप्ति। आर्थिक दृष्टिसे कलाओंका विचार। पर्व और आर्थिक दृष्टि। युद्धसे आर्थिक हानि लाभ। कृषि (धान्य, फल, शाक-भाजी, ईख, कपास आदिके उत्पादन) से अर्थ प्राप्ति आदि २।

कामस्तम्भमें—

आयुर्वेद। शरीरके सभी अवयवोंको सुन्दर सुदृढ़ स्वस्थ ओजस्वी बनाने के उपाय। दीर्घजीवी बननेके उपाय। रसोईघर। कला-कौशल। घरकी स्वच्छता और पवित्रता। बच्चोंका पालन पोषण। भृत्योंके साथ व्यवहार। पशुपालन आदि २।

इतिहासस्तम्भमें—

इतिहास जाननेके साधन (ताम्रपत्र दानपत्र मुद्रा शिला लेखादि) संस्कृत साहित्यका इतिहास। भारतीय ग्रन्थ और ग्रन्थकारोंके परिचय। भौगोलिक परिचय (देश की सीमाएँ नदियां पर्वत तीर्थ नगर ग्राम आदि) प्राचीनकालमें भूमण्डलके समस्त देश प्रान्त नगरादिकोंके जो नाम और सीमा थी उनके वर्तमान नाम और सीमाका विवेचन। महापुरुषों (दानवीर युद्धवीर धर्मवीर मृत्युवीर शास्त्रार्थवीर विशिष्ट विद्वान भगवद्भक्त राष्ट्रभक्त सिद्ध सती ज्ञानी आदि) के जीवन चरित्र। प्रत्येक वस्तु पर ऐतिहासिक दृष्टिसे विचार।

विशेष—

इसके अतिरिक्त 'श्रीस्वाध्याय' में कुछ सामयिक लेख भी रहेंगे। प्रत्येक अङ्ककी त्रैमासिक अवधिमें जो जो विशेष पर्व त्यौहार या जिन २ अवतारों एवं महापुरुषोंकी जयन्तियां आवेंगी उन उन पर विशेष रूपसे प्रकाश डाला जावेगा। आगामी अङ्क (वसन्ताङ्क) के लिए विद्वान् महानुभाव सर्व प्रथम निम्न विषयों पर सुविचारपूर्ण लेख भेजनेकी अवश्य कृपा करें।

अक्षय तृतीया। श्रीभगवान् परशुराम का जीवन चरित्र। परशुरामकी जन्मभूमि कहां थी? वर्तमान भारतमें परशुरामके स्थान कहां कहां हैं? परशुरामके माता पिता—रेणुका जमदग्नि—के स्थान कहां कहां हैं? किन किन ग्रन्थोंमें परशुरामका उल्लेख मिलता है। परशुरामकी पितृभक्ति। दानवीर परशुराम। युद्धवीर परशुराम। चिरजीवी परशुराम। भगवान्के अवतार परशुराम। छत्रपति शिवाजीका संक्षिप्त जीवन-चरित्र। महाराणा प्रतापका संक्षिप्त जीवन चरित्र। भक्तवर सूरदास का संक्षिप्त जीवन चरित्र। नृसिंहावतार।

सब लेख सम्पादक "श्रीस्वाध्याय" सोलन (पंजाब) के पते पर आने चाहिएँ।

स्वाध्यायोऽध्येतव्यः। ❀ श्रीः ❀ स्वाध्यायान्न प्रमदितव्यम्।

श्रीस्वाध्याय

[हेमन्तांक]

स्वराष्ट्रशिक्षां गृह्णीयाच्चिकीर्षुः स्वां समुन्नतिम्।
दूरदृष्टिर्यया भूत्वा न कदाऽपि विषीदति॥ [राष्ट्रालोक]

वर्ष १ | सोलन, पौष शु० १० रविवार सं० १९९८ वि० | संख्या २

तत्तद्राष्ट्रे मानवानां व्यवस्थां
शोभासम्पच्छालिनीमार्यरीत्या।
प्रेम्णा लोके स्थापयँस्तत्त्वदर्शी
श्रीस्वाध्यायः कल्पतां विश्वभूत्यै॥

इस संसारमें प्रेमसे तथा आर्योंकी रीतिसे शोभा और सम्पत्तिसे समृद्ध प्रत्येक राष्ट्रमें मनुष्यकी व्यवस्था (मर्यादा) को स्थापित करता हुआ वास्तविक परिस्थितिको बताने वाला यह "श्रीस्वाध्याय" विश्वके कल्याण और समृद्धिके लिए हो।

—अ० वा० आचार्य

आवश्यक निवेदन

'श्रीस्वाध्याय' का शरदङ्क पाठकोंने भलीभांति पढ़ा ही होगा। आजकलके अत्यन्त कठिन समयमें एक नवीन प्रकारका पत्र प्रकाशन कितना कठिन और परिश्रम साध्य है; इस बातको सम्पादक और पत्र-प्रकाशक जान सकते हैं। 'श्रीस्वाध्याय' में साहित्यिक पुट बहुत न्यून दिखाई देनेसे कई वाचक इस पत्रसे उदासीन हो सकते हैं। किन्तु हम आजकी भारतीय जनताको केवल बातूनी साहित्यिक चर्चामें डूबे हुए देख चिन्तित हो दीर्घ निःश्वासमात्र छोड़कर अकर्मण्य बनना नहीं चाहते।

भारतवर्ष इस समय स्वतन्त्र तथा समृद्ध नहीं। साहित्यिक चर्चा (कहानी नाटक उपन्यास श्रृङ्गार रस प्रधान वर्णन आदि) पारतन्त्र्यकी शृङ्खलामें बद्ध भारतको क्या सुख पहुँचा सकती है? सुवर्ण शलाका-से बने पिंजरेमें शुकराज बैठा हुआ है। मीठे २ रसभरे बेदाना दाड़िमके दाने आंखें बन्द करके खा रहा है; चांदीकी कटोरीमें पानी पी रहा है और अपने पालकको "चित्रकूटके घाट पर" आदि साहित्यिक सूक्तियां सुना रहा है। किन्तु हा! स्वातन्त्र्य सुखका विज्ञ; वनके विशाल तरुवर पर रहने वाला, सुनिर्मल अनन्त आकाशमें यथेष्ट विहार करने वाला पक्षी इस शुकराज पर कितना हँसता है! इसकी कल्पना उस बद्ध शुकराजके हृदयमें न आने पर भी बात सत्य तो यही है कि पारतन्त्र्यमें सुखका लेश भी नहीं होता "पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं" अस्तु।

भारतको स्वतन्त्र तथा समृद्ध बनाये बिना सरस साहित्य चर्चा सूखी-सी हो सहृदय सुधी-समाजको सन्तुष्ट न कर सकेगी। हम यह नहीं कहते कि साहित्यिक चर्चा हो ही न। परन्तु अन्य विषयोंको सर्वथा उपेक्षित कर केवल मात्र साहित्यिक चर्चा पर ही अवलम्बित रहना भारतीय आदर्शके लिए हितकर न होगा। इसी प्रकार केवल शुष्क-दार्शनिकता (वेदान्त) तथा अन्ध-धार्मिकता भी भारतीय आदर्शसे विपरीत है। इन बातोंका सम्यक् विचार करनेके लिए विचारकोंका सङ्गठन अवश्य होना चाहिए। तथा पत्रकारोंको प्राचीन भारतीय आदर्शों, विद्याओं, कलाओं आदिका पुनरुद्धार सक्रिय करनेका प्रयत्न प्राणपणसे प्रचारित करना होगा। इसी सदुद्देश्यको लेकर यथाशक्ति जनता-जनार्दनकी सेवाके लिए 'श्रीस्वाध्याय' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ है।

यद्यपि आजके समयमें आर्थिक परिस्थिति अतिशय शोचनीय हो रही है; तथापि सुदामाके तण्डुलके समान जनता-जनार्दनको 'श्रीस्वाध्याय' का प्रकाशन समर्पण कर हम महान् सन्तोषका अनुभव कर रहे हैं। हमें पूर्ण आशा विश्वास और निश्चय है कि भारतीय जनता श्रीस्वाध्यायकी उपेक्षा नहीं करेगी। श्रीस्वाध्यायके प्रथमाङ्क प्रकाशन पर ही हमें आशासे अधिक सफलता प्राप्त हुई है और आगे भी अवश्य होगी। कई प्रशंसा पत्र हमारे पास आरहे हैं—जिनमेंसे कुछ-एक इस हेमन्ताङ्कमें उद्धृत किये हैं।

हमारे पाठकगण भी भारतीय आदर्शके पुनरुद्धारके लिए इस पत्रकी तन-मन-धनसे सहायता करेंगे। तथा इसकी नीति-रीतिके पोषक; उस पर आरूढ हो चलने वाले और प्रचारक भी होंगे। विद्वान् लेखक अपनी सुन्दर २ कृतियोंके प्रकाशनके विषयमें 'श्रीस्वाध्याय' को भी अपने हृदयमें स्थान देंगे। श्रीस्वाध्याय उनका अपना पत्र है अतः अधिक निवेदनकी आवश्यकता नहीं। केवल मात्र हमारा अन्तिम निवेदन धर्माधिकारी नन्द पण्डितके ही शब्दोंमें सुन लीजिए—

सन्तोऽपि सन्तोषमपास्य दूरं
कृतिं मदीयां यदि दूषयेयुः।
हानिस्तदा स्यात्कियती ममाऽत्र
सर्वं पुरस्तात्परिहास्यते तैः॥

निवेदक—
हरदेव शर्मा त्रिवेदी
(सम्पादक)

मोक्षप्राप्तिका मर्म

'श्रीस्वाध्याय'के शरदङ्कमें मोक्षके सम्बन्धमें एक अत्यन्त स्वल्पकाय लेख हमने लिखा था। उसमें हमने मोक्ष शब्दकी व्युत्पत्ति करते हुए लिखा है कि मोक्ष तथा स्वातन्त्र्य पर्यायमात्र हैं। स्वातन्त्र्यके विषयमें यदि सम्यक् प्रकारसे आलोचन किया जाय तो ज्ञात होगा कि यह शब्द इतना व्यापक और गम्भीर अर्थ का बोधक है कि इसपर जितना भी लिखा जाए उतना थोड़ा ही है। कारण यह सापेक्ष शब्द है। सापेक्ष शब्द अपेक्षा तारतम्यसे इतने विस्तृत अर्थोंका विस्तार करने लग जाते हैं कि उनका आकलन करना असम्भव सा प्रतीत होने लग पड़ता है। फिर भी चतुर पुरुष गागरमें सागर भर ही देते हैं। यों तो सिन्धुमें बिन्दु तथा बिन्दुमें सिन्धु भरा रहता ही है।

मोक्ष शब्दका सीधा अर्थ है छूटना। यहां स्वभावतः प्रश्न होता है कि किससे छूटना और किसका छूटना? छूटना बिना बन्धे नहीं हो सकता, तथा बन्धनमें आनेवाला भी कोई पदार्थ है। इसी प्रकार बन्धन कोई वस्तु है, इन सभी बातोंकी छानबीन करनी पड़ती है। इस विषयका भली भांति समालोचन आक्षेपनिरसनपूर्वक जिस ग्रन्थमें हो उसको दार्शनिक ग्रन्थ कहते हैं। कारण उपर्युक्त विषयोंका दर्शन करने तथा करानेकी चेष्टा उसमें की जाती है।

हमारे भारतवर्षमें जितने प्रकारके दर्शन मिलते हैं उतने दर्शन पृथ्वीकी पीठ पर किसी भी अन्य देशमें उपलब्ध नहीं होते। इसी कारण अन्य सभी देश आज भी भारतका पारतन्त्र्यकी शृङ्खलामें जकड़े होने पर भी आध्यात्मिक विषयमें तो जगद्गुरुके सर्वोच्च पद पर आसीन रहना एक स्वरसे स्वीकार करते हैं। किन्तु व्यावहारिक मोक्षकी भारतने जबसे उपेक्षा प्रारम्भ की तबसे भारतका भाग्यसूर्य पश्चिम सागरमें जा पतनोन्मुख हुआ; वह बराबर नीचे ही नीचे डूबनेकी ओर जा ही रहा है।

पश्चिम गणिकाने भारतसूर्यकी कैसी दयनीय दशा आज कर रक्खी है इसका वर्णन महाकवि माघ के ही शब्दोंमें सुनिये—

> अनुरागवन्तमपि लोचनयो-
> र्दधतं वपुः सुखमतापकरम्।
> निरकासयद्रविमपेतवसुं
> वियदालयादपरदिग्गणिका ॥

[सूर्य अस्त हो जानेके अनन्तरकी परिस्थिति देख कविवर माघ कहते हैं कि पश्चिमदिशारूपी गणिकाने आकाशरूपी घरसे सूर्यको निकाल ही दिया। कारण उसका वसु (किरण समूह) गणिकाने पहले ही छीन लिया था। यद्यपि सूर्य अपने वसुको खोदेने पर भी अनुराग (लाली) रखता है, आंखोंमें उसका शरीर उस समय सन्ताप न देकर सुख ही देता है; तथापि पश्चिम दिशा रूपी गणिका इतनेमेंसे किसी एक बातकी भी अपेक्षा नहीं रखती, उसे तो केवलमात्र वसु चाहिए। जिस प्रकार किसी आर्य पुरुषको उसका वसु (रत्न धन) हड़प जानेके अनन्तर अपरदिग् गणिका (अनार्य मार्ग पर चलनेवाली वेश्या) उसे घरसे निकाल ही देती है। वह इस बातकी अपेक्षा कभी नहीं रखती कि वह पुरुष वसु (धन) खोने पर भी हृदयमें प्रेम रखता है आंखोंमें भी उसके प्रेमकी लाली है, शरीर भी उसका सन्तापको दूर कर सुख देनेवाला सुन्दर है। उसे तो केवलमात्र धनकी ही अपेक्षा रहती है। किन्तु पश्चिम दिशारूपी गणिका सूर्यको वसु खोनेके बाद आकाशरूपी घरसे निकाल ही देती है, बांध नहीं रखती। अनार्य मार्ग पर चलनेवाली वेश्या आर्य पुरुषको उसका वसु हड़पनेके अनन्तर घरसे निकाल ही देती है; उसका स्वातन्त्र्य अपहरण नहीं करती। परन्तु भारतसूर्यकी कितनी बड़ी दुर्दशा है। इसको तो आकाशके समान सम्पूर्ण राष्ट्रोंके बीचमेंसे स्वातन्त्र्यसे वंचित कर पारतन्त्र्यकी शृङ्खलाओंसे अपरदिग्गणिकाने जकड़ ही रक्खा है। भारतका वसु (धन रत्नादि अनन्त

सम्पत्ति) अपहरण करने पर भी इसे तृप्ति नहीं। भारत रवि अपेत वसु होने पर भी अनुराग वाला है, इसका दृश्य भी अत्यन्त सुन्दर है, यह प्रत्येक प्रकारके दुःख सन्तापोंको दूर करता हुआ नानाविध सुख प्रदान करनेकी इच्छा भी रखता है। किन्तु अपर दिग्गणिकाको इनमेंसे किसी एक बातकी भी अपेक्षा रखनेकी इच्छा या आवश्यकता भासित नहीं होती। कारण उसे तो भारतरविको सर्वदा अस्तङ्गत रखना ही अभीष्ट है।]

किसी समय सगौरव—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वंस्वंचरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

[इस देशमें (भारतमें) उत्पन्न हुए ब्राह्मणसे पृथ्वीमें रहनेवाले सम्पूर्ण मनुष्य अपनी अपनी सभ्यताका पाठ सीखें] ऐसा कहनेका अधिकार भी आज उससे छीना जारहा है। नहीं नहीं बहुत अंशोंमें छीन लिया गया है। व्यापार उसके पास नहीं, शस्त्र वह छू भी नहीं सकता, नियम बनानेका नाम स्वप्नमें भी लेना गुरुतर अपराध माना जाता है, किसी विद्या अथवा कलाका जीर्णोद्धार करना कारालयका आवाहन हो सकता है। ऐसी आजकी परिस्थितिमें भूतकालकी सुखस्वप्नोंकी स्मृतिमात्रसे सन्तुष्ट होकर कोरी आध्यात्मिक मोक्ष-चर्चा मात्रसे मोक्षप्राप्ति कहां हो सकती है ? वास्तवमें देखा जाए तो बाह्य संसारकी व्यवस्था जो राष्ट्र भली भांति नहीं कर सकते वे आध्यात्मिक बातोंमें भी पतित होने लगते हैं। इसी लिये प्रातःस्मरणीय गोब्राह्मणप्रतिपालक छत्रपति शिवाजी महाराजके सद्गुरु भारतीय-आर्य नीतिके कर्णधार पुण्यश्लोक समर्थ श्रीरामदास स्वामी अपने ग्रन्थोंमें उपदेश देते हैं—"प्रपञ्चको साधकर परमार्थ का साधन करो"। प्रपञ्चका साधन करनमें भी जो लोग आलस्य करते हैं या प्रामाद करते हैं वे परमार्थ का साधन कैसे कर सकेंगे ? सम्मान्य पुरुष तो कहते हैं—

"या लोकद्वयसाधिनी सुचतुरा सा चातुरी चातुरी।"

पुरुष शिवभावको भुलाकर जीवभावमें आबद्ध हुआ इसका कोई कारण तो अवश्य होना चाहिये। अन्तस्तल प्रविष्ट होकर विचार करनेसे ज्ञात होता है कि इसका कारण पूर्ण स्वातन्त्र्य है। किन्तु जीवभाव में आबद्ध होने पर मोक्षकी इच्छा भी स्वाभाविक ही है। तथा मुमुक्षुको मुक्त होनेके लिए उपाय ज्ञान भी आवश्यक हो जाता है ? जिसकी प्राप्तिके लिये जो विधि विधिरहस्यज्ञोंने निश्चित किये हैं उनके प्रतिकूल हो जाने पर साधन सामग्री कितनी ही विपुल हो वह सब वृथा जाती है। वर्तमानमें भारतकी भी ऐसी ही दशा है। माघ कविने इसका वर्णन कितनी सुन्दरतासे किया है देखिये—

प्रतिकूलतामुपगते हि विधौ
विफलत्वमेति बहुसाधनता॥
अवलम्बनाय दिनभर्तुरभू-
न्न पतिष्यतः करसहस्रमपि॥

[पाठकवृन्द ! यह सायङ्कालका वर्णन है। सूर्य डूब रहा है; कवि कहता है कि सूर्य जब पश्चिम सागरमें गिरने ही लगा तब उसके सहस्रों कर (किरण) होने पर भी उनमेंसे एक भी काम न आया—जिसके आश्रयसे वह ऊपर उठ आता। कारण उसका प्रारब्ध उल्टा हो गया था, या ऊपर उठनेके विधानमें उसने प्रतिकूलता की थी। जब विधानमें प्रमाद हो या उल्टापन हो तथा प्रारब्ध भी साथ न दे तो साधन सामग्री चाहे कितनी ही विपुल क्यों न हो वह सब वृथा हो जाती है।]

भारतसूर्यकी भी आज वही दुर्दशा हो रही है। भारतने कोरी आध्यात्मिक मोक्षचर्चाके पीछे पड़कर व्यावहारिक मोक्षकी उपेक्षा की। पूर्ण स्वातन्त्र्य प्राप्तिमें व्यावहारिक स्वातन्त्र्यको भुला देना बड़ा भारी प्रमाद है; इसी कारण भारतके पास मोक्ष (स्वातन्त्र्य) प्राप्तिकी अनन्त साधन सामग्री होने पर भी विधि (विधान) में उलट फेर हो जानेसे प्रारब्ध भी साथ नहीं दे सकता। तथा अविधि (विधिकी प्रतिकूलता) के कारण ही भारत स्वतन्त्रताको प्राप्त नहीं कर रहा है। भारतके पास साधन सामग्रीमें किस बातकी कमी है ? उसके पास जन सम्पत्ति बहुत है,

लोग शूरवीर भी हैं; कृषि सर्वोत्तम है; सुवर्णादि धातुओंकी खानें भी पर्याप्त हैं। इतना सब होने पर भी विधिकी प्रतिकूलता सब बातों पर पानी फेर रही है और सब वृथासा हुआ जा रहा है। पारमार्थिक मोक्ष (स्वातन्त्र्य) व्यावहारिक मोक्ष पर अत्यधिक अवलम्बित है। बाह्य दृष्टिमें जो राष्ट्र बद्ध रहते हैं वे राष्ट्र अपने यहांके राष्ट्रियोंको पारमार्थिक मोक्ष कभी भी प्राप्त नहीं करने देते। इसके कारणों पर श्रीराष्ट्रालोकके "श्रीराष्ट्रसञ्जीवनभाष्य" में विस्तृत रूपसे लिखा गया है। पारमार्थिक मोक्षके सम्बन्धमें "श्रीआत्मविलास" और उसकी व्याख्यामें विस्तृत रूपसे लिखा गया है, अस्तु।

बद्ध पुरुष उन्मुक्त होना चाहता है। कारण उसे अपने आपको पूर्ण आनन्दमें रखना अभीष्ट हुआ करता है। किन्तु यह कार्य बातोंसे नहीं बननेका। भात भात कहने मात्रसे पेट नहीं भरा करता। उसे अपने सम्पूर्ण इन्द्रिय देवताओंको बाह्य वैध यज्ञसे तृप्त करना पड़ेगा। यह तृप्ति सांसारिक इन्द्रियोपभोग सामग्रीके उपभोगके बिना नहीं हो सकती; तथा उसके उपभोगके लिए नियम बनानेकी सामर्थ्य होनी चाहिए। नियम बनानेकी सामर्थ्य पारतन्त्र्यसे जकड़े हुए राष्ट्र को कहां हो सकती है ? इसी कारण हमारे प्राचीन महर्षियोंका सिद्धान्त है कि—

अनधीत्य द्विजो वेदाननुत्पाद्य तथा सुतान्।
अनिष्ट्वा विविधैर्यज्ञैर्मोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः॥

[जन्म तथा संस्कारसे संस्कृत पुरुष अपनी विद्याओंका बिना अध्ययन किये तथा अपने कला कौशलका बिना ज्ञान प्राप्त किये, विवाहादि करके शास्त्रानुकूल बिना सन्तान उत्पन्न किए, भांतिभांतिके यज्ञोंसे बिना देवताओंको सन्तुष्ट किये केवल मोक्ष की इच्छा करेगा तो पतित हो जायगा]

पाठकवृन्द ! मोक्षकी इच्छा करनेसे पतन होना क्या यह सम्भव है ? कदापि नहीं। किन्तु महर्षि तो स्पष्ट ही कह रहे हैं कि ऐसी स्थितिमें केवल मोक्षकी इच्छा करनेसे मोक्षकी प्राप्ति न होकर उलटे बन्धन की ही प्राप्ति होगी। कारण पारमार्थिक मार्गका अवलम्बन करनेके लिए व्यावहारिक सम्पूर्णवासनाओंसे मुक्त होना या उनके विषयमें विरक्त हो जाना परम आवश्यक है। सांसारिक वासनाओंसे मुक्ति, बिना उनकी वैध व्यवस्थाके नहीं हो सकती। इसी कारण ऋषियोंने स्पष्ट ही लिख दिया कि जबतक व्यावहारिक धर्म अर्थ काम तीनों पुरुषार्थोंकी पुरुष परिपूर्ति नहीं कर लेता तबतक पारमार्थिक मोक्ष प्राप्तिका मार्ग भी प्राप्त नहीं हो सकता। वास्तवमें देखा जाय तो व्यावहारिक स्वातन्त्र्य प्राप्तिके या उसकी संरक्षाके वैध उपायोंका ज्ञान न हो तो व्यावहारिक स्वातन्त्र्य भी प्राप्त नहीं हो सकता। इसी कारण सबसे पहले अपनी सभ्यताका पाठ पढ़ते हुए अपनी स्वातन्त्र्य\प्राप्ति तथा उसके संरक्षणके ज्ञानका अध्ययन सर्वप्रथम परम आवश्यक है। यही बात उपर्युक्त धर्मशास्त्रके श्लोकमें "अनधीत्य द्विजो वेदान्" से बतलाई है।

आगे चलकर राष्ट्रका संरक्षण करनेके लिए राष्ट्रियोंका निर्माण करना बतलाया है। यदि राष्ट्रियोंको योग्य नहीं बनाया जायगा अथवा राष्ट्रनीति विज्ञ सुयोग्य राष्ट्र-पुत्रोंका निर्माण न किया जायगा तो राष्ट्रोंका पतन हो जायगा। विश्वमें उथलपुथल हो जायेगी। तथा किसी भी वस्तुका व्यवस्थापन न होनेसे संसार उच्छिन्न हो जायेगा। किन्तु संसारकी सुन्दर व्यवस्थाके वैध उपायोंके उपदेशके बिना सुयोग्य राष्ट्रिय भी राष्ट्रकी सुव्यवस्था नहीं कर सकेंगे। इसी लिए उपर्युक्त श्लोकमें "अनिष्ट्वा विविधैर्यज्ञैः" यह कहा गया है। यज्ञ क्या वस्तु है ? इस विषय पर फिर कभी लिखेंगे। साधारणतया यज्ञका अर्थ है सुव्यवस्थाके उपाय। महर्षि कहते हैं कि भांतिभांतिके सुव्यवस्थाके उपायोंसे बिना लोगोंको सुव्यवस्थित किये तथा उनकी पुरुषार्थ परिपूर्ति किये केवल मात्र मोक्षकी इच्छा करना मोक्ष प्राप्ति न कराकर केवल पारतन्त्र्यकी ही प्राप्ति करायेगा। अस्तु।

अब पाठक भलीभांति समझ गये होंगे कि पारमार्थिक मोक्षका वैध उपाय यही है कि व्यावहारिक स्वातन्त्र्य पहले प्राप्त किया जाय। व्यावहारिक मुक्ति के बिना पारमार्थिक मुक्ति की चर्चा मोक्षका कारण न

होकर बन्धन का ही कारण होगी। इसी लिए "अथाऽतो ब्रह्मजिज्ञासा" इस सूत्रका भाष्य करते हुए भगवान् आद्य शङ्कराचार्यने शम दमादि साधन सम्पत्तिके अनन्तर ब्रह्मजिज्ञासा करनी चाहिए ऐसा लिखा है। सूत्रमें कोई भी क्रिया पद नहीं है। किन्तु उन्होंने "कर्तव्या" इस पदका अध्याहार करके उक्त प्रकारका व्याख्यान किया है— उसका भी तात्पर्य यही है कि सांसारिक वासनाओंसे विरक्ति हुए बिना पुरुष परमार्थ-पथका पथिक हो ही नहीं सकता। यदि हठसे ऐसा करेगा तो पतित हो जायेगा। सांसारिक वासनाओंसे विरक्ति विषयोपभोग न करने मात्रसे कभी भी नहीं होती। कारण मनके भीतर वासनाओंका जाल इतना सूक्ष्म रूपसे विस्तृत रहता है कि थोड़ीसी भूलसे भी पुरुषको कहांसे कहां पटक देता है। यही कारण है कि वेदोंमें इस प्रकार उपदेश किया है—

ब्रह्मचारी भूत्वा गृही भवेत्। गृही भूत्वा वनी भवेत्। वनी भूत्वा प्रव्रजेत्। यदि वेतरथा। यदहरेव विरजेत् तदहरेव प्रव्रजेत् ब्रह्मचर्याद्वा गृहाद्वा वनाद्वा।

प्रिय सज्जनों! जब तक सांसारिक पदार्थोंसे वास्तविक वैराग्य नहीं होता तब तक उसे छोड़कर मोक्षकी बातें बनाना मोक्ष प्राप्त नहीं करा सकता। उसके लिए वैध उपाय तो वही है कि सांसारिक सुव्यवस्था करके फिर परमार्थ-पथका पथिक बने। उपर्युक्त उपनिषद् वाक्य इन बातोंको भली प्रकार समझा रहे हैं। एवं च सम्पूर्ण इस हमारे लेखका सारांश आप लोगोंने भली प्रकार समझ ही लिया होगा कि व्यावहारिक स्वातन्त्र्य प्राप्त किये बिना, तथा उसे अक्षुण्ण सुरक्षित बनाये बिना पारमार्थिक मोक्षकी चर्चा मात्र वर्तमान भारतका कल्याण नहीं कर सकती। भारतका ही क्या सम्पूर्ण विश्व जब तक इस रहस्यकी ओर ध्यान नहीं देगा (दूसरे शब्दोंमें कहा जाय तो यों कह सकते हैं कि विश्वमें एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रको या एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिको अनुचित पारतन्त्र्यसे दबाये जायेगा) तब तक मोक्षकी चर्चा संसारको सुखी बनानेके स्थानमें दुःखी पतित निर्धन नीच ही बनायेगी। अधिक क्या विज्ञ पाठक स्वयं ही बहुत कुछ समझ लेंगे। शमस्तु।

—अ० वा० आचार्य

राष्ट्रभाषा मीमांसा

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक "श्रीस्वाध्याय"]



सुन रहे हैं कि अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका तीसवां अधिवेशन दिसम्बरके अन्तमें अबोहरमें होने जारहा है। साथ ही यह भी सुननेमें आरहा है कि अबकी बार राष्ट्रभाषाके सम्बन्धमें निर्णायक महान् युद्ध होगा। यह अङ्क पाठकोंके हाथ में पहुंचते २ प्रायः सभी साहित्यिक तथा राजनैतिक महारथी सदलबल अबोहरकी ओर प्रस्थान कर चुके होंगे। भारतकी राष्ट्रभाषाके लिए इस महाभारतका उपक्रम हो रहा है। इसमें एक पक्षमें राजनीतिके कर्णधार कहलाने वाले नेतागण होंगे और दूसरे पक्षमें भारतीय साहित्य-सम्पत्तिके संरक्षक तथा संवर्द्धक होनेका आतङ्क स्थापित करने वाले नेतागण होंगे। किसी किसी पत्रकारने तो यहां तक लिखा है कि राष्ट्रभाषाके विचारक व प्रचारकत्वका अभिमान रखने वाले सभी योद्धागण इस महाभारतके लिए कटिबद्ध होकर अपने २ वाङ्मय शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित रहें। इस समय भारतीयोंको वाङ्मय शस्त्रास्त्रोंसे अतिरिक्त शस्त्रास्त्रोंको स्पर्श करनेका अधिकार भी नहीं। तो "खाली बनिया क्या करे" के अनुसार वाङ्मय युद्ध तो अवश्य हो सकता है और फिर महाभारत तो भाई बन्धुओंमें ही प्रायः हुआ करता है। वर्तमान-पत्रोंसे तो यही सुननेमें आरहा है कि अबोहरमें बड़े २ टैंक और बड़े २ हवाईजहाज पहुंचने वाले हैं; क्योंकि वहां राष्ट्रभाषा पर घोर संग्राम होनेवाला है।

इस युद्धके मूल कारणोंके विषयमें हम पूर्णरूपेण

अभिज्ञ नहीं। फिर भी जैसा कुछ अब सुननेमें आरहा है उसके अनुसार तो यही ज्ञात हुआ कि राजनीतिके कर्णधार लोग और उनके अनुयायीगण कहते हैं कि राष्ट्रभाषाके विचार तथा प्रचारका अधिकार वास्तवमें हमें है। क्योंकि राष्ट्रके सर्वाधिकारी हम हैं। इसी कारण उनका यह कहना है कि नागपुर सम्मेलनमें जिस राष्ट्रभाषा प्रचार समितिका संगठन हुआ था; उस समितिको साहित्य-सम्मेलनसे सर्वथा उन्मुक्त कर देना चाहिए। तथा वह इतनी पृथक् और स्वतन्त्र होनी चाहिए कि उस राष्ट्रभाषा प्रचारक संघमें साहित्य-सम्मेलनको किसी प्रकारके हस्तक्षेपका अधिकार न हो। संघ अपनी स्वतन्त्रतासे सब कुछ कार्य करेगा। स्वतन्त्रतासे ही साहित्य-सम्मेलनकी जानकारीके लिए अपने कार्यविवरणको प्रकाशित कर दिया करेगा। सर्वाधिकार संघको ही होंगे। किन्तु राजनीतिके कर्णधारोंमें भी इस विषयमें कुछ मतभेद है। कारण, किसी २ महारथीने इसका पूर्ण विरोध करनेका तथा असमर्थतामें उस पक्षका साथ छोड़ देनेका निश्चय किया है।

साहित्य सम्पत्तिके ऊपर आत्मीयता रखने वाले नेतागण इस बातको माननेके लिए सहमत नहीं। उनका कहना है कि भाषाका निर्णय साहित्य सम्पत्तिके संरक्षकोंके ही अधिकारमें होना चाहिए, अस्तु। अभी तो महायुद्धका उपक्रम ही है। इसके अन्तिम निर्णय होने पर हम भी सुन ही लेंगे कि क्या निर्णय हुआ।

अब हम "श्रीस्वाध्याय" के द्वारा दोनों पक्षोंको वास्तविक विशुद्ध भारतीय विचार क्या होने चाहियें, इस बातसे परिचित करानेका प्रयत्न करेंगे। इन विचारोंका आधार पूर्णरूपसे 'श्रीराष्ट्रालोक' तथा उसका भाष्य 'श्रीराष्ट्रसञ्जीवन' है। "श्रीराष्ट्रालोक"का निर्माण वि० सं० १९९० में हुआ और १९९१ में मूल मात्र मुद्रित होकर प्रकाशित भी होगया था। "श्रीराष्ट्रसञ्जीवन" का निर्माण विक्रम सं० १९९३ में होचुका है, किन्तु वह अभी मुद्रित नहीं हुआ। ये दोनों ग्रन्थ संस्कृतमें ही हैं। इन दोनों ग्रन्थोंके निर्माता श्री १०८ मान् पूज्यपाद सर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराज हैं।

राष्ट्रभाषा—

'राष्ट्रभाषा' इस पदके विश्लेषण करने पर कई प्रकारके अर्थ होंगे। उसका विस्तार करना यहां ठीक नहीं होगा। संक्षेपमें यही कि इस पदमें दो शब्द हैं और दोनों शब्दोंका पूर्ण विवेचन 'राष्ट्रसञ्जीवन' में किया गया है। 'राष्ट्रभाषा' का सीधा अर्थ 'राष्ट्रकी बोली' है। बोली व्यक्तिभेदसे देशभेदसे समयके भेदसे अनन्त हो सकती है। किन्तु एक व्यक्ति दूसरे व्यक्तिके साथ व्यवहार तभी करसकेगा जबकि दोनों एक दूसरेकी बोलीको भली प्रकार समझ सकते हों। इसी लिए सम्पूर्ण राष्ट्रकी यदि सुव्यवस्था करनी हो तो प्रत्येक राष्ट्रियको सम्पूर्ण राष्ट्रमें अपने विचारोंका प्रचार करनेके लिए सम्पूर्णराष्ट्रके राष्ट्रिय जिस बोलीको पूर्णरूपसे जानते हों उस बोलीको भलीभांति जानना ही होगा। अनन्त बोलियोंमें व्यवहार एक व्यक्ति कर नहीं सकता, अतः किसी एक भाषाका निश्चित रूपेण सम्पूर्ण राष्ट्रके व्यवहारके लिए निर्माण या स्थापन करना परमावश्यक है। एक भाषा को सीखनेमें उतना परिश्रम नहीं जितना कि दो चार या दश बीस भाषाओंको सीखनेमें पड़ता है। एतदर्थ प्रत्येक राष्ट्रमें प्रत्येक राष्ट्रियको राष्ट्रभाषाकी शिक्षा अत्यन्त आवश्यक होजाती है। जिससे राष्ट्रके एक ओरसे दूसरे छोर तक किसी व्यक्तिके परिचयके लिए किसी भी व्यक्तिको कोई कठिनाई नहीं पड़ती। एक बार बनारसमें ढुण्ढीराज गणेशके पास यात्रियों की भीड़में एक मद्रासी महिला वंगीय (बंगाली) वनितासे (स्त्रियोंमें स्त्रियां चलें इस विचारसे) अपनी प्रान्तीय भाषामें कहने लगी "राण्डी २" (आइये २)। इस पर बंगालिनने क्रुद्ध होकर मुखसे "अमी रांडी कि तुमी रांडी" (मैं रण्डी कि तू रण्डी) कहते हुए अपने हाथके पीतलके मोटे कमण्डलुसे नाक पर ऐसा प्रहार किया कि उस मद्रासी महिलाकी नाकसे रुधिर चलने लगा। यह सारी दुर्दशा राष्ट्र-

भाषा ज्ञान न होनेके कारण हुई। ऐसी ही सहस्रों घटनाएँ होती रहती हैं; अस्तु।

राष्ट्रभाषाकी आवश्यकता कितनी है यह तो पाठक समझ ही गये होंगे। अब राष्ट्रभाषाका स्वरूप क्या हो ? इसका निर्णय अत्यन्त आवश्यक हैं। वर्तमान भारतके राजनैतिक कर्णधार अधिकतर "हिन्दुस्तानी" नाम देकर एक विचित्र ही भाषाको भारतकी राष्ट्र-भाषाका गौरवास्पद स्थान देनेके लिए कह रहे हैं। इस "हिन्दुस्तानी" भाषाके विषयमें अभी हम यहां कुछ नहीं लिखेंगे; कारण इस पर पर्याप्त चर्चा हो चुकी है। प्रायः सभी राष्ट्रविज्ञ इसकी जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इसी "हिन्दुस्तानी" कलह-कृत्याके कारण ही अबोहर में होनेवाले महाभारतका उपक्रम हो रहा है। यद्यपि भारत अन्यान्य सम्पत्तिकी दृष्टिसे तो निर्धन हो ही चुका है; तथापि वाङ्मयकी दृष्टिसे अभी निर्धन नहीं हुआ है। फिर भी पाश्चात्य शिक्षा विभूषित (विदूषित) कुछ भारतीय उसे वाङ्मय सम्पत्तिसे भी वंचित करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। यह प्रयत्न यद्यपि अज्ञानसे ही हो रहा है; अतः यदि वे हमारी बातों पर शान्त चित्तसे विचार करेंगे तो उन्हें अपनी भूल अवश्य समझ में आयेगी।

श्रीराष्ट्रालोकमें इस सम्बन्धमें यों लिखा है—

वस्तु शक्योत्पत्ति राष्ट्रान्तरादायाति यत्र तत्।
नाशमाशु प्रयात्येव राष्ट्रमालस्यसंयुतम् ॥

[जिस वस्तुकी उत्पत्तिका राष्ट्रमें सम्भव है वही वस्तु राष्ट्रान्तरसे लाई जाय या आती हो तो वह राष्ट्र आलसी तथा अकर्मण्य होकर शीघ्र ही नष्ट हो जायगा।]

विचार करनेसे बात ठीक ही ज्ञात होती है। इसके लिए सम्पूर्ण विश्वमें मतभेदकी सम्भावना नहीं।

महात्मा गांधीजीका नमक सत्याग्रह भी इसी आधार पर हुआ था। भारतमें नमक पर्याप्त मात्रामें उत्पन्न होनेपर भी हठात् भारतके बाहरसे यहां नमक आया करता था, तब महात्माजीने भारतके निर्धन होने की बात सोचकर नमक सत्याग्रह किया था। हम भी इसी लिए उन राजनैतिक नेताओंसे सरलतापूर्वक पूछते हैं कि भारतीय उर्वर भूमिमें अन्यान्य वस्तुओं की भांति वाङ्मय उत्पन्न करनेकी शक्ति अब क्षीण हो चुकी है क्या ? अथवा जैसे मोटर, रेलवे इञ्जिन, विमान आदि भारतमें निर्मित नहीं हो सकते वैसे ही क्या भाषा पर भी शासकोंका प्रतिबन्ध है ?

बड़े आश्चर्य और दुःखकी बात है कि राजनैतिक दल इस विषयमें भारतकी दरिद्रताको ध्यानमें भी नहीं लाता। यदि ऐसा नहीं तो फिर स्वदेशी विदेशी का प्रश्न ही क्यों उठाया जाता है ? इसी कारण न कि भारतमें विदेशी वस्तुओंके आनेसे भारत निर्धन हो जायगा। तो फिर विदेशी शब्दोंसे क्या भारत निर्धन नहीं होगा ? जो लोग यह कहते हैं कि विदेशी शब्दोंसे राष्ट्रभाषाकी समृद्धि बढ़ेगी, वे यह क्यों नहीं मानते कि विदेशी वस्तुओंके यहां आनेसे भी भारतकी समृद्धि बढ़ जायगी ? उन्हें यह भी समझ लेना चाहिए कि विदेशी वस्तुओंको भारतीय वस्तुओं जैसा आकार प्रकारसे समान बनाकर भारतमें लाने पर भी जिस प्रकार भारत निर्धन होता गया; उसी प्रकार विदेशी शब्दोंको भारतीय ढांचेसे ढककर भारतमें लाने पर भी भारतकी राष्ट्रभाषा समृद्ध होने के स्थानमें निर्धन ही हो जायेगी। "हिन्दुस्तानी" उसी प्रकार की भाषा है जिसमें अधिकतर अभारतीय शब्दोंकी ही भरमार है।

राष्ट्रभाषा कौनसी हो ?

राष्ट्रभाषा शिक्षणीयाऽवश्यं राष्ट्रहितैषिणा।
स्थविरेणाऽपि सा पूर्णं हितं तस्य विधास्यति ॥

[राष्ट्रहितैषी वृद्ध हो जाने पर भी राष्ट्रभाषा अवश्य सीखे। कारण उसकी अपनी राष्ट्रभाषा (बुढ़ापेमें सीखी हुई भी) उसका पूर्ण हितसाधन कर सकती है।]

श्री राष्ट्रालोककी इस कारिकाके श्रीराष्ट्रसञ्जीवन भाष्यमें यह लिखा है कि—

"राष्ट्रभाषा कौनसी होनी चाहिए, इसका निर्णय करनेके लिए सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि उस राष्ट्रमें कितनी भाषाओंका व्यवहार हो रहा है। तथा किस २ भाषासे कितने २ लोग व्यवहार कर रहे हैं। फिर यह देखना कि सबसे अधिक संख्या किस भाषा से व्यवहार करने वालोंकी है। हां, इस बात को भी न भूलना चाहिए कि राष्ट्रके साथ चारों सम्बन्ध जिन पुरुषोंके हैं उनमें बहुसम्मत जो भी धर्म्यभाषा हो उसका विरोध करने वाली राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। यदि धर्म्यभाषा ही वहां राष्ट्रभाषा हो सकती हो तो सोनेमें सुगंध है।"

राष्ट्रमें मनुष्येतर प्राणी व्यक्त-भाषासे तो सम्बन्ध ही नहीं रखते, अतः राष्ट्रभाषाका प्रश्न केवल मनुष्यों के लिए ही है। मनुष्योंमें विश्व-हित राष्ट्रवादी ही सोच सकते हैं। राष्ट्रवादी अराष्ट्रिय नहीं हो सकता। राष्ट्रके साथ चारों सम्बन्ध हुए बिना कोई भी व्यक्ति उस राष्ट्रका राष्ट्रिय नहीं कहला सकता। राष्ट्र पर स्वत्त्व उत्पन्न हुए बिना राष्ट्रकल्याण भावना हृदयमें जागृत नहीं हो सकती। राष्ट्र पर स्वत्त्व भी तभी हो सकता है जब कि राष्ट्रके साथ उस व्यक्तिके चारों सम्बन्ध हों इन बातोंको श्रीराष्ट्रालोकमें यों लिखा है—

पितृपुण्यभुवं राष्ट्रं यन्मन्यन्ते च ये नराः।
तेषां नराणां राष्ट्रं तत् स्वीयं भवति सर्वथा॥
पितृभूत्वं पुण्यभूत्वं द्वयं यस्य न विद्यते।
तस्य स्वत्वं तत्र राष्ट्रे भवितुं न किलाऽर्हति॥

[जिस राष्ट्रको जो लोग सब प्रकारसे पितृपुण्यभू मानते हैं उन लोगोंका उस राष्ट्र पर सभी प्रकारसे अपनापन हो सकता है। जिस व्यक्तिका दोनों प्रकार-का पितृभूत्व तथा दोनों प्रकारका पुण्यभूत्व जिस राष्ट्रमें नहीं होता उस व्यक्तिका उस राष्ट्रमें स्वत्त्व नहीं हो सकता।]

पितृभू सम्बन्धके दो प्रकारोंके नाम प्राकृत तथा अप्राकृत व पुण्यभू सम्बन्धके दोनों प्रकारोंके नाम प्रधान तथा अप्रधान नाम श्रीराष्ट्रसञ्जीवन भाष्यमें दिये हुए हैं। इस सम्बन्धमें अधिक वहीं देखना चाहिए। राष्ट्रका वास्तविक हित राज्यवादी सङ्घवादी तथा व्यक्तिवादी— इन तीनोंमेंसे एक भी नहीं सोच सकता। राष्ट्रवादियोंके मतमें भारतकी राष्ट्रभाषा वही हो सकती है जो संस्कृतसे विरोध न रखती हो; तथा अभारतीय शब्दोंसे रहित हो और सरलतासे भारत-का राष्ट्रिय बहु जन समाज जिसे समझ सकता हो। इसमें किसी भी विदेशी अथवा विधर्मी को ननु नच करनेका अधिकार ही नहीं प्राप्त होता; कारण वह राष्ट्रवादी नहीं है। राष्ट्रवादी अपने आपको राष्ट्रका पुत्र मानता है न कि पति। पुत्रत्वकी भावनामें भोक्तृत्वकी कुभावना कभी उत्पन्न नहीं हो सकती। भोक्तृत्वकी कुभावना रखने वाले राष्ट्रिय नहीं हो सकते।

वर्तमान समयमें ये सम्पूर्ण बातें यदि हिन्दीमें आती हैं तो हिन्दी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है; हिन्दुस्तानी नहीं, अस्तु।

अब यह लिखनेकी आवश्यकता नहीं कि लिपि कौनसी हो। कारण राष्ट्रभाषाकी प्रतिनिधिभाषा लिपि भी देवनागरी ही हो सकती है और कोई नहीं। क्योंकि राष्ट्र लिपि होनेके सम्पूर्ण गुण भारतमें देवनागरीमें ही हैं। राष्ट्रभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होनेसे भारतकी किसी भी प्रान्तीय भाषा-को हानि पहुँचनेकी तिल मात्र भी सम्भावना नहीं; अपितु उनकी साहित्य श्री समृद्धि ही कर सकती है।

अन्तमें हम इतना अवश्य निवेदन करते हैं कि राष्ट्रभाषा-प्रचारक-सङ्घ हिन्दी-साहित्य-सम्मेलनका अङ्ग भूत ही होना चाहिए न कि राजनैतिक दलके हाथकी गुड़िया। हमारा स्पष्ट मत तो यही है कि राष्ट्रभाषा तथा राष्ट्र लिपिका स्वरूप, उसका पुस्तक प्रकाशन, उसकी परीक्षाएँ और प्रचारके अन्यान्य सम्पूर्ण प्रकारका निर्णय आदि सब हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की सम्मतिसे ही होने चाहिएँ। भाषाका सम्बन्ध तो वाङ्मयसे है, वाङ्मय पर विचार करने-वाली संस्थाओंको छोड़कर अन्य संस्थाके हाथ भाषाको सौंपना कैसे श्रेयस्कर होगा? वस्तुतः देखा जाय तो राजनैतिक दलको भारतकी अन्यान्य उलझी हुई

ब्रह्मार्पण

(लेखक—श्री पं० परमानन्दजी विद्यालङ्कार)

[यद्यपि हिन्दीमें "ही" दीर्घ ही लिखा जाता है; तथापि इस लेखमें विद्वान् लेखकने "हि" शब्दको विशुद्ध संस्कृतका अपनाकर ह्रस्व लिखा है। पाठक इसे अशुद्ध न समझें। आपके कुछेक विदेशी शब्द भी हमने जैसेके तैसे ही रक्खे हैं। सं०]

हम अपने दैनिक जीवनके कार्य अपनी कर्त्तव्य-भावनासे करते जायँ तथा अपनी शक्ति और ज्ञानके अनुसार उनमें बेईमानी न करें। यदि हमें चार घण्टे किसीकी नौकरी करनी है तो ईश्वर को साक्षी समझ कर उस सारे समयमें उस काममें हि लगे रहें, अपने पैसे देने वालेके प्रति विश्वासघात न करें—तभी हम परमात्माके सामने सच्चे बन सकते हैं। कोई काम छोटा हो या बड़ा, अधिक पैसे देने वाला हो या कम आमदनी वाला हो, स्वतन्त्र व्यापार हो या किसीकी नौकरी हो -- हरएक दशामें सफ़ाई और सचाईसे किया गया कार्य 'ईश्वर-पूजा' है। यदि मैं मन्दिरमें मूर्तिके सामने बैठ कर घण्टी बजा रहा हूं परन्तु मनमें कोई दुर्भावना कार्य कर रही है तो मैं ईश्वर-पूजा नहीं कर रहा। इससे मैं अपने आपको धोखा दे सकता हूं और अपने मित्रोंमें रौब बता सकता हूं कि आध घण्टा या घण्टा भर मैंने भगवान्का भजन किया। परन्तु जो हमारे अन्दर बाहर समाया हुआ है, हमारी क्षण-क्षणकी चेष्टाओंको जानता है उसे मैं बहका नहि सकता। वह जानता है कि मैंने एक तो बुरा विचार दिलमें लाकर मानसिक पाप किया है और दूसरी बुराई लोगोंको ठगनेकी की है— इस लिये मैं दुहरा अपराधी हूं। उसका सर्वोपरि न्यायालय मुझे इसके दण्डसे न छोड़ेगा।

ईश्वर-भक्ति या परमात्माका गुणानुवाद करना कोई ईश्वर पर उपकार नहि है। वह हमारी खुशामद या गाली देनेसे प्रसन्न या अप्रसन्न नहि होता। उसके अस्तित्वको भी न मानने वाला एक सदाचारी जो ऊंचा पद पा सकता है वह अपनेको आस्तिक कहने वाले, घण्टा भर सन्ध्या करने वाले दुराचारीकी पहुंचसे दूर है। ईश्वरका कीर्तन करनेसे और उसकी महिमाके गानसे हमारी अन्तरात्मा शुद्ध होती है। हम समझने लगते हैं इस अनन्त संसारके अगणित लोक-लोकान्तरको उत्पन्न कर उनका पालन करने वाली उस शक्तिकी अपेक्षा हम कितने तुच्छ हैं। उसकी खुली हुई प्रकृतिकी पुस्तकसे हम कुछ सीखें। इतने ग्रह और उपग्रह होते हुए भी किसीकी गतिमें कभी क्षणभरका भी फर्क नहि पड़ता, उसके इस ग्रन्थ से हम भी नियम-पालनका पाठ क्यों न सीखें।

उसकी दानशीलता और उपकारोंका हम विचार करें तो अक्ल चकराने लगती है। उसने हमारे लिये जल, वायु, अन्न आदि ऐसे पदार्थ उत्पन्न किये हैं जिनके बिना हमारा क्षणभर भी जीवन नहि चल सकता। वह अपने दानमें सन्त या पापीका भेद नहि रखता। जो खुली वायु एक वीतराग महात्माके लिये है उसीका अक्षय भण्डार बड़ेसे बड़े दुरात्माके लिये भी खुला है। इसी प्रकार यदि हम भी अपनी शक्तियों को बिना किसी भेद-भावके प्राणिमात्रके भलेमें लगा दें तो हम क्यासे क्या बन सकते हैं। जिस दृष्टिसे भी हम विचार करें उस विषयमें हि उसे असीम और अपार पाते हैं।

उस शक्ति और सुखके अमित कोषके सामने हमारी हैसियत ही क्या है ? हम थोड़ी सी शरीर की या धनकी शक्ति पाकर अभिमानमें आ जाते हैं और अपने भाई–अमृतपुत्रों–को ठुकराने और गाली देने लग जाते हैं। परन्तु उस अखण्ड सुख-सागरका

समस्याओंको सुलझानेसे ही अवकाश नहीं मिलता तो फिर व्यर्थमें भाषाकी समस्याको उलझानेका कष्ट करना उनके लिए कहां तक हितकर होगा, इसका निर्णय जनता-जनार्दन ही करे।

यदि हम हृदयमें क्षण भरको भी ध्यान करें तो हम सोचेंगे कि हमारे पास क्या है ? हमारी गिनती तो इस अगाध समुद्रमें बूंद जैसी भी नहीं है। हम घमण्ड करें तो किस बात का करें ?

इसी तरह उसकी सर्वव्यापकताका विचार करें तो हम कोई पाप हि न कर सकें, क्योंकि मनुष्य पाप तभी करता है जब वह समझता है कि मुझे देखने वाला कोई नहि है। इसी ख्यालसे मनुष्य एकान्तमें जन-समाजसे दूर जाकर कुकर्म करता है। यदि उसके मनमें परमेश्वरकी सर्वव्यापकताकी भावना हो, वह उससे खाली कोई जगह न पाय तो पाप से सदा बचा रहे।

इस प्रकार उस गुणोंके सागरके एक-एक गुणका भी हमारे मनमें सच्चा ज्ञान हो तो हम मनुष्यकी पदवीसे देव-पदको पहुंच सकते हैं। उसने हि हमें सब सुख और आरामकी सामग्री दी है—वह जब चाहे हमसे इन्हें छीन भी सकता है। हमने कितने हि आज लक्ष्मीमें लौटनेवाले कल खाने तकको मुंहताज होते देखे हैं। उनसे हम कुछ स्थायी पाठ सीखें। श्मशान-वैराग्यकी तरह पलभरको ईश्वरकी महिमाको मानने वाले न बनें, बल्कि यह सब ब्रह्माण्ड उसीका मानते हुए अपनेको दी गई सुख-सम्पत्तिको वास्तव में उसका समझ कर उपभोग करें—उसके पुत्रोंके साथ दुःखमें सहानुभूति दिखाते हुए प्राणिमात्रसे भ्रातृ-भावना बढ़ावें तो हम संसारके सब कार्य करते हुए भी क्रिया द्वारा भगवान्का भजन कर रहे होंगे और इससे अपनी आत्माको शुद्ध करते हुए सांसारिक पदार्थोंका लाभ निर्लोभ और निर्मम होकर कर रहे होंगे। इस तरह अपना अधिकार किसी वस्तु पर न समझकर सच्चा मालिक उसे जानते हुए हम जो भी काम करेंगे उसमें लिप्त न होंगे, अपनी आशाके अनुरूप फल न पाकर निराश न होंगे, क्योंकि हमारा अधिकार कम करनेका है—फलदाता तो वही है।

प्रार्थना

ले०—श्री पं० गोविन्दजी मिश्र

दीन दशा देशकी देखी नहीं जात दुर्गे
दयालुनी दयार्द्र हो दया दृष्टि करदो।
दारिदसों द्विज-कुल दहै दावाग्नि सम
दीनता नशाय देवि ! दिव्य अवसर दो ॥

स्वाध्याय संयम नियम जप यज्ञ दान
ध्यान, योग साधैं सदा इन्हैं यही वर दो।
भारती कहाओ सो भारत पक्ष करो
भीरुता भगादो अम्ब ! वीर भाव भर दो ॥

जीवन-रहस्य

[ले०—श्री पं० नन्दलालजी शास्त्री साहित्याचार्य]



हमारा प्रत्येक घर अशान्तिका केन्द्र बना हुआ है। आन्तरिक व बाह्य जीवन सांसारिक उलझनोंके कारण एक भार सा मालूम होता है। एक दूसरेके प्रति घृणाका भाव बढ़ रहा है। आंखोंमें साम्प्रदायिक द्वेषका पटल छा रहा है। हमें विदित ही नहीं है कि हम किधर जा रहे हैं। अर्थात् बिना ही किसी लक्ष्यके कहीं दौड़े जा रहे हैं। बुद्धि वास्तविकतासे दूर पहुँच चुकी है। यह है आजका युग। यदि प्राचीन इतिहासके पृष्ठ उथले जायँ, तो हमें ज्ञान होगा कि वह समय इससे सर्वथा विपरीत था। उस समय एक दूसरेको उन्नत होते हुए एवं सम्पन्नता की ओर अग्रसर होते हुए देख द्वेषाग्निसे जल कर असूया नहीं करते थे। परन्तु स्वयं भी तत्समान बननेके सफल प्रयत्नमें जुट जाते थे। परन्तु आज हमें परस्पर विरोध-कलहका प्रचारक होनेमें तनिक भी लज्जा नहीं आती। आज हम बड़ी प्रसन्नतासे एक दूसरेके विचारोंको कुचलनेके लिए कटिबद्ध सन्नद्ध हो जाते हैं। आखिर क्यों ?.... इसका उत्तर पूछना चाहते हैं ? यदि हां ! तो सावधान होकर सुनो— कि हमारेमें उस सार वस्तुका अभाव हो गया है जिसके कारण मनुष्य मनुष्य कहलानेका अधिकारी होता है, जिससे जीवनमें अपनी मानवताका आनन्द भोग सकता है और जिसमें वह आनन्द परिपूर्ण है जिसे एक सजीव हृदय पानेकी आशा रख सकता है। वह गुप्त रहस्य यह है कि— वीर बनो, सुधीर बनो, सुदृढ़ बनो, दूसरोंके सद्विचारोंका सादर मान करो, जो कुछ भी करना चाहो—उत्साह, सत्यता एवं धार्मिकतासे करो। अपने चारों ओर जीवन लक्ष्यके अंकुर प्रसारित कर दो। अपने शत्रुओंको उपकारकी तलवारसे मारो। अपने जीवनको दूसरोंके जीवनके लिये बलिदान करदो। सावधान !!!.... यदि झूठ बोलोगे, दूसरोंको कुपथगामी बनाओगे, प्रवञ्चना करोगे, किसीके लिए छलकपटका जाल बिछाओगे, दुर्जनताका नग्न-नृत्य करोगे, तो बहुत बुरा करोगे। अपने लिये ही मार्गमें अन्धकूप खनन करोगे, जिसमें बुरी तरह अन्धेके समान गिर कर यातना भोगोगे। ऐसे प्रयत्न दूसरोंको हानि पहुँचानेसे पूर्व तुम्हें ही भयङ्कर अनर्थकारी सिद्ध होंगे, तुम्हें अपमानित दूषित एवं दूसरोंकी दृष्टिमें घृणित बनाकर तुम्हारे जीवनको नारकीय बना देंगे। यदि तुम्हें ये ही बातें रुचिकर हैं तो ये ही करो.... परन्तु इस अवस्थामें लोग तुम्हें कुत्सित उपाधियोंसे अलंकृत करेंगे। अर्थात् अयोग्य, पतित, क्लीव, नीचाशय....। फिर बताओ तुम्हें कौनसा मार्ग अभिमत है ?।

सज्जनों ? संसार आपसे सद् व्यवहारकी आशा रखता है। और सद् व्यवहार आपका स्वतः सिद्ध अधिकार है। ऐसे जीवनके कुछ दिन भी वर्षोंके उस दीर्घ जीवनसे कहीं श्रेष्ठ हैं जिनसे किसीको कुछ भी लाभ न हो। जिन्होंने संसारको दुःखद वा नरक समझा हुआ है, जिनके मुख पर सदा मलिनता छाई रहती है— वे लोग सर्वथा अबोध हैं। सम्प्रदाय वा विज्ञानकी चकाचौंधने इन्हें अपना सुलभ लक्ष्य बनाकर पदाक्रान्त कर रक्खा है। परन्तु जो मनुष्य कुछ भी प्राप्त करनेका विचार करते हैं वे भी भ्रान्त पथिक हैं। प्रकृतिने बड़ी उदारतासे सबको प्रसन्न रहने वा ऐक्यता सूत्रमें बंधने और भगवद्भजन करनेकी योग्यता प्रदान की है यदि आप इनसे वञ्चित रहे, तो यह किसीका नहीं आपका ही दोष है। यदि किसीने इसे अपनी अनभिज्ञता वा अज्ञानतासे खो दिया, तो वह फिर भी परिश्रम तत्परता और बुद्धिबलसे उसे प्राप्त कर सकता है। केवल मनको इस ओर प्रेरित करनेका बिलम्ब है। वह सब शक्ति साधकको स्वयं प्राप्त हो जाएगी, सबको उचित है कि बुरी भली घटनाओंमें प्रसन्न रहनेका स्वभाव बनालें। आरम्भमें कुछ कठिनता प्रतीत होगी, शनैः २ सुगमता होती जाएगी, और फिर वही बचपनकी सी सरलता स्वभावमें आ जाएगी।

धर्मको जाननेकी विधि

जीवके अत्यन्त प्रिय पुरुषार्थ कामको यथेष्ट उपयुक्त करनेके लिए साधन संसारमें अर्थ है। इसी प्रकार अर्थोपार्जन भी वैध ही होना चाहिए। उस विधिको ही धर्म कहते हैं। इस विषय पर 'शरदङ्क' में लिखा जा चुका है। प्रत्येक कामनाको पूर्ण करने की हितकर विधि (नियम) को धर्मरहस्यज्ञ सनातन ऋषिलोग धर्म कहते आये हैं। किन्तु संसारके हितकर नियमोंको भलीभांति जाननेके लिए क्या उपाय है; यह बिना ज्ञात हुए धर्म-तत्त्वका ज्ञान असम्भव है। इसी लिए हम इस लेखमें संक्षेपसे इस विषय पर प्रकाश डालेंगे।

भारतीय सम्पूर्ण वाङ्मयमें श्रीमद्भगवद्गीताका कितना ऊंचा स्थान है इसके वर्णनकी कोई आवश्यकता नहीं। इस बातको दिखलाना सूर्यको दीपक दिखानेके तुल्य ही है—यह बात भी आजके विश्वमें किसी से छिपी नहीं है, अस्तु। अब सुनिये भगवद्गीतामें ज्ञान प्रातिके उपायके विषयमें भगवान् क्या कहते हैं—

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

[उस ज्ञानको यदि तुम जानना चाहते हो तो तत्त्वका साक्षात्कार जिन्होंने प्राप्त किया है, उन ज्ञानियोंके पास जाओ, उन्हें श्रद्धासे प्रणाम करो, वे जो कुछ बताएँ उसका मनन करते हुए अपनी शंकाओंको उनसे बारम्बार पूछ कर दूर करो और उनकी सेवा करो, ऐसा करनेसे वे तत्त्वदर्शी ज्ञानी तुम्हें अवश्य ज्ञानका उपदेश करेंगे।]

इस भगवद्वाक्यको जिन पुरुषोंने भलीभांति पढ़ा है, उनका कहना है कि किसी भी विषयके ज्ञानकी प्राप्ति करनेके लिए सेवा, परिप्रश्न और प्रणिपात ये प्रधान उपाय हैं। किन्तु यह कहनेकी आवश्यकता नहीं कि सेवा आदि जिसके किये जायँ उसकी परीक्षा पहले ही कर लेनी चाहिए। आप्तपुरुषोंसे पहले यह निश्चय करलेना चाहिए कि जिस विषयका ज्ञान हमें प्राप्त करना है—उस विषयमें वह पुरुष भलीभांति जानकारी रखता है या नहीं। जब यह निश्चय हो जाए कि वह उस विषयमें पूर्ण पारङ्गत है तब उसके पास जाकर सेवा आदिसे उसे सन्तुष्ट करना चाहिए। अनन्तर वह स्वयं ही ज्ञानोपदेश करेगा। यदि सेवा आदिसे सन्तुष्ट न किया जाय तो कथमपि ज्ञानकी प्राप्ति सम्भव नहीं। इस विषय पर एक दृष्टान्त हमें याद आया—

बचपनमें हमने बूढ़ोंसे ऐसे कहते सुना था कि जब भगवान् रामचन्द्रने रावणको बाणोंसे जर्जरित कर मृत्युशय्या पर डाल दिया था तब भगवान् रामचन्द्रकी आंखोंसे आंसू आने लगे। उस समय लक्ष्मणने व्याकुल होकर भगवान् रामसे पूछा कि—

"भगवन्! आंखोंसे अश्रु आनेका क्या कारण है? मेरेसे कोई अवज्ञा हुई अथवा और कोई कारण है?" इस पर भगवान् कहने लगे कि—

"लक्ष्मण! नहीं, तुमने कोई अवज्ञा नहीं की, आंखोंमें अश्रु आनेका कारण तो यह है कि नीतिशास्त्रका संसारमें सबसे बड़ा धुरन्धर पण्डित आज पृथ्वीको सूना करने वाला है!" इस पर लक्ष्मण ने कहा कि—

"भगवन्! इसका प्रतिकार भी कोई है?" तब भगवान्ने कहा कि—

"हे लक्ष्मण! एक ही उपाय है, रावणके नीतिशास्त्रको इस भूमण्डलसे नष्ट न होने देने के लिए कोई पुरुष शीघ्रसे शीघ्र उस नीतिशास्त्र को जान ले।" लक्ष्मणने कहा—

"भगवन्! मुझे आज्ञा करिये तो मैं अभी सम्पूर्ण नीति-शास्त्रको रावणसे समझ लेता हूं!" तब भगवान्ने भी लक्ष्मणको रावणके पास जानेकी आज्ञा देदी। किन्तु लक्ष्मण ज्ञानप्राप्तिके उपाय नहीं जानता था। रावणके पास जाकर रावणके शिरकी ओर लक्ष्मणने खड़े होकर रावणसे कहा कि—

"ऐ रावण ! तुम मुझे नीतिशास्त्र बतलाओ।" मृत्युशय्या पर पड़ा हुआ रावण लक्ष्मणकी इस धृष्टता को देखकर हँस दिया और फटकार कर उसे कह दिया कि—

"भागजा यहांसे, बड़ा नीतिशास्त्र जानने आया है।" तब लक्ष्मण भी क्रुद्ध और खिन्न होकर भगवान् रामचन्द्रके पास चला गया। रावणकी असभ्यताकी सारी बात सुनाते हुए क्रोधसे लक्ष्मणने कहा कि—

"ऐसा अभिमानी नीतिशास्त्र क्या जानता होगा ?" भगवान् रामचन्द्रने इस पर लक्ष्मणको सान्त्वना देते हुए कहा कि—

"प्यारे लक्ष्मण ! एक बार फिर रावणके पास जाओ तथा उसके चरणोंकी ओर खड़े होकर चरण-वन्दना करते हुए हाथ जोड़कर नम्रतासे कहना—भगवन् ! मुझे नीतिशास्त्र पढ़ाइये। तब रावण तुम्हें अधिकारी जानकर नीतिशास्त्रका रहस्य अवश्य समझायेगा।"

हुई भी वही बात। लक्ष्मणके चरण-वन्दना करने पर रावणने कहा कि—

"लक्ष्मण ! तुम बहुत विलम्बसे आए हो और मेरे प्राण-पखेरू अब उड़ने ही वाले हैं, संक्षेपमें नीतिशास्त्रका रहस्य यही है कि— "सत्कार्योंको करने में विलम्ब न करो। कुकार्योंको करनेमें शीघ्रता मतकरो।"

अब लक्ष्मणने ज्ञान प्राप्तिके उपायोंको जाना और उसे सन्तोष भी हुआ। वह समझ गया कि रावण महापुरुष है। भगवान् रामचन्द्रकी आंखोंमें अश्रु आनेका कारण ठीक ही था।

पाठकों ! धर्मको जाननेकी यह एक संक्षिप्त विधि है। विशेष फिर कभी लिखेंगे।

—अ० वा० आचार्य

तुम्हें अभिमत यदि पुनरुत्थान !

(लेखक:—श्री पं० नन्दलालजी शास्त्री साहित्याचार्य)



करो स्वाध्याय सुधाका पान।
अमर बनो अरु फिर भारतको करलो स्वर्ग समान,
तुम्हें अभिमत यदि पुनरुत्थान।

(१)

गुण-गण भरित सरित्पति सम जिसका साहित्य।
अखिल लोक आलोक-प्रद कहलाता आदित्य।
विश्वका जो है कोष महान् ।।करो०।।

(२)

अन्य देशसे सीखने आते जहां अनेक।
आत्म-ज्ञान विज्ञान कला सभ्यता अरु विवेक।
उसी भारतकी तुम सन्तान ।।करो०।।

(३)

पारतन्त्र्यके पासमें पड़े हो तजि स्वाध्याय।
चतुरवर्गका ज्ञान अरु दिया पुराण भुलाय।
तुम्हें अभिमत यदि पुनरुत्थान ।।करो०।।

(४)

दीन-हीन जीवन हुआ शौर्य धैर्य गये भाग।
जबसे भूले कृष्णकी गीताका वह राग।
सुनो अब नन्दलालकी तान ।।करो०।।

ग्रहण विवेचन ।

चन्द्रमा ग्रहण और राहु क्या वस्तु है ? इनसे हमारा क्या सम्बन्ध है ?

ग्रहणमें दान जपादिका विशेष महात्म्य और भोजनादिका निषेध क्यों है ?

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक "श्रीस्वाध्याय"]

—:*❊❊❊*:—

ग्रहणके सम्बन्धमें भारतवासियोंकी धारणा

आकाशीय चमत्कारोंमें सूर्यचन्द्र-ग्रहणका चमत्कार जनताको एक प्रकारसे अद्भुत दिखाई देता है। इस चमत्कारको देखनेके लिए सभी लोग विशेष रूपसे उत्कण्ठित रहते हैं। हमारे प्राचीन भारतवर्षीय महर्षियोंसे जन-साधारण तक सूर्य-चन्द्र-ग्रहणके सम्बन्धमें क्या धारणा रखते थे—इस बातको हम अपने सिद्धान्तों द्वारा भली भांति बता सकते हैं। कोलम्बसको जिस प्रकार अमेरिकन लोग मिले थे, उस प्रकारके लोग हमारे भारतवर्षमें नहीं थे। जब अमेरिकन लोग ग्रहणको भगवान्‌का कोप मानकर भयसे घबराजाते थे, उस समय भारतीय लोग ईश्वरीय संकेतसे ग्रहणको महापर्वकाल अनुभव कर जपतपादि अनुष्ठानोंमें लग जाया करते थे। एवंच आकाशीय ग्रहोंसे भूमण्डलके प्राणिमात्रका घनिष्ठ सम्बन्ध तथा ग्रह-नक्षत्र पिण्डकी वस्तुस्थिति और गतिको हमारे भारतीय महर्षियोंने भलीभांति समझ रक्खा था, अस्तु। अब हम अपने पाठकों को फाल्गुन शु० १५ सोमवार ता० ३ मार्च सन् १९४२ ई० को होने वाले चन्द्रग्रहणके सम्बन्धमें कुछ महत्त्व-मण्डित बातें बतलायेंगे। चन्द्रग्रहणका स्पर्शमोक्ष काल और संसार पर इसका शुभाशुभ परिणाम बतलानेसे पहले चन्द्रमा क्या वस्तु है ? ग्रहण कब कैसे और क्यों होता है ? राहु क्या वस्तु है ? तथा इनसे हमारा क्या सम्बन्ध है ? इत्यादि ज्ञातव्य प्रश्नों पर प्रकाश डालना आवश्यक समझते हैं, अतः पहले हम यही सब कुछ बातें आपको बतलाते हैं।

चन्द्रमा क्या वस्तु है ?

चन्द्रमा स्वयं प्रकाशमान् नहीं है। वह हमारी पृथ्वीकी भांति ही ज्योतिर्विहीन है और वास्तवमें उससे प्रकाशका उद्गम नहीं होता। दीपक या सूर्यके प्रतिबिम्बसे जैसे जलराशि या दर्पणमें प्रकाश का भान होता है और ऐसा दिखाई देता है मानों वह प्रकाश सचमुच जल या दर्पणसे ही उत्पन्न हुआ हो। वैसे ही सूर्यकी रश्मियां चन्द्रमा पर पड़कर हमारी ओर प्रतिबिम्बित होती हैं। चन्द्रलोक निवासियोंको पृथ्वीसे भी इसी प्रकारका प्रकाश उत्पन्न होता हुआ दिखाई देता है, क्योंकि सूर्यकी किरणें पृथ्वी पर पड़ कर चन्द्रमाकी ओर प्रतिबिम्बित होती हैं। सूर्य ही की कृपासे पृथ्वी और चन्द्रमा दोनोंको प्रकाश प्राप्त होता है। चन्द्रमा यदि अपनी ही ज्योतिसे प्रकाशमान् होता तो शुक्ल पक्षकी द्वितीया तृतीयाको चन्द्रके दीप्तिमान् भागसे भिन्न अवशिष्ट भाग पर कालिमा कभी न दीख पड़ती। यह कालिमा आप लोगोंने देखी ही होगी, यदि न देखी हो तो अब प्रत्यक्ष अनुभव कर लीजिए।

इससे भी सिद्ध है कि चन्द्रमा स्वयं प्रकाशमान् नहीं है। यदि यह सूर्यकी भांति स्वयं प्रकाशमान् होता तो इसकी आकृतिमें भी कभी घटा-बढ़ी नहीं होती, क्योंकि गोलपिण्डका अर्धभाग प्रत्येक परिस्थितिमें सर्वदा अखण्डित दिखाई देता है। इस पर सिद्धान्त-शिरोमणिमें श्रीभास्कराचार्यजीने यों लिखा है—

तरणिकिरणसङ्गादेष पीयूषपिण्डो-
दिनकरदिशि चन्द्रश्चन्द्रिकाभिश्चकास्ति।
तदितरदिशि बालाकुन्तलश्यामलश्री-
र्घट इव निजमूर्त्तिच्छाययैवातपस्थः ॥

[चन्द्रमाका यह अमृतमयपिण्ड सूर्यकी किरणोंके संयोगसे उसीकी ओर प्रकाशित रहता है, किन्तु

उसकी दूसरी ओर अर्थात् उस ओर जिधर सूर्य की किरणें नहीं पड़तीं वह बाला स्त्रीके केशपाशकी श्यामल शोभा के सदृश अपनी ही छायासे धूपमें रक्खे हुए घड़ेकी भांति दिखाई देता है। धूपमें रक्खे हुए गोलाकार घड़ेका सूर्यके सम्मुख वाला आधा भाग प्रकाशित और दूसरी ओर वाला आधा भाग अपनी छायासे धुंधला रहता है। इसी प्रकार चन्द्रमाका वह भाग जिस पर सूर्यकी किरणें पड़ती हैं दीप्तिमान् और दूसरा भाग जिस पर सूर्यकी किरणें नहीं पड़तीं कालिमा लिए हुए रहता है।]

अमावस्याको चन्द्रमा, पृथ्वी और सूर्यके बीचोबीच आजाता है, अतएव उस समय चन्द्रमाका सूर्यकी ओर वाला आधा भाग जो हमको दिखाई नहीं पड़ता प्रकाशित होता है और हमारी ओरका आधा भाग अपनी ही छायामें डूबा रहता है। एतदर्थ अमावस्याको चन्द्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता। उस दिन वह सूर्यके साथ ही उदित होता है और उसीके साथ बहुत थोड़े अन्तरसे अस्त भी हो जाता है। फिर शुक्लपक्षके आरम्भमें ज्यों ज्यों चन्द्रमा सूर्यसे दूर होता है त्यों त्यों उसकी शुक्लता बढ़ती है। सूर्यकी ओर वाले भागका वह अंश जो हमें दिखाई देता है चमकीला होता है। उन दिनों चन्द्रमाका उदय और अस्त नित्य सूर्यसे कुछ कुछ पीछे होता है। शुक्लपक्षकी द्वितीयाको चन्द्रमाकी सूक्ष्म आकृति अत्यन्त मनोहर एवं दर्शनीय होती है। हमारे शास्त्रोंमें चन्द्रमाकी इस सूक्ष्म आकृतिको नवीनचन्द्र या बालचन्द्र आदि नामोंसे निर्देशित किया है। अंग्रेजीमें इसको न्यूमून (New Moon) या क्रिसेण्ट मून (Crescent Moon) कहते हैं। शुक्लपक्षमें चन्द्रमाकी शुक्लता क्रमशः बढ़ती है। बढ़ते २ एक सप्ताहके बाद (अष्टमीको) चन्द्रमाका आधा भाग दीप्तिमान् होजाता है और पुनः एक सप्ताह व्यतीत होने पर चन्द्रमा जब सूर्यसे १८० अंश दूर होता है उस समय चन्द्रमाका विम्ब पूर्ण होजाता है। उस दिन सूर्य पृथ्वी और चन्द्रमा तीनों एक ही सीध में रहते हैं और पृथ्वी सूर्य तथा चन्द्रमाके ठीक मध्यमें आजाती है। इसी योगका नाम पूर्णिमा या पर्वान्त काल है, इसको अंग्रेजीमें (Supirior Conjunction) कहते हैं। इस समय चन्द्रमाकी कला पूर्ण होती है। इस दिन सूर्यास्तके साथही चन्द्रमाका उदय पूर्वक्षितिजमें होता है। इस स्थितिमें चन्द्रमाका आधा भाग जो सूर्यकी ओर रहता है और जिस पर हमारी दृष्टि भी पहुँचती है प्रकाशित दिखाई देता है तथा दूसरी ओरका आधा भाग जिस पर हमारी दृष्टि नहीं पहुंचती अन्धकारमय होता है।

ग्रहण क्या वस्तु है ?

उपर्युक्त चन्द्रमाके परिचयसे पाठकोंको यह तो ज्ञात हो ही गया है कि पूर्णिमान्तकालमें सूर्यसे चन्द्रमा १८० अंश या पूरी ६ राशिके अन्तर पर रहता है। उस समय जब सूर्य चन्द्रमाके ठीक बीचमें पृथ्वी आजाती है तब एक प्रकाशमान् वस्तुके सामने जिस समय कोई दूसरी वस्तु आवेगी तो उस वस्तुकी छाया या परछांई प्रकाशपिण्डकी विपरीत दिशामें पड़ना स्वाभाविक ही है। इस नियमसे जब पूर्णिमान्तकालमें सूर्य पृथ्वी और चन्द्रमा तीनों एक ही सीध में रहते हैं तब सूर्यका प्रकाश पृथ्वीके एक पृष्ठ पर पड़नेसे विपरीत दिशामें (चन्द्रमाकी ओर) बहुत बड़ी परछांई आकाशमें पड़ती है। इस परछांई को हम सर्वदा नहीं देख सकते; क्योंकि परछांई चाहे जितनी बड़ी क्यों न हो, जब तक वह किसी पदार्थ पर न पड़ेगी तब तक हम उसे देख न सकेंगे। इस कारण सूर्यकी किरण पड़नेसे पृथ्वीके या चान्द्के इतर भागकी छाया सर्वदा आकाशमें रहने पर भी हमें नहीं देख पड़ती। जब वह आकाशके किसी बड़े पदार्थके ऊपर पड़ती है तभी हम उसे देख सकते हैं। अतः पूर्णिमान्तकालमें चन्द्रमा जितना इस छाया (भूभावृत्त) में प्रविष्ट होता है; उतना ही भाग कालिमायुक्त दिखाई देता है, जिसे हम ग्रहण कहते हैं। इसी लिए हमारे आचार्योंने लिखा है कि—"छादयत्यर्कमिन्दुर्विधुंभूमिभा" अर्थात् सूर्यग्रहणमें चन्द्रमा सूर्यको आच्छादन करता (ढकता) है और चन्द्रमाको पृथ्वीकी छाया ढक देती है। छाया जिस वस्तु पर भी पड़ेगी वह सब ओरसे समान ही दिखाई

देगी; चाहे कहींसे भी देखें। इसी कारण चन्द्रग्रहण सर्वत्र एकजैसा ही दिखाई देता है। किन्तु सूर्यग्रहणमें छाद्यछादक कक्षा भेद होनेसे देशभेदानुसार भिन्न २ स्थितिमें दिखाई देता है।

हां, तो अब यहां यह प्रश्न हो सकता है कि—जब पृथ्वीकी छाया एवं चन्द्रमा ही ग्रहणके कारण हैं और पूर्णमासी अमावास्याको सूर्य चन्द्र पृथ्वी तीनों एक सीधमें रहते हैं तब प्रत्येक पूर्णमासी व अमावस्याको ग्रहण क्यों नहीं होते ? इसका उत्तर यह है, सुनिये—

चन्द्रकक्षावृत्त और क्रान्तिवृत्तके धरातलोंमें ५ अंशका विक्षेपकोण है। इसीको चन्द्रमाका परम शर कहते हैं (यह आजकल ५ अंश ६ कला है, सिद्धान्तशेखरादि प्राचीन ग्रन्थोंमें ४ अंश ३० कला ही लिखा है) प्रति पूर्णिमाको भूच्छाया और चन्द्रमा का पूर्वापर अन्तर तो शून्य होता है, किन्तु उनका दक्षिणोत्तर अन्तर शून्य नहीं हो पाता; जिससे चन्द्रमा युति या पर्वान्तकालमें बहुधा भूच्छायासे बचकर शरकी दिशामें कभी उत्तरकी ओर तथा कभी दक्षिणकी ओर निकल जाता है और ग्रहण नहीं होने पाता । श्रीवराहमिहिराचार्यजीने बृहत्संहितामें यों लिखा है—

सूर्यात्सप्तमराशौ यदि चोदग्दक्षिणेन नातिगतः।
चन्द्रः पूर्वाभिमुखश्छायामौर्वी तदा विशति॥

अमावास्याको भी चन्द्रमाकी प्रायः ऐसी ही स्थिति रहती है, इसी कारण प्रत्येक पूर्णिमा और अमावास्याको ग्रहण नहीं होता । किन्तु चन्द्रपातों (या यों कहिये कि राहु केतु स्थानों) की परिस्थिति भेदसे चन्द्र शर युतिकालमें सदा समान नहीं रहता। युति (पर्वान्त) कालमें चन्द्रमा और चन्द्रपातोंकी पूर्वापर स्थितिमें जितना सामीप्य होगा उतना ही उस समय चन्द्र-शर न्यून होगा। यदि भूच्छायाबिम्ब और चन्द्रबिम्बकी त्रिज्याओंका योगफल (ज्योतिश्शास्त्रकी परिभाषामें जिसको मानैक्यखण्ड कहते हैं) चन्द्र शरके बराबर हो तो वर्तुल-धर्मानुसार भूच्छाया और चन्द्रबिम्बका परस्पर स्पर्शमात्र होता है। मानैक्य खण्डसे यदि चन्द्र शर न्यून हो तो जितना ही शर छोटा होता है उतना ही चन्द्रबिम्ब भूच्छायामें प्रवेश करता है। चन्द्रबिम्बका वह भाग जो भूच्छायामें प्रविष्ट रहता है कालिमायुक्त दीख पड़ता है । इस दृग्विषयको चन्द्रग्रहण कहते हैं।

युतिकालमें मानैक्यखण्डकी अपेक्षा चन्द्र शरके न्यून होनेसे ग्रहणका संयोग होता है। भूच्छायाके अर्धव्यासका मध्यममान कलादि ४१.७५ और चन्द्र-बिम्बके अर्धव्यासका मध्यममान कलादि १५.६ होता है । अतएव जिस युतिकालमें शन्द्रशर ४१.७५+१५.६=५७.३५ से न्यून हो उस समय ग्रहण का योग उपस्थित होता है, अन्यथा नहीं। इस नियम की पूर्तिके लिए युतिकाल (अमान्त पूर्णिमान्त) में चन्द्रपात (राहु) से चन्द्रबिम्बका पूर्वापर अन्तर १२ अंश से अधिक कभी नहीं होना चाहिए।

राहु क्या वस्तु है ?

पुराणोंमें तथा बृहत्संहितामें श्रीवराहमिहिराचार्य जीने राहुके सम्बन्धमें यों लिखा है—

सिंहिकातनयो राहुरपिबच्चामृतं पुरा।
शिरच्छिन्नोऽपि न प्राणैस्त्यक्तोऽसौ ग्रहतां गतः॥
अमृतास्वादविशेषाच्छिन्नमपि शिरः किलासुरस्येदम्।
प्राणैरपरित्यक्तं ग्रहतां वदन्त्येके॥
इन्द्वर्कमण्डलाकृतिरसितत्वात्किल न दृश्यते गगने।
अन्यत्र पर्वकालाद्वरप्रदानात्कमलयोनेः॥
अन्धकारमयो राहुर्मेघखण्ड इवोत्थितः।
आच्छादयति सोमार्कौ पर्वकाले ह्युपस्थिते॥
योऽसावसुरो राहुस्तस्य वरो ब्रह्मणाऽयमाज्ञप्तः।
आप्यायनमुपरागे दत्तहुतांशेन ते भविता॥
तस्मिन्काले सान्निध्यमस्य तेनोपचर्यते राहुः।
याम्योत्तरा शशिगतिर्गणितेऽप्युपचर्यते तेन॥

कोई आचार्य ऐसा कहते हैं कि जो राहु नामक ग्रह है वह पहले एक असुर था, उसने छलसे अमृत पान किया। इस कारण भगवान् विष्णुने उसका शिर काट दिया। परन्तु अमृतपानके प्रभावसे उसका कटा हुआ शिर प्राणहीन न होकर वही राहु नामक ग्रह

माना जाने लगा। राहुका अन्धकारमय कृष्णमण्डल है, इस लिए ब्रह्माजीके वरदानसे ग्रहणकालके विना वह आकाशमें दिखाई नहीं देता। केवल ग्रहणकालमें ही राहुका दर्शन होता है। यह जो राहु नामक असुर है, इसको ब्रह्माजीनेयह वर दिया है कि ग्रहणके समय जो दान हवनादि करेंगे उसके अंशसे तेरी भी तृप्ति होगी। इस लिए ग्रहणके समय राहुका (चन्द्रपातका) सान्निध्य होता है। इसीसे लोकमें कहनेकी यह रीति पड़ गई है कि राहु ग्रास (ग्रहण) किया करता है। गणितमें जो शरके कारण चन्द्रमाकी उत्तर दक्षिण गति होती है—वह शर पातसे सम्बन्ध रखता है। भौमादि ग्रहोंके भी पात हैं परन्तु यहां चन्द्रमाके पात को ही राहु कहा जाता है।

श्री भास्कराचार्यजीने सिद्धान्तशिरोमणिमें राहुके लिए यों लिखा है—

"राहुः कुभामण्डलगः शशाङ्कं शशाङ्कगश्छादयतीनबिम्बम्।"

अर्थात् भूच्छाया मण्डलमें गया हुआ राहु चन्द्रमाको आच्छादन करता है और चन्द्रमण्डलस्थ राहु सूर्यग्रहणमें सूर्यको ढक देता है। पुराणोंमें राहुकी माता सिंहिकाका दूसरा नाम छाया है, इसीसे राहुको छायापुत्र भी कहा जाता है, अस्तु।

समुद्र मथन तथा १४ रत्नोंका विचार करने पर राहुकेतुके सम्बन्धमें जो कल्पना फुरती है वह हम यहां देते हैं—

"देव तथा दैत्योंने समुद्रको मथा उसमेंसे अमृतका घड़ा निकला, उसको भगवान् विष्णु अपने हाथमें लेकर सब देवताओंको अमृत बांट रहे हैं" इस आख्यायिकामें जो विष्णु हैं वे वास्तवमें परमतत्त्व-स्वरूप भगवान् सूर्य हैं। तथा अमृतघट यह कुम्भ राशि है [प्राचीनकालमें नक्षत्रगणना धनिष्ठासे आरम्भ होती थी, जैसे आजकल अश्विन्यादि नक्षत्रगणना है। इसी लिए लिखा गया है—

"नक्षत्रचक्रे प्रथमं धनिष्ठे त्युदीरतं श्रीलगधेन तस्मात्"

इत्यादि विषय कठिन है अतः सर्वसाधारणको इसकी उपपत्ति सहज समझमें नहीं आसकेगी। इस कारण हम इसका यहां अधिक विस्तार न करके केवल इतना ही लिखेंगे कि इस धनिष्ठा नक्षत्रसे ही कुम्भराशि आरम्भ होती है] अब इस दृष्टिसे आलोचना करने पर सब देव (ग्रह) तथा विष्णु (सूर्य) ये सारे कुम्भराशिमें एकत्रित थे उस समय सूर्य-चन्द्रकी कक्षाएं भिन्न २ न होकर एक ही थी, ऐसे समय यह घटना हुई प्रतीत होती है। इसके अनन्तर सूर्यकक्षासे (क्रांन्तिवृत्तसे) चन्द्रकक्षाके पृथक् होने पर क्रांतिवृत्तने चन्द्रकक्षाके जिस स्थानको काटा या क्रास किया (इसीको विष्णु द्वारा राहुका शिर काटा जाना कहते हैं) उसी स्थान या प्रथम सम्पातका नाम राहु और दूसरेका केतु पड़ गया होगा। तदनन्तर चन्द्रमाका विक्षेपमान बढ़ता गया हो, ऐसा होना कोई असम्भव बात नहीं। कारण ग्रहोंकी कक्षाएं विक्षेपमानसे न्यूनाधिक हुआ करती हैं। यह भारतीय ज्योतिश्शास्त्रके इतिहासमें स्व० शंकर बालकृष्ण दीक्षितजीने भी शनिके रोहिणी शकट भेद-सम्बन्धमें लिखी है, अस्तु।

ग्रहणसे हमारा क्या सम्बन्ध है?

अब यह बात तो पाश्चात्त्य विज्ञानसे भी सिद्ध हो चुकी है कि इस सौर-जगत्में जितने ग्रह, उपग्रह, तारे आदि हैं उनका परस्पर आकर्षण-विकर्षणका सम्बन्ध है। वे सब एक दूसरेसे कुछ लेते देते रहते हैं। पृथ्वीमें जितनी वस्तुएँ हैं वे सब चन्द्रज्योति प्रधान एवं सूर्यज्योति प्रधान हैं। जिनमें चन्द्रज्योतिकी प्रधानता है—वे सब वृक्ष, वनस्पति, लता, औषधि, पशु, पक्षी, मनुष्य स्त्री जातिके हैं और जिनमें सूर्यज्योतिकी प्रधानता हैं, वे सब पुरुष जातिके होते हैं। इन सबके साथ सूर्य और चन्द्रमाका सम्बन्ध है। मन चन्द्रमा और बुद्धि सूर्य है। श्रुतिने भी इसका समर्थन किया है— "चन्द्रमा मनसो जातः" तथा "धियो योनः प्रचोदयात्" इस लिए सूर्य और चन्द्रमामें कोई विकार हो अथवा उनके द्वारा होने वाले आकर्षण विकर्षणमें यदि कोई व्यवधान पड़ जाय तो भूमण्डलके समग्र पदार्थों और प्राणियों पर उसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। इसी कारण अन्य

पूर्णिमा अमावस्याकी अपेक्षा यह (ग्रहणकी पूर्णिमा अमावस्या) बहुत अनिष्ट हुआ करती हैं। सूर्यग्रहणमें बुद्धि और सूर्यके बीचमें व्यवधान आ जानेके कारण तथा चन्द्रग्रहणमें चन्द्रमा और मनके बीचमें सम्बन्ध विच्छेद हो जानेके कारण मन एवं बुद्धि विक्षिप्त हो उठते हैं। उस समय यदि उन्हें किसी विशेष शक्तिका आश्रय न मिले तो वे बहुतसे प्रमादके कर्म कर सकते हैं। उन्हें भगवन्नामकी, मन्त्रकी शक्तिका आश्रय देकर अनेकों प्रकारके उत्पात करनेसे बचा लिया जाता है। तीर्थ सेवन और स्नानसे पवित्रताका भाव जागृत रक्खा जाता है। दानसे संकीर्णताका भाव न आने देकर उदारता बनायी रक्खी जाती है और जप ध्यानसे प्रेम भावका अनुभव किया जाता है। उस समयके जप ध्यान दानादिसे भयानक प्रवृत्ति स्वयं ही निवृत्त हो जाती है। इसी कारण ग्रहणमें जप ध्यान दानादिका विशेष महात्म्य लिखा है। पाठकोंने देखा होगा कि प्रत्येक पूर्णमासीको समुद्रमें बहुत बाढ़ आती है। इन्हीं तिथियोंमें रोग बढ़ जाते हैं। श्वास रोगियोंकी स्थिति भयानक हो जाती है। उन्मादग्रस्त पुरुषोंकी प्रकृतिमें सहसा परिवर्तन हो जाता है; इत्यादि कई विचित्र बातें हुआ करती हैं। इस विवेचनसे पाठकगण भलीभांति समझ गये होंगे कि आकाशीय ग्रहों तथा ग्रहणोंके साथ मनुष्य जीवनका कितना घनिष्ठ सम्बन्ध है।

ग्रहण और ग्रहण के वेधमें भोजनादि करना निषेध क्यों है ?

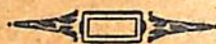
ग्रहणके समय मन और बुद्धि कुछ चञ्चल, विश्रृङ्खलसे रहते हैं; क्योंकि उन्हें शक्ति देने वाले चन्द्रमा और सूर्य उस समय ठीक ठीक पूरी शक्ति नहीं देते। मनकी अस्तव्यस्त अवस्थामें अथवा विषण्ण अवस्थामें पाचन शक्ति ठीक २ काम नहीं करती। साथ ही खानपानके जितने पदार्थ हैं उन सब पर भी ग्रहणका पर्याप्त प्रभाव पड़ता है। समस्त पदार्थोंमें दो प्रकारकी शक्तियां रहती हैं—एक सूर्यकी और दूसरी चन्द्रमाकी। किसीमें एककी प्रधानता अधिक होती है तो किसीमें दूसरेकी। चन्द्रमा औषधियोंको रस प्रदान करता है (इसी लिए चन्द्रमाका नाम औषधीश भी है— "औषधीशो निशाकरः) और सूर्य उनमें ज्ञान शक्ति एवं प्राण शक्ति भरता है। रसदार फलोंमें चन्द्रमाकी प्रधानता अधिक और सूर्यकी प्रधानता न्यून रहती है— जैसे अंगूरमें जबतक चन्द्रमाका प्राधान्य रहेगा, तब तक वह रसदार अंगूरोंके रूपमें रहेगा और ज्योंही उसमें सूर्यका प्राधान्य अधिक हुआ त्यों ही धीरे २ वही अंगूर अपना रूप बदलकर किसमिस या मुनक्काके रूपमें आ जावेगा। उस समय उसमें रसकी प्रधानता नहीं रहती, ज्ञान और बलकी प्रधानता रह जाती है। यदि ग्रहणके समय कोई भी पदार्थ खाया पीया जाय तो प्रत्येक पदार्थका चन्द्रमा और सूर्यके साथ सम्बन्ध होनेके कारण जो उनमें शक्ति आती थी वह नहीं आयेगी और वे नाना प्रकारके विकार उत्पन्न कर देंगे। इसी लिए ग्रहण और ग्रहणके वेधमें भोजनादि करना निषेध किया गया है। इसके अतिरिक्त जब जप, ध्यान, पूजा-पाठ अथवा साधनका समय होता है, तब पेटको हलका रखना पड़ता है। पेट भारी हो जाने पर बहुत-सी नस-नाड़ियां खिंच जाती हैं; रक्तकी गति बढ़ जाती है और मन एकाग्रताके साथ भजनमें नहीं लगने पाता। इस कारण भजन आदिकी सुविधाकी दृष्टिसे भी ग्रहणके वेधमें (ग्रहणारम्भसे तीन चार प्रहर पहले) भोजनका निषेध है।

ग्रहणके समय घृत दुग्ध अन्न फलादि पदार्थोंमें कुशा रक्खी जाती है। इसका कारण यह है कि कुशामें एक ऐसी अद्भुत विद्युच्छक्ति है कि उस पर अन्तरिक्ष सम्बन्धी कोई अनिष्ट प्रभाव नहीं पड़ सकता। इसीलिए सब पदार्थोंमें पहलेसे ही कुशा रखदी जाती है, ताकि ग्रहणके कारण उन पदार्थोंमें कोई विकृति न आने पावे। कुशामें कई अद्भुत गुण हैं। इसके आसन पर बैठे हुए साधक पर बिजलीका कोई प्रभाव नहीं होता, ज्ञानशक्ति बढ़ती है। इसी कारण हमारे तत्त्वदर्शी महर्षियोंने कुशाके आसनको विशेष महत्त्व दिया और सन्ध्या तर्पण हवनादि प्रत्येक कार्यमें कुशाका उपयोग किया है।

—

ग्रस्तास्त खग्रास चन्द्रग्रहण और संसारका भविष्य।

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक "श्रीस्वाध्याय"]



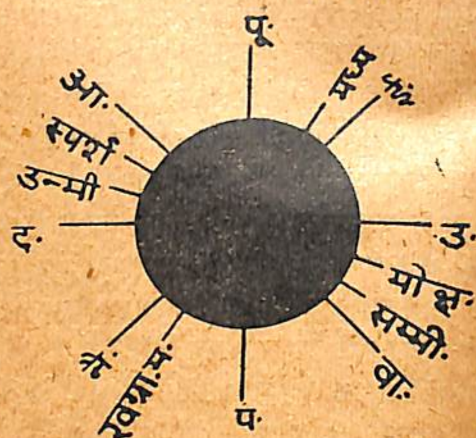
वर्तमान सं० १९९८ फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा सोमवार तदनुसार ता० ३ मार्च १९४२ ई०को खग्रास चन्द्रग्रहण होगा। यह यूरोप, अफ्रीका, एशिया, हिन्द-महासागर और अतलान्तकमहासागरमें दिखाई देगा। भारतमें यह ग्रस्तास्त होगा, अर्थात ३ मार्च मंगलवारको प्रातः सूर्योदयके समय ग्रहण लगा हुआ ही चन्द्रमा अस्त हो जावेगा। उत्तरोत्तर पूर्वीय भारत में अधिकाधिक ग्रास लगा हुआ चन्द्रमा अस्त होगा और पश्चिमी भारत की ओर क्रमशः थोड़ा २ ग्रसित चन्द्रविम्व अस्त होगा। सूक्ष्म दृश्य गणनानुसार सोमवार को अर्धरात्रोत्तर भारत में स्टेण्डर्ड (रेलवे) टाइम से इस ग्रहण का स्पर्शादि काल निम्न लिखित है:—

अर्धरात्रिके उपरान्त स्टे० टा०	घं० मि०
स्पर्श (ग्रहणारम्भ)	४—२
सम्मीलन	५—४
मध्य	५—५३
उन्मीलन	६—४१
मोक्ष (ग्रहण समाप्त)	७—४३

सर्वग्रहण (पर्वकाल) ३ घंटे ४१ मिनट का है।

यह स्पर्शादिका समय किसी एक स्थान का नहीं है; अपितु स्टेण्डर्ड टाइमके अनुसार सम्पूर्ण भारतवर्षमें ऊपर लिखे समय पर ही स्पर्श सम्मीलनादि होता हुआ दिखाई देगा। छाद्य-छादक कक्षा भेद न होनेके कारण चन्द्रग्रहणका स्वरूप (ग्रास) भी सर्वत्र एक जैसा ही दिखाई देता है। यह हम पहले लिख चुके हैं। इस चन्द्रग्रहण की खग्रास स्थिति और स्पर्श मोक्षादि दिशा ज्ञापक चित्र नीचे दिया जाता है।

ग्रहण मध्यकालमें ग्रास स्वरूप और स्पर्शादि स्थान प्रदर्शन।



इस ग्रहणका वेध (सूतक) ता० २ मार्च सोमवार को सायंकाल स्टे० टा० ७—२ पर आरम्भ होगा। ग्रहणवेधमें भोजनादि करना निषेध है। इसका कारण हम पहले बतला चुके हैं।

यह ग्रहण ग्रस्तास्त हो रहा है, अतः इसके लिए धर्मशास्त्रकी आज्ञा है कि दूसरे दिन (प्रतिपदा मंगलवारको) सारा दिन व्रत रक्खे और सायङ्कालके समय शुद्ध चन्द्रमण्डलके दर्शन करके भोजन करे। ग्रहण मोक्ष समयके अनन्तर प्रातःकाल स्नान सन्ध्या हवनादि नित्यकर्म कर सकते हैं। मदन रत्नमें लिखा है:—

ग्रस्तेत्वस्तंगतेत्विन्दौ ज्ञात्वा मुक्त्यवधारणम्।
स्नानहोमादिकं कार्यं भुंजीतेन्दूदये पुनः॥

ग्रस्तास्त ग्रस्तोदय ग्रहणोंमें हेमाद्रि और पुरुषार्थ-चिन्तामणिके मतसे पुत्रवान् गृहस्थियोंको उपवास करना निषेध है। यथा—

आदित्येऽहनि संक्रान्तौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः।
पारणं चौपवासं च न कुर्यात्पुत्रवान् गृही॥

इस कारण इस ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहणके अनन्तर प्रतिपदा मंगलवारकों केवल विधवा स्त्रियां यति और विरक्त लोग ही उपवास करें। सर्वसाधारण गृहस्थियोंके लिए इसका विधान नहीं है। ग्रहणके वेधमें बाल-वृद्ध और रोगियोंको भी भोजन, पथ्य सेवनादि का निषेध नहीं है।

ग्रहणमें यदि कोई पवित्र तीर्थ-स्थान मिल जाय तो सर्वोत्तम है। अन्यथा जहां जैसा स्थान उपलब्ध हो वहीं स्नान, भगवद्भजन और यथा शक्ति दान करना आवश्यक है। ग्रहणमें देश पात्र और द्रव्य विशेषकी शंका नहीं करनी चाहिए। व्यासजीने लिखा है—

सर्वं गङ्गासमं तोयं सर्वे ब्रह्मसमाद्विजाः।
सर्वा भूमिः कुरुक्षेत्रं ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः॥

ग्रहणके समय घरके (गरम या ठण्डे) जलसे लेकर कूप, तड़ाग, झरना, झील; नदी, तीर्थ, समुद्र पर्यन्तमें स्नान करनेका उत्तरोत्तर विशेष माहात्म्य है। यथा—

शीतमुष्णोदकात्पुण्यमपारक्यं परोदकात्।
भूमिष्ठमुद्धृतात्पुण्यं ततःप्रस्रवणोदकम्॥
ततस्ततोऽपि गङ्गाम्बु पुण्यं पुण्यस्ततोऽम्बुधिः।

ग्रहणके स्पर्श होते ही स्नान करके शुद्धासन पर बैठकर भगवन्नाम जप ध्यानादिमें लग जाना चाहिए। ग्रहणके मध्यमें हवन और देवार्चन होता है। यहां अर्धरात्रोत्तर स्टै० टा० ५–४ से ६–४१ तक हवनादि कृत्य कर सकते हैं। दान तथा श्राद्धादिका संकल्प ६—४१ के उपरान्त होना चाहिए। लिखा भी है।

स्पर्शे स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुरार्चनम्।
मुच्यमाने प्रदातव्यं मुक्ते स्नानं विधीयते॥

यहां सोमवार को चन्द्रग्रहण होनेसे चूड़ामणि नामक योग बनता है। साथ ही यह हुताशनी (होलिका) पर्वकी प्रधानरात्रि है, अतः यह महापर्वकाल मन्त्र, जप, ध्यान, दानादिके लिए अत्यन्त श्रेयस्कर सिद्ध होगा। ऐसा योग कई वर्षोंमें नहीं मिलेगा।

राशियों का शुभाशुभ

यह ग्रहण पू० फा० नक्षत्र और वृष, सिंह, कन्या, मकर राशिवालों को दुःख शोकादि अशुभ फलदायक है। मेष, कर्क, धनु, कुम्भ राशिवालों को मध्यम। मिथुन, तुला, वृश्चिक, मीन राशिवालों को शुभ है। जिन राशियों को यह ग्रहण अशुभ है—वे लोग और गर्भवती स्त्रियां ग्रहणका दर्शन न करें। कल्याणार्थ भगवद्भजन और यथा शक्ति दान हवनादि करें।

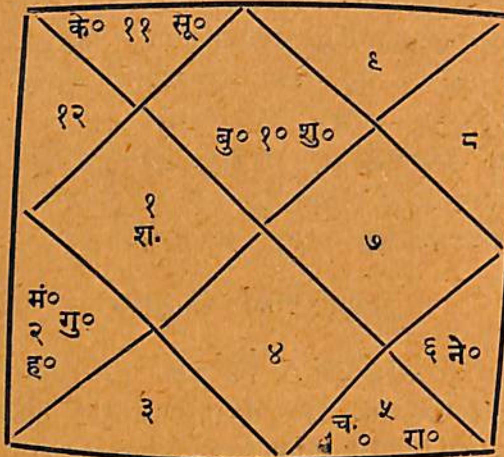
ग्रहणका संसार पर प्रभाव

श्री वाराहमिहिराचार्यके मतसे इस ग्रहणके मास, वार, नक्षत्र, राशि, पर्वेश, खांश, वर्ण, खग्रास आदिके शुभाशुभ फलका निष्कर्ष यह है—
ब्राह्मण, क्षत्रिय, राजा, विद्वान्, तपस्वी, प्रधानपुरुष, नेता, सेनापति, कलाविद्, व्यापारी, योद्धा, शस्त्रधारी, श्रेष्ठ स्त्रियां, बंगाल, अश्मक, आवन्त (मालव-प्रान्त) काम्बोज, सौराष्ट्र (काठियावाड़) म्लेच्छदेश (अफगानिस्तान तुर्की ईरान-ईराक-मिश्र आदि) काश्मीर, त्रिगर्त्त (कांगड़ा प्रान्त) मत्स्य, कुरुदेश, सीमान्त, सिन्धप्रदेशमें रहनेवाले और समुद्रतटवर्ती लोग (ये सब) इस ग्रहणके अनिष्ट प्रभावसे पीड़ित रहेंगे। चोर, डाकू, लुटेरे आदि आतताई लोगों और राज्य के भय से प्रजा में आतङ्क वृद्धि हो। संसारमें अवर्षण, जलप्लावन, भूकम्प, आंधी-तूफान, युद्ध, दुर्भिक्ष, महामारी आदि अनेक उपद्रव हों। ग्रस्तास्त चन्द्रग्रहणके कारण शारदीय धान्यके नाशसे संसार में दुर्भिक्ष और रोगकी वृद्धि होगी। लिखा भी है—

उद्गच्छति गृहीतश्चेदस्तं वा यदि गच्छति।
शरदन्तु तदा सदस्यं जातं विपद्यते॥
ग्रैष्मेण तत्र जीविन्ति नराः मूल फलेन वा।
भय दुर्भिक्ष रोगैश्च तदा संपीड्यते जगत्॥

धान्य, औषधियां, रस, रुई, कपास, सूत, वस्त्र, तैल, मधु, स्वर्ण, रत्न, केशर और लालरंग की वस्तुओं का भाव तेज रहेगा। गेहूं, रुई, अलसीमें भयंकर तेजी आवेगी।

ग्रहणमध्यकालीन कुण्डली



इस कुण्डलीकी ग्रह स्थितिसे भी ज्ञात होता है कि यह ग्रहण समस्त संसारके लिए महान् अनिष्टकर सिद्ध होगा। देशकी राज्य व्यवस्था और अन्तर्राष्ट्रिय व परराष्ट्रिय राजकारणोंमें विषम हलचलें उत्पन्न होंगी। राजनैतिक सम्बन्धोंमें कई उलटफेर होंगे। पाश्चात्य मतसे पृथ्वी-तत्त्वकी राशिमें यह ग्रहण हो रहा है, अतः राष्ट्रकी उत्पादन शक्ति (खेती धान्य व्यापार सम्पत्ति आदि) की परिस्थिति में अनपेक्षित वाधा उपस्थित होगी। अधिकारारूढ़पक्ष सर्वदा सशंक एवं भयान्वित रहेगा। ग्रहण राशि लग्नसे अष्टम है इस कारण राजनैतिक, सामाजिक, साम्प्रदायिक एवं धार्मिक उथल पुथल बहुत अधिक होगी। विशेषतः फ्रांस, इटली, रूमानियामें विलक्षण क्रान्ति होगी। भारतमें काश्मीर सीमाप्रान्त और सिन्ध प्रदेशमेंभी क्रान्तिकी सम्भावना है। सर्वसाधारण जनता, श्रमजीवि एवं दासवर्गमें अधिक अशान्ति रहेगी। देशमें कई प्रकारके षड्यन्त्र होंगे। अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति प्राप्त किसी महापुरुष पर महान् संकट आवे या मृत्यु हो। धनेश शनि नीच राशि में है और द्वितीय स्थानमें सूर्य केतु पड़े हैं, अतः करों (टैक्सों) में परिवर्तन होंगे। किसी बड़े वस्तु निर्माणगृह (कारखाने) या बैंकका दिवाला निकलेगा। नवमभावमें नेपच्यून होनेके कारण समुद्रमें बादल और आंधियां अधिक आवेंगी। षष्ठेश लग्नमें होनेसे सांसर्गिक रोगों द्वारा प्रजाको महान् कष्ट होगा और छोटे लड़कोंकी मृत्युसंख्या अधिक होगी। सारी ग्रहण कुण्डली पर सम्यक्तया विचार करनेसे ज्ञात होता है कि इस ग्रहणका परिणाम मध्यममानसे दो तीन मास तक दिखाई देगा। ग्रहण पृथ्वीके जिन-जिन प्रदेशोंमें दिखाई देगा; उन उन प्रदेशोंमें उपर्युक्त अनिष्ट परिणाम होगा। इसके अतिरिक्त प्रशिया, रशिया, स्वीडन, अबीसीनिया, तुर्किस्तान आदि देशों तथा भारतवर्षमें उत्तर पश्चिमी भारत (काश्मीर-सिन्ध-बिलोचिस्तान-सीमान्त-पंजाब) और बङ्गाल आसाममें ग्रहणका अनिष्ट प्रभाव विशेष रूपसे होगा। इसके अतिरिक्त इस ग्रहणका अन्य विशेष फल वही होगा जो हम "श्रीस्वाध्याय" के गताङ्कमें विगत चन्द्र-सूर्य-ग्रहणोंके सम्बन्धमें लिख चुके हैं।

ग्रहण मोक्षके अनन्तर जिस प्रान्तमें एक सप्ताहके भीतर किसी भी दिन यदि धूलिवर्षण हो जाय तो उस प्रान्तमें अन्ननाश और रोग भय हो। भूकम्प होनेसे राजाकी मृत्यु हो। उल्कापात होनेसे प्रधानपुरुषकी मृत्यु हो। सायङ्कालके समय नानावर्णयुक्त मेघ दिखाई दें तो प्रजामें भय हो। मेघ गर्जन होनेसे गर्भवती स्त्रियोंको पीड़ा हो। विद्युत्पात होने (बिजली गिरने) से राजासे तथा सर्पादि हिंसक जन्तुओंसे प्रजाको सन्ताप हो। परिवेष हो तो राजभय अग्निभय और मार्गस्थ मनुष्योंको चौरभय हो। यदि इन्द्र धनुष दिखाई दे तो उस प्रान्तमें दुर्भिक्ष व परचक्रका भय हो।

यहां चैत्र कृष्ण १ से चैत्र कृ० ८ मङ्गलवारको प्रातः ७-४३ तक इन उत्पात-लक्षणोंका मिलान करना-चाहिए।

आगे इस वर्षमें जो अशुभ योग आने वाले हैं उनका फल; तथा वर्तमान महायुद्धका परिणाम संसारके लिए कैसा रहेगा ? इस सम्बन्धमें एक लेख "महायुद्धके परिणाम और संसारकी परिस्थिति पर ज्योतिश्शास्त्रकी दृष्टि" शीर्षकसे 'श्रीस्वाध्याय' के गताङ्कमें दिया जा चुका है। पाठक वहां देख सकते हैं।

त्रैमासिक ग्रहयोग-प्रतियोग चमत्कार

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक "श्रीस्वाध्याय"]

—:*****:—

पौष शु० १० ता० २८ दिसम्बर १९४१ ई० से चैत्र शु० ६ ता० २६ मार्च १९४२ ई० तकके ग्रहयोग (युति) और उनका परिणाम नीचे दिया जाता है। इन तीन मासोंमें भौमादि ग्रहोंका प्रतियोग कोई नहीं है।

चन्द्र युति (चन्द्र ग्रह समागम)

पौष शुक्ल	११	सोमवार	शनि	चन्द्र	युतिः
,, ,,	१२	मंगलवार	हर्शल	,,	,,
,, ,,	१३	बुधवार	गुरु	,,	,,
माघ कृष्ण	६	गुरुवार	नेपच्यून	,,	,,
,, शुक्ल	२	रविवार	बुध	,,	,,
,, ,,	,,	,,	शुक्र	,,	,,
,, ,,	८	शनिवार	मंगल	,,	,,
,, ,,	९	रविवार	शनि	,,	,,
,, ,,	१०	सोमवार	हर्शल	,,	,,
,, ,,	११	मंगलवार	गुरु	,,	,,
फाल्गुन कृष्ण	३	बुधवार	नेपच्यून	,,	,,
,, ,,	१४	शनिवार	शुक्र	,,	,,
,, ,,	,,	,,	बु०	,,	,,
फाल्गुन शुक्ल	७	रविवार	मंगल	,,	,,
,, ,,	,,	,,	शनि	,,	,,
,, ,,	,,	,,	हर्शल	,,	,,
,, ,,	८	सोमवार	गुरु	,,	,,
चैत्र कृष्ण	२	बुधवार	नेपच्यून	,,	,,
,, ,,	११	शुक्रवार	शुक्र	,,	,,
,, ,,	१२	शनिवार	बुध	,,	,,
चैत्र शुक्ल	४	शनिवार	शनि	,,	,,
,, ,,	४	शनिवार	हर्शल	,,	,,
,, ,,	५	रविवार	मंगल	,,	,,
,, ,,	६	सोमवार	गुरु	,,	,,

भौमादि ग्रह युति (ग्रह युद्ध)

माघ	शुक्ल	६	गुरुवार	बुध शुक्र युतिः	(युद्ध)
फाल्गुन	कृष्ण	१	सोमवार	सूर्य शुक्र युति	,,
फाल्गुन	शुक्ल	७	रविवार	शनि मंगल युतिः	(युद्ध)
,,	,,	१४	रविवार	मंगल हर्शल ,,	,,

मंगल-शनि युति या युद्ध का परिणाम

इन तीन मासोंमें महत्त्वपूर्ण युतियोग फाल्गुन शु० ७ रविवार ता० २२ फरवरी १९४२ ई० को है। मंगल तथा शनिकी युति उस दिन होरही है। शनि मंगल यह दोनों ग्रह परस्पर अहिनकुल (सर्प-न्यौला) के समान परस्पर वज्र वैरी हैं। शनि काले रंगका मुख्य ग्रह है। मंगल लाल रंगका प्रधान ग्रह है। काला रंग मारधाड़ परद्रव्याप-हार आदि बातोंका द्योतक है। सम्पूर्ण पृथ्वीमें काले रंगको विनाशका सूचक माना गया है। शनि स्वभाव-तया काला है—काले रंगके स्वाभाविक गुण स्वभावतः शनिमें विद्यमान ही हैं—इसी कारण शनिको पाप-ग्रहोंमें सर्वोच्च स्थान दिया गया है। मंगल लाल रंगका है। लालरंग क्रोधका द्योतक है। युद्ध आदिका कारक लालरंग माना जाता है। रक्तपात, अपघात, युद्ध ये सब लाल रंगके धर्म हैं। इस बातको प्रायः सारा संसार मानता है। पापग्रहोंमें मंगलग्रहका स्थान दूसरा है; एवञ्च इस युद्ध (युति) का परिणाम सभी प्रकारसे अनिष्ट है। प्रायः इसका अनिष्ट प्रभाव दूसरी राशिमें युति होने तक रहता है। इस युतिका परिणाम राजाओंकी मृत्यु, देशमें रक्तपात-मारधाड़-दंगेफिसाद, असन्तोष, सामूहिक असहयोग, रोग, युद्ध, आकालिक मेघ, आंधी, तूफान और कभी २ भूकम्प भी होसकता है। विशेषतः तंगण (चीनीतुर्किस्तान और भारतकी सीमाका प्रदेश) आंध्र (तैलंग) उड़ीसा, काशी और बाल्हीक (काबुल) देश वासियोंको पीड़ा तथा

प्रजामें सन्ताप। अधिकतर मंगलके प्रभाव वाले देशों में अर्थात् शोण, नर्मदा, भीमरथीका पश्चिम प्रान्त, वेत्रवती (बेतवा) गोदावरी, वेणा, मन्दाकिनी, सिन्धु-नद इनके तटवर्ती जनता तथा सह्यपर्वत, विन्ध्याचल के समीपके लोग, इसी प्रकार चोल (कावेरीके समीप का प्रदेश) द्रविड़देश (कान्ची आदि) विदेह (मिथिला) आंध्र, अश्मक, कुन्तल (निजामराज्यका कुछ भाग) केरल (ट्रावन्कोर कोचीन आदि) देशके लोग तथा नागरिक लोग पीड़ित रहेंगे। किसान, पारेके व्यापारी, सुनार—आदि अग्निके पास बैठनेवाले शस्त्र धारण करने वाले, पहाड़की कन्दराओंमें रहने वाले मुनि आदि, कर्मकाण्ड-परायण कर्मठ लोग, राजवर्ग, बालक, दाम्भिक, पाखण्डी, झूठ बोलनेवाले, मिथ्याप्रचार करने वाले, पशुपालक, धूम्रपान करने वाले, चोर, धूर्त्त, वञ्चक, शठ, दीर्घद्वेषी, बहुत भोजन करने वाले, सेनापति, वयोवृद्ध, भूस्वामी और दास ये सब पीड़ित रहेंगे। खनिज पदार्थ ताम्बा लोहा पेट्रोल तैल आदि पर बहुत अनिष्टकर प्रभाव पड़ेगा।

आयरलेण्ड एशियामायनर यूरोपियन रशिया और बर्मा तथा देहली प्रान्तोंमें बहुत भारी राजनैतिक उलटफेर होंगे। बड़ी २ आपत्तियां आवेंगी। तात्पर्यतः रक्तपात अग्निकाण्ड मारधाड़ युद्ध और अनर्थ अधिक होंगे।

"श्रीस्वाध्याय" के गताङ्कमें चन्द्रमाके साथ भोमादि ग्रहोंके समागम या युतिका संक्षिप्त फल हम लिख चुके हैं। अब पाश्चात्य मतानुसार कुछ विशेष फल यहां लिखते हैं।

मंगल चन्द्र युतिका फल

इस योगमें लड़ाई, झगड़े, मारकाट, रक्तपात, अपघात, अग्नि प्रलय, रोगवृद्धि, प्रजामें असन्तोष, सामूहिक असहयोग, हड़ताल, सेनापति या जहाजी आफिसर पर महान् विपत्ति अथवा मृत्यु और पर-राष्ट्रिय उलझनें उत्पन्न हुआ करती हैं। इंगलैण्ड, डेन्मार्क, जर्मनी, पोलैण्ड, सीरिया, जापान आदि देशों पर इस युति का विशेष प्रभाव होता है।

बुध चन्द्र युतिका फल

इस योगमें शास्त्र विचारकोंको उत्साह, कला-कौशल, तत्त्वान्वेषण और नये-नये आविष्कारोंमें उन्नति तथा व्यापारिक सन्धियां या व्यावहारिक लिखा-पढ़ी अधिक होती हैं। भारतवर्ष, अफगानिस्तान, अल्बानिया, बलगेरिया, ग्रीस, मेक्सिको, आक्सफोर्ड, ब्रुसेल्स आदि पर इस युतिका विशेष प्रभाव होता है।

गुरु चन्द्र युतिका फल

इस योगमें भूमिकर (जमीन महसूल टैक्स आदि) देशके व्यापार और धान्यकी स्थिति उत्तम रहती है। देशमें शान्ति और धार्मिक प्रवृत्तिकी वृद्धि होती है। भारतवर्ष, अमेरिका, बेल्जियम, इजिप्ट, लण्डन, आर्मेनिया, मेलबोर्न आदि पर इसका प्रभाव अधिक होता है।

शुक्र चन्द्र युतिका फल

इस योगमें आनन्दोत्सवकी वृद्धि हो। साम्पत्तिक स्थिति, आरोग्य, उद्योग-धन्धा और आमोदप्रमोदके स्थानों (नाटक सिनेमा आदि) में भी उत्तम प्रगति हो। अरबस्थान, स्वीडन, अबीसीनिया आदि देशों पर इसका प्रभाव अधिक होता है।

शनि चन्द्र युतिका फल

श्रमजीवी (मजदूर वर्ग) भृतिकर्म (नौकरी) करने वाले, स्त्रियां और रसायनज्ञ लोगोंके लिए यह योग अनिष्ट होता है। धान्यनाश, व्यापार-व्यवसाममें गड़बड़ी, प्रजामें असन्तोष, रोगवृद्धि और प्रजा-पक्षके नेता या लोक निर्वाचित किसी व्यवस्थापिका सभाके सदस्यको पीड़ा होती है। जार्जिया, काकेशस, आर्किप्लेगो, सेण्टलुई, आयरलेण्ड,, ईरान, पोलेण्ड, एशिया मायनर और भारत पर इसका प्रभाव विशेष होता है।

हर्शल चन्द्र युतिका फल

नियम बनाने और व्यवस्था करनेवाली संस्थाओं (कौंसिल असेम्बली-म्युनिसिपल कमेटियां आदि) तथा राज्याधिकारियोंके लिए यह समय अनिष्ट रहता है। प्रजामें अप्रिय प्रसङ्ग उपस्थित होनेसे असन्तोषकी मात्रा बढ़ती है।

नेपच्यून चन्द्र युतिका फल

प्रजामें सन्तोष, व्यापार व्यवसाय नयेनये आविष्कार एवं कलाकौशलमें प्रगति। धार्मिक-संस्थाओंमें उन्नति होती है।

त्रैमासिक पर्व व्रतादि निर्णय



पौष	शुक्ल	१० रविवार	ता० २८	दिसम्बरको	अखिल भारतीय राष्ट्रिय महासभा (कांग्रेस) जन्मदिन।
,,	,,	११ सोमवार	ता० २९	,,	पुत्रदा ११ व्रत सबके लिये, बकरीद।
,,	,,	१२ मङ्गलवार	ता० ३०	,,	भौम प्रदोष व्रत।
,,	,,	१५ शुक्रवार	ता० २	जनवरीको	सत्यव्रत माघ स्नानारम्भ।
माघ	कृष्ण	४ मङ्गलवार	ता० ६	,,	संकष्ट ४ तिल ४ व्रत।
,,	,,	१० सोमवार	ता० १२	,,	लोढ़ीका त्यौहार पञ्जाबमें।
,,	,,	११ मंगलवार	ता० १३	,,	मकरसंक्रान्ति षट्तिला ११ व्रत सबके लिए।
,,	,,	१२ बुधवार	ता० १४	,,	प्रदोषव्रत संक्रांति पुण्यकाल।
,,	,,	३० शुक्रवार	ता० १६	,,	कुम्भ महापर्व प्रयागराज, मौनी अमावस।
माघ	शुक्ल	२ रविवार	ता० १८	,,	चन्द्रदर्शन
,,	,,	५ बुधवार	ता० २१	,,	वसन्त ५ श्री ५
,,	,,	७ शुक्रवार	ता० २३	,,	रथ ७ अचला ७
,,	,,	८ शनिवार	ता० २४	,,	भीष्भाष्टमी
,,	,,	११ बुधवार	ता० २८	,,	जया ११ व्रत सबके लिए
,,	,,	१२ गुरुवार	ता० २९	,,	प्रदोषव्रत भीष्म द्वादशी।
,,	,,	१४ शनिवार	ता० ३१	,,	सत्यव्रत
,,	,,	१५ रविवार	ता० १	फरवरीको	माघी १५ माघस्नान समाप्ति
फाल्गुन	कृष्ण	३ बुधवार	ता० ४	,,	श्रीगणेश ४ व्रत
,,	,,	३ ,,	ता० ४	,,	श्रीकाशी हिन्दू विश्व-विद्यालय स्थापना दिवस
,,	,,	७ रविवार	ता० ८	,,	श्रीसीता जन्म ८
,,	,,	९ सोमवार	ता० ९	,,	श्रीसमर्थ रामदास पुण्यदिन
,,	,,	११ बुधवार	ता० ११	,,	विजया ११ व्रत सबके लिए
,,	,,	१२ गुरुवार	ता० १२	,,	कुम्भ संक्रांति मु० ३० पुण्य० १६।६ पर्यन्त
,,	,,	१३ शुक्रवार	ता० १३	,,	श्रीमहाशिवरात्रि १४ व्रत प्रदोष व्रत
,,	,,	३० रविवार	ता० १५	,,	अमावस्या
फा०	शुक्ल	१ सोमवार	ता० १६	,,	चन्द्र दर्शन
,,	,,	४ गुरुवार	ता० १९	,,	श्री० स्व० गोखले पुण्यदिन
,,	,,	८ सोमवार	ता० २३	,,	होलाष्टकारम्भ
,,	,,	११ गुरुवार	ता० २६	,,	आमला ११ व्रत स्मार्त्तोंके लिए
,,	,,	१३ शनिवार	ता० २८	,,	शनि प्रदोष व्रत
,,	,,	१५ सोमवार	ता० २	मार्चको	सत्यव्रत होलिकादहन घ० २७-३७ उपरांत ग्रस्तास्त-[खग्रास चन्द्रग्रहण
चैत्र	कृष्ण	१ मंगलवार	ता० ३	मार्चको	धूलिवन्दन आम्रपुष्पप्राशन, श्वपच स्पर्श, होला १ मेला आनन्दपुर साहिब।

चैत्र कृष्ण	४ शुक्रवार	ता० ६	,,	श्रीगणेश ४ व्रत
,, ,,	७ सोमवार	ता० ९	,,	श्रीशीतला ७
,, ,,	११ शुक्रवार	ता० १३	,,	पापमोचनी ११ व्रत सबके लिए
,, ,,	१२ शनिवार	ता० १४	,,	शनिप्रदोषव्रत मीन सं० मु० ३० पुण्यकाल ८।३४ उ०
,, ,,	१४ रविवार	ता० १५	,,	चैत्र १४ मेला पृथूदक (पिहोवा)
,, ,,	३० सोमवार	ता० १६	,,	सोमवती अमावस्या
चैत्र शुक्ल	१ मंगलवार	ता० १७	,,	चान्द्रसँव्वत्सर शक १८६४ आरम्भ * नवरात्रारम्भ [तैलाभ्यङ्ग, घटस्थापन, वर्षफलश्रवण, श्रीमहर्षि गौतम जयन्ती
चैत्र शुक्ल	२ बुधवार	ता० १८	मार्चको	चन्द्रदर्शन
,, ,,	३ गुरुवार	ता० १९	,,	गणगौरी पूजन मत्स्यजयन्ती
,, ,,	८ बुधवार	ता० २५	,,	श्रीदुर्गा ८ अशोक कलिका प्राशन, मेला श्रीमनसादेवी
,, ,,	९ गुरुवार	ता० २६	,,	श्रीराम ९ व्रत

महावरुणीपर्व—चैत्र कृष्ण १२ शनिवारको अर्धरात्रोत्तर प्रातः (ता० १५ मार्च १९४२ को प्रातः) ५॥ बजेसे सूर्योदय पर्यन्त एक घण्टेके आसन्न महावरुणी पर्व योग है। इस योगमें गङ्गास्नानका विशेष माहात्म्य है।

सङ्कष्ट चतुर्थीका चन्द्रोदय

सं० १९९८ माघ कृष्ण ४ मङ्गलवार ता० ६ जनवरी १९४२ ई० को सङ्कष्ट चतुर्थीका व्रत होगा। इस दिन प्रायः भारतके सभी आस्तिक सद्‌गृहस्थ व्रत रखते हैं और रात्रिके समय भगवान् गणेशका पूजन करके चन्द्रोदय होने पर चन्द्रमाको अर्घ्य प्रदान कर व्रतोपारण करते हैं। चन्द्रोदय देश भेदसे भिन्न-भिन्न समयमें होता है और भारतीय पञ्चाङ्गोंमें सभी मुख्य नगरोंका सूक्ष्म चन्द्रोदय काल नहीं लगाया जाता। प्रत्येक स्थानका लगाना है भी कठिन। एक स्थानीय चन्द्रोदयास्तके सूक्ष्म समय निकालनेका गणित करनेमें ही पर्याप्त परिश्रम पड़ता है तो सारे भारतकी कौन कहे। और दिनका-चन्द्रोदयास्त हो चाहे न हो परन्तु इस सङ्कष्टचतुर्थीके चन्द्रोदयकी तो भारत भरके सद्‌गृहस्थोंको परम-आवश्यकता रहती है। उन्हीं लोगोंके सुविधार्थ हम इस दिन (माघ कृष्ण ४ मङ्गलवारका) भारतके कुछ प्रधान-प्रधान नगरोंका अकारादि क्रमसे चन्द्रोदय काल (स्टेण्डर्ड टाइम) आगे देते हैं। इस व्रतकी कथा और इसका वैज्ञानिक रहस्य हम "श्रीस्वाध्याय" के किसी आगामी अङ्कमें देंगे। —सम्पादक

---

*विक्रम सम्वत् वास्तवमें कार्तिक शु० १ से आरम्भ होता है। महाराजा विक्रमादित्यका राज्याभिषेक कार्तिक शु० १ को ही हुआ था। इसी कारण मालव एवं गुर्जर-प्रान्तमें कई कार्तिकादि पंचाङ्ग प्रचलित हैं। चैत्र शु० १ से शालिवाहन शकारम्भ होता है। सुविधार्थ शकारम्भके साथ ही (६ मास पूर्व) विक्रमका नया सम्वत् लिखनेकी भी लोकमें परिपाटी पड़ गई है। —सम्पादक

सङ्कष्ट चतुर्थीका चन्द्रोदय

नगर नाम	चन्द्रोदय स्टेण्डर्ड टाइम घं०	मि०	नगर नाम	चन्द्रोदय स्टेण्डर्ड टाइम घं०	मि०
अमृतसर	९	१६	नागपुर	९	७
अजमेर	९	१८	नासिक	९	३०
अयोध्या	८	५१	पूना	९	३२
अहमदाबाद	९	४३	पैठण	९	२४
आगरा	९	१५	प्रयाग	८	५४
उज्जैन	९	१९	बम्बई	९	३६
उदयपुर (मेवाड़)	९	२६	बड़ौदा	९	३१
औरङ्गाबाद	९	२५	बनारस	८	५२
कराची	९	५४	बागलकोट	९	२५
कलकत्ता	८	३०	बंगलौर	९	२१
कानपुर	८	५८	भुसावल	९	२२
कुरुक्षेत्र	९	१४	मद्रास	९	१०
कोल्हापुर	९	३०	मथुरा	९	८
खण्डवा	९	१८	मैसूर	९	२४
गया	८	४२	यवतमाल	९	१३
ग्वालियर	९	८	रत्नागिरी	९	३४
जयपुर	९	१६	रामेश्वर	९	१८
जब्बलपुर	९	३	लाहौर	९	१७
ढाका	८	२१	वर्धा	९	९
तंजावर	९	१६	सोलन शिमला	९	१३
दिल्ली	९	९	श्रीनगर काश्मीर	९	१५
दरभङ्गा	८	३७	हरिद्वार	९	११
द्वारिका	९	४८	हैदराबाद दक्षिण	९	१४

त्रैमासिक मुहूर्तादि विचार



सं० १९९८ पौष शु० १० रविवार ता० २८ दिसम्बर सन् १९४१ ई० से चैत्र शुक्ल ६ गुरुवार ता० २६ मार्च सन् १९४२ ई० तक विवाह, उपनयन, द्विरागमन, वधूप्रवेश, गर्भाधान, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त, सूतिकास्नान, रोगीस्नान, चूड़ाकरण (मुण्डन), विद्यारम्भ, अक्षरारम्भादिके सापवाद शुद्ध मुहूर्त्त ।

शुक्रास्त

माघ शुक्ल १४ शनिवार ता० ३१ जनवरी सन् १९४२ से फाल्गुन कृष्ण ४ गुरुवार ता० ५ फरवरी सन् १९४२ ई० तक शुक्र पश्चिममें अस्त रहेगा। शुक्रास्त समय और बाल्यवृद्धत्वमें विवाहादि शुभकर्म नहीं होते। अस्तोदयसे ३ दिन पूर्वापर बाल्यवृद्धत्व दोष माना जाता है।

शुभविवाह मुहूर्त्त

माघ कृ० १२ बुधवार ता० १४ जनवरीको मूला नक्षत्र रेखा १० लग्न कन्या स्टेण्डर्ड टाइम रात्रिके घं० १०-१८ से १२-३८ पर्यंत।

माघ शुक्ल ५ बुधवार ता० २१ जनवरीको उ० भा० नक्षत्र रेखा १० लग्न कन्या स्टे० टा० रात्रिके घं० ६-५० से १२-१० पर्यन्त वा गोधूली लग्न।

माघ शु० ६ गुरुवार ता० २२ जनवरीको उ० भा० नक्षत्र रेखा ६ लग्न वृषभ स्टे० टा० दिनमें घं० १२-५६ से १४-५० पर्यन्त और रेवती नक्षत्रमें रेखा ६ लग्न कन्या स्टे० टा० रात्रिमें घं० ६-४६ से १२-६ पर्यन्त वा गोधूली लग्न।

माघ शु० ७ शुक्रवार ता० २३ जनवरीको रेवती नक्षत्र रेखा १० लग्न वृ० स्टे० टा० दिनमें घं० १२-५२ से १४-४६ पर्यन्त।

माघ शु० ११ बुधवार ता० २८ जनवरीको मृ० न० रे० १० लग्न मीन स्टे० टा० दिनमें घं० ६-३५ से १०-५७ पर्यन्त वा गोधूली।

फाल्गुन कृ० १३ शुक्रवार ता० १३ फरवरी उ० षा० नक्षत्र रेखा १० लग्न मीन स्टे० टा० दिनमें ८-३४ से ६-५६ पर्यन्त।

फा० शु० २ मंगलवार ता० १७ फरवरी उ० भा० रे० १० लग्न मकर स्टे० टा० अर्धरात्रोत्तर घं० ५-१० से ६-५२ पर्यन्त।

फा० शु० ३ बुधवार ता० १८ फरवरी उ० भा० रे० १० लग्न वृष स्टे० टा० दिनमें घं० ११-१० से १-४ पर्यन्त।

फाल्गुन शु० ४ गुरुवार ता० १६ फरवरी रे० रे० १० लग्न कन्या स्टे० टा० रात्रिमें घं० ७-५६ से १०-१६ पर्यन्त।

फाल्गुन शु० ६ मङ्गलवार ता० २४ फरवरी रोहिणी रेखा ७ मृग रेखा ८ अत्यावश्यकतामें लग्न मीन स्टे० टा० दिनमें घं० ७-५० से ६-१२ पर्यन्त। लग्न गोधूली और कन्या लग्न स्टे० टा० रात्रिमें घं० ७-३६ से ६-५६ पर्यन्त।

फाल्गुन शु० १० बुधवार ता० २५ फरवरी मृ० रे० ६ लग्न मीन स्टे० टा० दिनमें ७-४६ से ६-८ पर्यन्त।

चैत्र कृ० ६ रविवार ता० ८ मार्च अनुराधा रेखा ६ अत्यावश्यकता में लग्न कन्या स्टे० टा० रात्रिमें घं० ६-४७ से ६-७ पर्यन्त।

चैत्र कृ० ७ सोमवार ता० ६ मार्च अनुराधा रे० ६ अत्यावश्यकतामें लग्न मीन स्टे० टा० दिनमें घं० ६-५७ से ८-१६ पर्यन्त।

चै० कृ० ८ मङ्गलवार ता० १० मार्च मूला रेखा

८ लग्न कन्या स्टै० टा० रात्रिमें घं० ६-३६ से ८-५६ पर्यन्त।

सूचना—ता० २४ २५ फरवरी के दोनों विवाह मुहूर्त्त होलाष्टकमें होनेसे पंजाब प्रान्तके लिए नहीं है।

उपनयन मुहूर्त

माघ शु० २ रविवार	ता० १८	जनवरी	ल० ११-१२
,, ,, ५ बुधवार	ता० २१	,,	ल० १०-११
,, ,, ११ बुधवार	ता० २८	,,	ल० १०-११
फाल्गुन शु० ५ शुक्रवार	ता० २०	फरवरी	ल० ११-१२
,, ,, १० बुधवार	ता० २५	,,	ल० ११-१२
,, ,, ११ गुरुवार	ता० २६	,,	ल० ११-१२
,, ,, १२ शुक्रवार	ता० २७	,,	ल० ११-१२
चैत्र शु० २ बुधवार	ता० १८	मार्च	ल० चिं०
,, ,, ३ गुरुवार	ता० १६	,,	ल० चिं०

अन्य आवश्यक मुहूर्त

पौष शुक्ल ११ सोमवार ता० २६ दिसम्बरको धान्यछेदन, शस्त्रघटन, क्रयविक्रय मुहूर्त।

पौष शु० १३ बुधवार ता० ३१ दिसम्बरको जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, भूम्युपवेशन, कटिसूत्र बन्धन, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, सूतिका पथ्यौषधि सेवन मुहूर्त।

माघ कृष्ण १ रविवार ता० ४ जनवरीको रवि-पुष्य योग, यन्त्र-मन्त्र औषधिसेवन तथा निर्माण मुहूर्त, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, नृप-दर्शन मुहूर्त।

माघ कृष्ण ३ सोमवार ता० ५ जनवरीको धान्य-छेदन, धान्यसंग्रह, शस्त्र निर्माण मुहूर्त।

माघ कृष्ण ५ बुधवार ता० ७ जनवरीको मैत्री-करण, शस्त्र निर्माण, कर्णमर्दन मुहूर्त।

माघ कृष्ण ६ गुरुवार ता० ८ जनवरीको जात-कर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त मुहूर्त।

माघ कृष्ण ७ शुक्रवार ता० ९ जनवरीको गर्भा-धान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, अन्न-प्राशन, निष्क्रमण मुहूर्त।

माघ कृष्ण १० सोमवार ता० १२ जनवरीको विक्रय, शस्त्रनिर्माण, खड्गादिधारण, द्रव्यप्रयोग-शस्यरोपण मुहूर्त।

माघ कृ० १२ बुधवार ता० १४ जनवरीको गौक्रयविक्रय, खड्गादिधारण, नृत्यकलारम्भ, धान्यच्छेदन, कर्णमर्दन मुहूर्त।

माघ शु० २ रविवार ता० १८ जनवरीको गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, दीक्षाग्रहण, विद्यारम्भ, जलाशयारामसुर प्रतिष्ठा मुहूर्त।

माघ शु० ५ बुधवार ता० २१ फरवरीको अक्षरा-रम्भ, विद्यारम्भ, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, नूतनगृहप्रवेश मुहूर्त।

माघ शु० ६ गुरुवार ता० २२ जनवरीको सूती-स्नान, जातकर्म, नामकरण, नूतन वस्त्र भूषणादि-धारण, नूतनगृहप्रवेश, लतावृक्षादिरोपण मुहूर्त।

माघ शु० ७ शुक्रवार ता० २३ जनवरीको जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त, निष्क्रमण, चूड़ाकरण, कर्णवेध, और नूतन गृह प्रवेश मुहूर्त।

माघ शु० ११ मङ्गलवार ता० २७ जनवरीको पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, सूतीस्नान मुहूर्त।

माघ शु० ११ बुधवार ता० २८ जनवरीको जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त, निष्क्रमण, भैषज्य मुहूर्त।

माघ शु० १३ शुक्रवार ता० ३० जनवरीको जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त संस्कार मुहूर्त।

फाल्गुन कृ० ११ बुधवार ता० ११ फरवरीको विद्यारम्भ, अक्षरारम्भ, वधूप्रवेश, पुरातन गृहप्रवेश, शस्त्रघटन, नौकाघटन, धान्य छेदन मुहूर्त।

फाल्गुन कृ० १३ शुक्रवार ता० १३ फरवरीको व्यतीपातसे पहले १०॥ बजे तक जातकर्म, नामकरण,

द्विरागमन, वधूप्रवेश, गृहप्रवेश, जलाशयोद्यान देव प्रतिष्ठा, प्रयोगादि आरम्भ मुहूर्त ।

फाल्गुन शु० १ सोमवार ता० १६ फरवरीको जातकर्म, नामकरण, चूड़ाकरण, गर्भाधान, भैषज्य, पुरातन गृहप्रवेश, लतावृक्षाद्यारोपण मुहूर्त ।

फाल्गुन शु० ३ बुधवार ता० १८ फरवरीको जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त, सूतिका पथ्य-सेवन, नृपदर्शन, द्विरागमन, दीक्षाग्रहण, अग्न्याधान, वधूप्रवेश, कूपजलाशयादिरम्भ मुहूर्त ।

फाल्गुन शु० ४ गुरुवार ता० १६ फरवरीको भद्राके अनन्तर पञ्चमीमें सूतीस्नान, अन्नप्राशन, नवान्न-भोजन, औषधिसेवन, द्विरागमन मुहूर्त ।

फाल्गुन शु० ५ शुक्रवार ता० २० फरवरीको द्विरागमन, वधूप्रवेश, चूड़ाकरण, पुरातन गृहप्रवेश, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ, कर्णवेध, अन्नप्राशन, जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त संस्कार मुहूर्त ।

फाल्गुन शु० ८ सोमवार ता० २३ फरवरीको रोगविमुक्त स्नान मुहूर्त ।

फाल्गुन शु० १० बुधवार ता० २५ फरवरीको जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त, निष्क्रमण, भूम्युपवेशन, अन्नप्राशन, कर्णवेध, विद्यारम्भ, अग्न्याधान, द्विरागमन, भैषज्य, नूतनवस्त्रभूषणादि-धारण मुहूर्त ।

फाल्गुन शु० १२ शुक्रवार ता० २७ फरवरीको जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, अक्षरारम्भ विद्यारम्भ, कूपादिजलाशय देव प्रतिष्ठा मुहूर्त ।

चैत्र कृ० ४ शुक्रवार ता० ६ मार्चको रोगमुक्त स्नान मुहूर्त ।

चैत्र कृ० ७ सोमवार ता० ९ मार्चको द्विरागमन, जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन मुहूर्त ।

चैत्र कृ० १० गुरुवार ता० १२ मार्चको भद्राके अनन्तर द्विरागमन, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, प्रसूतीस्नान मुहूर्त ।

चैत्र कृ० ११ शुक्रवार ता० १३ मार्चको जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त, भैषज्य, जलाशयारम्भ, नृपदर्शन मुहूर्त ।

चैत्र शु० २ बुधवार ता० १८ मार्चको जातकर्म, नामकरण, पुंसवन, सीमन्त, गर्भाधान, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ मुहूर्त ।

चैत्र शु० ३ गुरुवार ता० १९ मार्चको जातकर्म, नामकरण, सूतीस्नान, गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भ मुहूर्त ।

छुट्टियां हाईकोर्ट पञ्जाब और युक्तप्रान्त

ईद-उल्-जुहा (बकरीद) ता० २९ दिसम्बर सोमवार
न्यू ईयर्स डे ता० १ जनवरी १९४२ ई० गुरुवार

लोड़ी	....	ता० १२	जनवरी	सोमवार
मकर संक्रान्ति	....	„ १३	„	मंगलवार
मौनी अमावस	....	„ १६	„	शुक्रवार
बसन्त पञ्चमी	....	„ २१	„	बुधवार
मुहर्रम		ता० २६, २७, २८	„	सोम मङ्गल बुधवार
महा शिवरात्रि	....	ता० १३	फरवरी	शुक्रवार
होली चन्द्रग्रहण	....	„ २	मार्च	सोमवार
होला	....	„ ३	„	मंगलवार
चहलम करबला	....	„ ७	„	शनिवार
आठोंका मेला	....	„ ९-१०	„	सोम मंगल-वार
सोमवती अमावस		„ १६	„	सोमवार
आखरी चहार शम्बा		„ १८	„	बुधवार
दुर्गाष्टमी	....	„ २५	„	„
श्रीराम नवमी	....	„ २६	„	गुरुवार

मकर संक्रान्ति



सं० १९९८ शकः १८६३ माघ कृष्ण ११ मंगलवार ता० १३ (संक्रमणकालमें अर्धरात्रोत्तर १४) जनवरी सन् १९४२ ई० को सूर्योदयात्-इष्ट घट्यादि ५२।३२ पर द्वादशी तिथि, मंगलवार, ज्येष्ठानक्षत्र, वृद्धियोग, तैतिल करण और वृश्चिक लग्नमें सूर्य मकर राशिमें प्रविष्ट होंगे। यहीं से उत्तरायण और शिशिर ऋतु (निरयन मानसे) तथा देवताओंका दिन और दैत्योंकी रात्रि आरम्भ होती है।

पुण्यकाल विचार

धर्मसिन्धुके "मकरे परे चत्वारिंशन्नाड्यः पुण्यकालः" इस वचनसे दूसरे दिन अर्थात् द्वादशी बुधवार ता० १४ जनवरीको यद्यपि सारा दिन सूर्यास्त पर्यन्त मकरसंक्रमणका पुण्यकाल रहेगा; तथापि मध्याह्न तक विशेष उत्तम है और मध्याहनके अनन्तर उत्तरोत्तर पुण्यकाल गौण होगा। मकरसंक्रान्ति और षट्तिला एकादशीको तिल मिश्रित जलसे स्नान, शरीरमें तिलोंका उद्वर्त्तन, तिल हवन, तिलमिश्रित जलपान, तिलभक्षण और तिलदान करनेका विशेष महात्म्य है—

तिलस्नायी तिलोद्वर्त्ती तिलहोमी तिलोदकी।
तिलभुक् तिलदाता च षट्तिला पाप नाशिनी॥

इस संक्रान्तिके वाहनादि निम्न लिखित हैं—

१ खर वाहन (गर्दभ), २ मेष उपवाहन, ३ मुहूर्त्ती १५, ४ श्वेत वस्त्र, ५ विचित्र कंचुकी, ६ मृत्तिका लेपन, ७ केतकी पुष्प, ८ मणि भूषण, ९ कांस्य पात्र, १० पक्वान्न भोजन, ११ दण्डायुध, १२ वारनाम महोदरी, १३ नक्षत्रनाम राक्षसी, १४ दक्षिणमें मुख, १५ पश्चिममें गमन, १६ वायव्यकोणमें दृष्टि, १७ रक्तफल, १८ पक्षि जाति, १९ तरुणावस्था, २० सुप्त स्थिति, २१ नर्मदा स्नान, २२ भोजनपात्र ताम्र, २३ गोधूम-अक्षत, २४ दुग्धपान, २५ तस्कर सुखदा, २६ माहेन्द्र मण्डल, २७ कस्तूरी गन्ध, २८ हास्य पन्थ, २९ वृश्चिक राशि।

संक्रान्तिका फल

मास-पक्ष फल—दुष्ट लोगोंको सुख, श्वेतवस्त्र व श्वेतधातुका नाश, धान्यादिकोंके भावमें कुछ तेजी।

तिथि-वार फल—अग्निभय, वायुप्रकोप, लवण तिल तैल घृत गुड़ादि स्निग्ध पदार्थ और गेहूं अलसी धान्य कपूर कस्तूरी चन्दनादि सुगन्धित पदार्थोंका भाव तेज। विवाह यात्रा व्रत यज्ञादि शुभ कार्य करनेवालोंको सन्ताप।

नक्षत्र-योग-करण फल—शस्त्रास्त्र बनानेवाले और अग्निसे उपजीविका करनेवालोंको सन्ताप। सुवृष्टि, सुभिक्ष। राजा-प्रजामें सौख्य, धान्योत्पत्ति उत्तम।

काल, लग्न और मण्डलादिका फल--गो महिष्यादि पशु पालकोंको कष्ट। धान्यादिके भाव महंगे, किसान, जमींदार और साधु लोगोंको पीड़ा। रोग भय, चौर भय, अनावृष्टि, युद्धादि उपद्रव। गेहूं, अलसी, मसूरादि धान्य तथा घृतगुड़ादि रस पदार्थ महंगे हों।

मुख-गमन-दृष्टि दिशा फल—दक्षिण पश्चिम और उत्तर दिशामें अनिष्टकर घटनाएँ अधिक हों, राजाओंको युद्ध चिन्ता और प्रजामें उपद्रवोंकी वृद्धि हो। पूर्व देशमें भी अशान्ति और युद्धादि उपद्रवोंका भय रहे।

वाहनादि फल—गर्दभ वाहन होनेके कारण अशान्तिकी. बाढ़से संसारमें हाहाकार मचे, नाना प्रकारके क्लेश और भूतादि उपद्रवोंसे भी प्रजा कष्ट पावे। गर्दभादि पशुओंका नाश और पशु पालन करनेवालोंको पीड़ा, कम्बलादि ऊनीवस्त्र और घृतादि रस पदार्थ बहुत महंगे हों। संसारमें क्रोधाग्निकी वृद्धि हो—

गर्दभोवाहनं यत्र क्रोधो भवति दारुणम्।
हाहाभूतं जगत्सर्वं विशेषे दक्षिणे भवेत्॥

वस्त्र-कंचुकी,लेपनादि फल—कपासकी खेतीमें हानि हो, श्वेतवस्त्र, चान्दी, रुई आदि सब श्वेत पदार्थ और रंगीन वस्त्र तथा रेशमी वस्त्रोंका भाव बहुत तेज हो।

लेपन पात्रादि फल—ब्राह्मण वर्ग और मृत्तिकासे उपजीविका करनेवालोंको पीड़ा मणि हीरे जवाहर मोती आदि अप्राप्त हों, कांस्य पारद लोहादि धातुओं का नाश हो।

भक्ष्य-आयुधादि फल—गुड़ शर्करा और घृत तैलादि रस पदार्थ तेज, राजवर्गमें पीड़ा और असन्तोष, दण्डधारी सन्यासी लोग, तरुण स्त्रियां और पशुपक्षियोंको संकटका सामना करना पड़े।

स्थिति तथा मुहूर्त फल—अग्नि, वायु, चौर, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, युद्ध, महामारी इत्यादिके उपद्रव संसारमें सर्वत्र हों। धान्य रस पदार्थादिका भाव महंगा और प्रजामें अशान्ति एवं भयका साम्राज्य रहे।

इस संक्रमण कालीन ग्रहस्थितिसे ज्ञात होता है कि प्रजामें यत्र-तत्र संघर्ष छिड़ा रहेगा। राजा प्रजा का विरोध उग्ररूप धारण करेगा। कृषकों और श्रमजीवियोंकी स्थितिमें सुधार न होनेसे उनमें क्रान्तिकी भावना जागृत होगी। कई प्रजा पक्षके लोगोंको कृष्ण मन्दिर (कारावास) यात्रा करनी पड़ेगी। संसार आर्थिक संकटसे पीड़ित रहेगा। धातु द्रव्यकी बहुत न्यूनता होगी। भारतीय अन्न राशि एवं खाद्य पदार्थ का बहुतसा भाग द्वीपान्तरके युद्ध तथा दुर्भिक्ष पूर्त्तिमें बाहर चला जावेगा। स्त्रियों और बालकोंमें रोग वृद्धि होगी। अल्प वयस्क स्त्रियां प्रसूति रोगसे कालके गालमें अधिक जावेंगी।

—सम्पादक

महाशिवरात्रि

[लेखक—विद्याभूषण पं० श्यामशरणजी शास्त्री]

—:✻✻✻✻✻:—

फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी भृगुवार ता० १३ फरवरी सन् १९४२ ई० को शिवरात्रि है। यह दिन मध्यरात्रिमें शिवजीका लिंग रूप से आविर्भूत होने का है। अतएव जिस दिन मध्यरात्रिके समय चतुर्दशी हो उसी दिन शिवरात्रि व्रत करना चाहिये। इस दिन स्नान, दान, उपवास, शिवार्चन आदि करनेसे परम पुण्य प्राप्त होता है। यह बात पुराणोंमें तथा धर्म्म शास्त्रके सब ग्रन्थोंमें प्रसिद्ध है। शौनक संहितामें कहा है कि—

शिवरात्रिव्रतं नाम सर्वपापप्रणाशनम्।
आचाण्डालमनुष्याणां भुक्तिमुक्तिप्रदायकम्॥

शिवरात्रि नामका व्रत सब पापोंको नष्ट करने वाला है। तथा चाण्डाल पर्यन्त निकृष्ट योनिके मनुष्यों तकको भी भोग और मोक्ष देने वाला है। स्कन्द पुराणमें कहा है कि—

मम भक्तस्तु यो देवि ! शिवरात्रिमुपोषितः।
गणत्वमक्षयं दिव्यमक्षयं शिवशासनम्॥
सर्वान् भुक्त्वा महाभोगांस्ततो मोक्षमवाप्नुयात्॥

अर्थात् हे देवि ! जो मेरा भक्त शिवरात्रिमें उपवास करता है, वह शिवजीका अक्षयगण होता है और अक्षय दिव्य लोकको प्राप्त होता है तथा सब प्रकारके महा वैभवोंको भोगकर मोक्षको प्राप्त होता है। इस व्रतको प्रतिवर्ष करना कहा है—

वर्षे वर्षे महादेवि ! नरो नारी पतिव्रता।
शिवरात्रौ महादेवं नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्॥

हे महादेवि ! पतिव्रता नारी तथा पुरुषोंको प्रति वर्ष शिवरात्रिके दिन भक्ति पूर्वक श्रीमहादेवका पूजन करना चाहिये। इस व्रतके दिन विष्णुस्वामी, मध्व, निम्बार्क, तथा रामानुज आदि वैष्णव सम्प्रदायके कुछ अनन्य भक्त एकादशीके समान उपवास नहीं करते हैं; प्रत्युत श्रीशिवका पूजन भजन अवश्य

करते हैं। वे दुराग्रहवश शिवकी निन्दा व शिवसे ईर्षा नहीं करते। अतः सर्वसाधारण स्मार्त्त पुरुषोंको तो यह व्रत अवश्य करना चाहिये।

रुद्र सम्प्रदाय

श्री वल्लभ सम्प्रदाय के बुद्धिमान् वैष्णव तो श्री शिवके विरुद्ध कुछ भी नहीं बोलते। क्योंकि उनका सम्प्रदाय ही 'रुद्र सम्प्रदाय' है। रुद्र (शिव) उसके प्रथम आचार्य हैं। प्राचीन ग्रन्थोंको देखनेपर यह सिद्ध होता है कि श्रीशिवने विष्णुभक्तिका प्रचार किया है और विष्णुने शिव-भक्तिका प्रचार किया है। इसी लिये महादेवजीका भागवत (भगवद्भक्त) नाम पड़ा है, तथा शिवकीर्तिवर्धन विष्णुका नाम हुआ है।

श्रीमद्वल्लभाचार्य जी अपने बालबोध नामक ग्रन्थमें लिखते हैं कि—

अतः शिवश्च विष्णुश्च जगतो हितकारकौ।
वस्तुनः स्थितिसंहार कार्यं शास्त्र प्रवर्तकौ॥

अर्थात् शिव और विष्णु दोनों जगतका हित करने वाले हैं। ये शास्त्रके प्रवर्तक तथा वस्तुमात्रकी स्थिति और संहारका कार्य करने वाले हैं। और आगे कहा है कि-ये दोनों परब्रह्म हैं, इनका निर्दोषत्व और गुण पूर्णत्व उनके शास्त्रोंमें निरूपित है।

भोगमोक्षफले दातुं शक्तौ द्वावपि यद्यपि।
भोगः शिवेन मोक्षस्तु विष्णुनेति विनिश्चयः॥

यद्यपि भोग और मोक्ष रूपी फलको देनेमें दोनों समर्थ हैं तथापि शिव रूपसे भोग और विष्णुरूपसे मोक्ष देनेका उन्होंने निश्चय किया है।

वैष्णवोंके प्रमाण ग्रन्थ

वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्याससूत्राणि चैव हि।
समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम्॥
अविरुद्धं तु यत्त्वस्य प्रमाणं तच्च नान्यथा॥ इत्यादि॥

वेद (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्) श्रीकृष्ण वाक्य (श्रीमद्भगवद्गीता) व्यास सूत्र (उत्तर मीमांसा) व्यासकी समाधि भाषा (श्रीमद्भागवत) ये चार प्रकारके प्रमाण ग्रंथ हैं। इन चारोंसे अविरुद्ध जो कुछ हो वह प्रमाण है, इनके अतिरिक्त प्रमाण माननीय नहीं हो सकते। इन चारों प्रमाणोंमें पहिला प्रमाण जो वेद है—उसमें शिवकी निन्दा व शिव द्वेष है ही नहीं। इतना ही नहीं किन्तु सब वेदों में 'रुद्राध्याय' नामक मन्त्रोंकी बड़ी संख्या श्रीशिवजी के स्तवनकी मिलती है। गीतामें भी कहा है कि— "रुद्राणां शंकरश्चास्मि" रुद्रोंमें शंकर मैं हूँ। व्यास सूत्रोंमें तो अद्वैत सिद्धान्त दिखाया है कि "अंशो नानाव्यपदेशात्"। और श्रीमद्भागवतका प्रथम स्कन्द २ अ० २३ श्लोक।

सत्त्वं रजस्तम इति प्रकृतेर्गुणास्तैर्युक्तः
परः पुरुष एक इहास्य धत्ते।
स्थित्यादयो हरिविरिंचि हरेतिसंज्ञाः
श्रेयांसि तत्र खलु सत्त्वतनोर्नृणां स्युः॥

सत्त्व रज और तम ये प्रकृतिके गुण हैं, उन गुणोंसे युक्त पर पुरुष एक है। वह सृष्टिकी स्थिति, उत्पत्ति और लय करनेके लिए हरि, ब्रह्मा और शिव ऐसे नामोंको धारण करता है। इनमें सत्त्वगुणयुक्त शरीरधारी हरि हैं। इनसे मनुष्योंको विशेष श्रेय (मोक्ष) मिलता है।

श्रीकालिका पुराणके ११वें अध्यायमें विष्णुने शिवजीसे कहा है कि—

न ब्रह्मा भवतो भिन्नो न शंभुर्ब्राह्मणस्तथा।
न चाहं युवयोर्भिन्नो ह्यभिन्नत्वं सनातनम्॥

इत्यादि।

ब्रह्मा आपसे भिन्न नहीं है और ब्रह्मासे आप भिन्न नहीं हैं तथा आप दोनोंसे मैं भिन्न नहीं हूँ।

इस लेखका तात्पर्य यह है कि सर्व सनातनी मनुष्य मात्रको शिवार्चन करनेसे सर्व सुख प्राप्त हो सकते हैं।

वेद, गीता, व्याससूत्र और भागवत ये चार वैष्णवोंके मुख्य प्रमाण हैं, इन सबमें शिवको ईश्वर-कोटिमें गिना है। ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये एक ही परमात्माकी तीन मूर्तियां हैं।

राष्ट्रिय पर्व होली

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक "श्रीस्वाध्याय"]

आज सभ्य कहलाने वाला संसार नररक्तसे होली खेल रहा है। वहां सर्वसाधारण जनताके घरोंसे लेकर बड़े २ राज-प्रासादों तककी होली जल रही है। इस संहारकारिणी युद्धाग्निकी लपटोंसे सारा संसार भयत्रस्त हो रहा है। यह युद्ध-रूपी होलिकाग्नि पश्चिमसे आरम्भ होकर धीरे २ पूर्वकी ओर बढ़ती जा रही है और अब भारत तक भी इसकी गरमी पहुँचने लगी है। ऐसे सङ्कटापन्न समयमें अन्याय एवं अत्याचारका अन्त और मनुष्य-मात्रके साथ भ्रातृभाव या विश्व-प्रेमका उपदेश देने वाली होली का पर्व (त्यौहार) फाल्गुन शु० १५ सोमवार ता० २ मार्च १९४२ ई० को आरहा है। हमारे जितने भी पर्व या त्यौहार हैं, वे सब महत्त्वपूर्ण सुन्दर शिक्षाप्रद उपदेशोंसे भरे पड़े हैं। इन्हींमें हमारे उत्थान का अपितु समस्त संसारके उत्थानका बीजमंत्र निहित है।

होलीके दिन वर्षभरके वैमनस्य राग-द्वेष ईर्षादि को मिटा कर या इनकी (काम क्रोध शत्रुत्व अहंकार आदि दुर्गुणोंकी)होली जलाकर सबके साथ भ्रातृ-भाव से मिल आनन्दोत्सव मनाया जाता है। यदि किन्हीं दो पक्षों या दो व्यक्तियोंमें कारणवशात् किसी प्रकार का वैमनस्य होगया हो तो वह भी आज दोनों ओरसे भुलाकर मित्रतामें परिणत होजाता है। जहां—

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥"

का उच्चादर्श सामने हो और प्राणिमात्रके लिए समान रूपसे सद्भावना हो वहां कभी किसीसे शत्रुत्व हो ही नहीं सकता। इस महान् आदर्शको भूल कर ही संसार आज सङ्कटग्रस्त हो रहा है। हम स्वयं ही अपने स्फूर्त्तिदायक इन पवित्र पर्वोंके वास्तविक स्वरूपोंको बिल्कुल भुला कर पददलित हो रहे हैं। अज्ञानवश आपसमें भाई-भाई ही लड़ कर अपना सर्वनाश कर रहे हैं, तब दूसरोंका कल्याण कैसे हो?

होलीके दूसरे दिन चैत्र कृष्ण १ को हमारे यहां श्वपच या हरिजन भाईसे गले मिलनेका विधान है। भारतके प्रत्येक पञ्चाङ्गों (तिथिपत्रों) में इस दिन "श्वपच स्पर्शनम्" लिखा रहता है। कितना उच्च-आदर्श है यह। इस दिन अस्पृश्य (हरिजन) भाइयोंको गले लगा कर हम यह सिद्ध कर देते हैं कि यह हमारा ही एक अङ्ग है। इनके सुख दुःखमें हम समान रूपसे साथी हैं। यह है— अस्पृश्यभाइयोंके लिए होलीके पर्व पर हमारा आदर्श। वास्तवमें यह (होली) शूद्र-प्रधान त्यौहार है। जिस प्रकार उपाकर्म या श्रावणी ब्राह्मण-प्रधान पर्व है; उस दिन राष्ट्रके समस्त ब्राह्मण एकत्र होकर राष्ट्र-कल्याणके लिए ब्रह्म बल (तेज) वृद्धिका अनुष्ठान करते हैं और शेष क्षत्रियादि तीनों वर्ण इसमें पूर्ण सहयोग देते हैं। विजयादशमीको राष्ट्ररक्षार्थ क्षत्रिय लोग क्षात्र-बल-वृद्धिका अनुष्ठान करते हैं और शेष तीनों वर्ण इसमें पूर्ण सहयोग देते हैं। दीपमाला या लक्ष्मीपूजनको राष्ट्रपोषणार्थ वैश्य लोग अर्थवृद्धिका अनुष्ठान करते हैं और शेष तीनों वर्ण भी इस कार्य (लक्ष्मीपूजन) में पूरा भाग लेते हैं। इसी प्रकार होली पर राष्ट्रसेवार्थ शूद्र लोग अपनी शक्ति-वृद्धिका अनुष्ठान करते हैं; अतः इनके साथ शेष तीनों वर्णोंका सहयोग देना भी स्वाभाविक ही है।

होलीके त्यौहार पर आबालवृद्ध नर-नारियोंमें जितनी चेतनता, नवीनस्फूर्त्ति, साहस, उमङ्ग और नवीन उत्साहकी लहर दौड़ पड़ती है उतनी और किसी त्यौहारमें नहीं दौड़ती। प्रकृति भी इस त्यौहार का पूर्णरूपसे साथ देती है—तभी तो वसन्तके कारण जड़ पदार्थ वनस्पति और वृक्षों तकमें नवजीवनका सञ्चार हो जाता है। तब फिर चेतन प्राणियोंके आनन्दोल्लासका तो कहना ही क्या है। राष्ट्रके सबसे

छोटे पुत्र और हमारे छोटे भाइयोंका यह प्रधान त्यौहार है। इसी कारण हम सबमें छोटे बालकों जैसी नवीन स्फूर्त्ति नया जोश और खेलकूद करने तथा ऊधम मचानेकी भावनाएँ भर जाती हैं। इस भ्रातृस्नेहमें सराबोर हो हम सब एक हो कर (ऊंच नीच छोटे बड़ेका भेद-भाव भुला कर) खूब आनन्दोल्लास मनाते और एक दूसरेकी कल्याण-कामना किया करते थे। इन्हीं त्यौहारों पर राष्ट्रके चारों पुत्रों (ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रों) की शारीरिक मानसिक आर्थिक और आध्यात्मिक उन्नति पर विचार किया जाता था। प्रत्येक भाईने वर्ष भरमें अपने उत्तरदायित्वको किस प्रकार निभाया यही इन त्यौहारों पर देखा जाना चाहिए। हरिजन भाइयोंके वास्तविक उद्धारका मार्ग भी यही है। न कि केवल मात्र उनके साथ खानपान आरम्भ करने, हाथमिलाने, उनका काम छीनने (जैसे अब ब्राह्मण क्षत्रियोंने जूतोंकी दुकानें खोलना आरम्भकी हैं) और कामवासना पूर्तिके लिए उनकी सुन्दर २ लड़कियां लेनेसे ही अछूतोद्धार हो सकेगा।

कुछ सुधारक भाई व्यर्थमें ही अछूत भाइयोंको बहकाकर हमसे विद्रोही बना रहे हैं, यह राष्ट्रके लिए हितकर मार्ग नहीं। किन्तु किया क्या जावे, आज तो राष्ट्र विपरीत मार्ग पर ही चल रहा है। जिस होली पर राग द्वेष ईर्षा स्वार्थपरता एवं काम क्रोधादि दुर्व्यसनोंको भस्मीभूत करना चाहिए था— उन्हींकी आज वृद्धि हो रही है। प्रतिवर्ष स्वातन्त्र्य और समानताके प्रतीक इस त्यौहारका वास्तविक रूप भुलाकर विपरीत रीतिसे केवल त्यौहार मनानेका दम्भमात्र भरनेसे अमानुषिकताका रोग दिन २ बढ़ा और देश बुरी तरह दासताकी बेड़ियोंमें जकड़ा गया।

यह मानी हुई बात है कि किसी देशका परतन्त्र होना ही उसके सर्वनाशका मूल कारण होता है। परतन्त्रता ही देशकी अनेकताकी द्योतक है। अनेकता की उत्पत्ति स्वार्थ, राग, द्वेष और अज्ञानके कारण होती है। प्रातः स्मरणीय स्वर्गोपम भारत-वसुन्धरा पर सुविशाल हिन्दू जातिके परतन्त्र होनेका कारण गृह-कलह, हिन्दू राजाओंकी कर्तव्यहीनता, उनकी विषयलोलुपता, आपसका राग द्वेष तथा प्रजापीड़न ही था। यह बात माननी पड़ेगी कि मुसलमान सम्राटों द्वारा एक-दोको छोड़कर, हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्यकी वृद्धि ही की गई। कभी हिन्दू-मुसलमान सैनिकोंके रक्तसे मेवाड़की भूमि रक्तरञ्जित करदी गई तो कभी महाराष्ट्र, पंजाब तथा अन्य प्रांतोंमें नर रक्तकी नदियां बहादी गईं। फलतः हिन्दू-मुस्लिम संघर्षकी दहकती हुई भट्टीकी होलीमें हिन्दू तथा मुस्लिम शक्तियां बुरी तरह झुलस गईं। मुसलमानों के शासनकालमें हिन्दू आदर्श, सभ्यता, शिक्षा तथा कला-कौशलके अस्तित्वको मिटानेके लिए जी भरकर परिश्रम किया गया। इस प्रकार शक्ति-हीन हिंदू तथा मुसलमानोंने "विनाशकाले विपरीत बुद्धिः" की लोकोक्ति चरितार्थ करते हुए अपनी जन्मभूमि भारत-माता पर तीसरी विदेशी शक्तिका आधिपत्य कराया। आज लगभग १५० वर्षसे भारत इस पराधीनताकी बेड़ियोंसे जकड़ा हुआ है। किन्तु अब कई वर्षोंसे देशके सौभाग्यसे "स्वतन्त्रता" देवीकी उपासना ही अधिकतर भारतवासियोंका अभीष्ट हो रही है। यह भी माना हुआ सिद्धान्त है कि समय परिवर्तनशील है। सदा किसीकी एक-सी नहीं चलती। यद्यपि स्वाधीनताकी तड़प भारतवासियोंमें इसके पूर्व भी प्रकट हो चुकी है। सन् १८५७ में जो कुछ हुआ (जिसमें विठूरके नाना साहब और झांसीकी महाराणी लक्ष्मीबाईके साथ ही सैकड़ों वीरोंने पूर्णाहुतियां दी थीं) वह भी स्वतंत्रताकी इस तड़पका ही द्योतक है, परंतु आजके उद्योगकी प्रणाली और शान ही विचित्र है। सन् १८५७ के अनन्तर भारतमें विकट परिस्थिति उत्पन्न हो गई। देशमें सत्यानाशी पराधीनताका आतङ्क और प्रभाव जम गया। स्वाधीनता देवीकी उपासनाका कूटनीति तथा बल प्रयोगने सर्वथा अन्त ही कर दिया। चापलूस और खुशामदियोंकी तूती बोलने लगी, राज्य भक्ति प्रदर्शित करना, दासताको हृदयसे स्वीकार करना तथा उसके विरुद्ध मन, वचन और कर्मसे कोई कार्य न करना भारतवासियोंका कानूनी धर्म करार दे दिया

गया। ब्रिटिश राज्यान्तर्गत निःशक्त हिन्दू मुसलमानों को अपने ढांचेमें ढालनेके लिए बड़े बड़े प्रयत्न किये गये। फलतः सहस्रों भारतीय उनकी शिक्षा, दीक्षा, भाव, भेष तथा धर्मको सहर्ष स्वीकार कर साहब बहादुर बन बैठे। परन्तु आज भी दुर्भाग्यवश सारे संसारके प्रत्येक देश निवासियोंके बेरोक-टोक भारतमें घुस पड़नेपर भी यहां हिन्दू मुसलमानोंकी जन-संख्या ही अधिक है। इनकी जन-संख्या अधिक भले ही है, किन्तु इनकी शक्ति साम्प्रदायिक झगड़ोंके कारण क्षीण हो चुकी है। इन्हें कुत्तोंकी भांति लड़ानेके लिए कभी ईद मुबारिकका दिन आगया तो कभी विजयी दशहरा। कभी मस्जिदके सामने बाजेका प्रश्न उठ खड़ा हुआ तो कभी मन्दिर या गुरुद्वारेका। तात्पर्य यह है कि आपसकी फूटका तरुशिशु (पौदा) हिन्दू मुसलमानोंके ही रक्तसे सींचा जाकर खूब सुदृढ़ होगया है। जब तक इस विष-वृक्षको समूल नष्ट न किया जावेगा तब तक देशका उद्धार होना सर्वथा असम्भव है।

यह भारतकी अग्नि-परीक्षाका समय है, अतः इस बार अपने राग द्वेषोंकी होली जला कर भारतीय मात्रको—चाहे वह हिन्दू मुसलमान ईसाई पारसी जैन बौद्ध सिक्ख आदि कोई भी हो—राष्ट्रियता के नाते भाई भाईकी भांति एक होकर कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर आनेवाले सङ्कटका सामना करना चाहिए। तभी हम संसारमें अपना अस्तित्व स्थिर रख सकेंगे। अन्यथा आपसीफूटका दुष्परिणाम तो सामने है ही।

भारतके अन्न जल और वायुमण्डलसे जो भी प्राणी पले हैं उन सबको सर्वप्रथम भारत-माताके सम्मानका पूर्ण ध्यान रहना चाहिए। अपना रक्त दे कर भी जननी जन्मभूमिकी रक्षा करनेकी दृढ़ भावना बच्चे २ के अन्दर होनी चाहिए। इससे सम्भव है कुछ निर्बल-मानस अनुदार व्यक्तियोंके हृदयमें यह शङ्का उत्पन्न हो कि—"कहीं पहले हम सब मिलकर स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे तो बादमें अमुक जाति विशेषके लोग उसका अधिक उपभोग करेंगे और हम कोरे ही रह जावेंगे या अमुक जातिके हाथमें शासन आनेसे वह हमें तंग करेंगे आदि २" किन्तु यह उनकी भूल है। स्वतन्त्र भारतमें सबके साथ समान व्यवहार होगा। सब लोग अपने अपने अधिकारोंका यथेच्छ उपभोग करेंगे। घड़ी भरके लिए मान लिया जाय कि स्वतन्त्र भारतमें भी हम आपसमें इसी प्रकार लड़ते रहेंगे; तो भी उस समयकी हमारी वह लड़ाई उतनी हानिकर नहीं होगी—जितनी कि आज हमें आपसमें लड़ा कर एक तीसरी शक्ति हमारे न्याय्य करनेका दम्भ भरती है। इसी लिए श्री १०८ पूज्यपाद आचार्य अमृतवाग्भवजी महाराजने अपने राष्ट्रालोकमें लिखा है—

> राष्ट्रियाणां मिथो युद्धं न तादृग्हानिकारकम्।
> अराष्ट्रियसाहाय्येन यथा राष्ट्रियदण्डनम्॥

[राष्ट्रियोंका परस्पर युद्ध उतना हानिकारक नहीं जितना अराष्ट्रियकी सहायतासे राष्ट्रियको दण्ड देना]

लेख विस्तृत हो गया है; अतः अब हम अधिक न लिखकर केवल इतना ही कहेंगे कि यदि इस बार भी भारतने अपने इस पुनीत पर्वका आदर्श न समझ राग-द्वेष-ईर्षा अनुदारता एवं आपसी फूट रूपी राक्षसीकी होलीमें पूर्णाहुति न देकर केवल घास फूस की होली जलानेमें ही अपनी इतिकर्तव्यता समझ ली तो पाश्चात्त्य अन्य देशोंकी भांति इसका उच्चादर्श एवं अस्तित्व महायुद्धकी होलीमें झुलसे बिना न रहेगा।

देशके सम्पत्तिशाली श्रीमानों एवं शासकोंको भी सचेत होकर लोक-कल्याण या राष्ट्रहितमें अपनी सारी शक्ति लगा देनी चाहिए। क्योंकि धन सम्पत्ति और शासनका मूल्य अनतिदूरकालमें ही परिवर्तित होने वाला है। इसके पूर्व ही अच्छा हो यदि वे विवेकवान् एवं उदार बन जाएँ। लोकहितमें ही उनका हित है। होली उन्हें अनार्यपनसे रोकने और विश्वप्रेमका पाठ पढ़ाने ही प्रतिवर्ष आती है।

त्रैमासिक राशिफल

अर्थात्

पौष शुक्ल १ से माघ कृष्ण ३० (ता० १९ दिसम्बर १९४१ से १६ जनवरी १९४२ ई०) पर्यन्त १२ राशियोंका फलादेश

[लेखक—श्री पं० सखाराम पुरुषोत्तमजी जोशी]



मेष इस मासमें शरीरकष्ट, वात-व्याधियां विशेष। साम्पत्तिक सुख, कौटुम्बिक-कलह, भाई बन्धु तथा अन्यान्य सम्बन्धियोंमें झगड़े हों, किन्तु मानसिक शान्ति रहे। चित्तमें नानाप्रकारके सङ्कल्प विकल्प उत्पन्न हों। स्त्री सुख, स्वास्थ्यके लिए तथा यात्रामें धनका व्यय, भाग्योदयमें बाधा, राज्यमें यश, व्यापारमें लाभ।

वृषभ स्वास्थ्य उत्तम, सद्विचार, चित्तमें प्रसन्नता। गत मासके बिगड़े कार्य यहां सुधरें। सम्बन्धियोंका सुख, नीचजनोंसे व्यापारमें साधारण लाभ, उदर विकार। यह मास कोई नया कार्य आरम्भ करनेके लिए उत्तम नहीं है। शत्रु द्वारा धन व्यय, राज्यपक्षकी चिन्ता। यात्रा।

मिथुन चित्तमें अशान्ति, अर्थोपार्जन या आजीविकामें बाधा, लाभ न्यून्य, व्यय अधिक, स्वास्थ्य मध्यम, शीत ज्वर-श्लेष्मा आदिसे कष्ट, वीर्य विकार, स्त्रीसुख मध्यम, यात्रामें कष्ट। आप्त जनों और तीर्थयात्रामें व्ययाधिक्य। यह मास स्वास्थ्य धन कुटुम्बादिकी दृष्टिसे उत्तम नहीं है।

कर्क मासके पूर्वार्धमें लाभ अल्प, अपयश, व्यापार तथा राज्यकी ओरसे चिन्ता, भाग्य वृद्धिमें बाधा हो, किन्तु मासके उत्तरार्धमें सब बाधा निवृत्त होकर चित्तमें शान्ति हो। स्वास्थ्य उत्तम, व्यापार व्यवसायमें आशाकी रूपरेखा प्रकट होने लगे। कुटुम्ब-सन्तान-स्त्री और यात्रामें व्यय।

सिंह चित्तमें अशान्ति, शिरोव्यथा, श्लेष्मा, उदर विकार, अनेक प्रकारके सङ्कल्प-विकल्प। कुटुम्ब सम्बन्धियोंका सुख, उष्णविकार, व्रणादि उत्पन्न हों। इस मासमें किया हुआ व्यापार या कोई भी कार्य दो मासके अनन्तर लाभप्रद सिद्ध होगा।

कन्या पराक्रम वृद्धि, स्वास्थ्य उत्तम, धनोपार्जन, सन्तति कष्ट, बुद्धिभ्रम, शत्रुनाश, स्त्रीको रक्त विकार, शिरोव्यथा उदर व्याधि। भाग्य वृद्धि। नौकरी या व्यवसाय प्राप्ति। राज्य तथा व्यापारमें यश लाभ। लाभकी अपेक्षा इस मासमें व्यय भी अधिक होगा।

तुला स्वास्थ्य उत्तम, चित्तवृत्ति शान्त, अनेक सद्विचार उत्पन्न हों और उनके द्वारा लोकोपकारी कार्य भी बनें। सन्तानको विद्या या व्यापारसे यश, स्त्रीकष्ट, कुटुम्बमें अशान्ति, शत्रुपीड़ा, श्वेत वस्तुसे लाभ, राज्य और व्यापारसे भी लाभ, व्यय इस मासमें थोड़ा हो।

वृश्चिक शरीरमें उष्णता, बुद्धि तीव्र, क्रोध-अधिक, व्यापारसे लाभ। पीले रंगकी वस्तु द्वारा भी इस मासमें इस राशिवालोंको लाभ होगा, यश पराक्रम वृद्धि, स्त्री सन्तान और कुटुम्ब सुख उत्तम। मासके अन्तमें स्त्रीको शीतज्वर या श्लेष्मादिसे कष्ट होगा और स्त्री पक्षमें तथा यात्रामें व्यय भी अधिक होगा।

धनुः कफ वृद्धि, शत्रुपीड़ा, सट्टा या लाटरीमें लाभ, विद्या द्वारा यश वृद्धि, यात्रा, उदरमें वायु विकार, सन्तति कष्ट, अन्य व्यापारमें लाभ न हो, स्त्री तथा कुटुम्बसे वैमनस्य, भाग्यवृद्धिमें बाधा, राज्यपक्षमें व्यय, इस मासमें ऋण योग है, सावधान रहें।

मकर वात वृद्धि, चित्तमें दुर्वासनाएँ उत्पन्न हों। आर्थिक लाभ थोड़ा, यात्रामें वाधा, सन्तति तथा स्त्री सुख उत्तम, शत्रुवृद्धि, भाग्य-वृद्धि, स्वास्थ्य मध्यम, राज्य तथा व्यापारमें यश।

कुम्भ शरीरकष्ट, उष्णविकार व्रणादि, अपयश, बुद्धि अस्थिर, व्यापार व्यवसायमें अकारण शत्रु उत्पन्न हों। स्त्री तथा सन्तति सुख साधारण। कुटुम्बमें कलह, इच्छितकार्यमें विघ्न। पीलीवस्तुके व्यापारसे लाभ, राज्य पक्ष मध्यम।

मीन चित्तमें अशान्ति, अनेक प्रकारके कार्य करने और स्वास्थ्य सुदृढ़ बनानेके लिए प्रयत्न किया जावे इसमें व्यय विशेष हो। यात्रा, तीर्थस्थान तथा सन्त महात्माओंके दर्शन, स्वास्थ्य उत्तम, सन्तति कष्ट, व्यापारके लिए देशाटन, लोहा या काले रंगकी वस्तुओंसे लाभ। मनोविनोद तथा यश सम्बन्धी कार्योंमें धन व्यय।



माघ शुक्ल १ से फाल्गुण कृष्ण ३० (ता० १७ जनवरी से १५ फरवरी) पर्यन्त १२ राशियोंका फलादेश

मेष वात तथा रक्तविकार, कुटुम्ब सुख, चित्त में व्यग्रता, बालबच्चोंको कष्ट, शत्रुपीड़ा, स्त्रीजनोंसे लाभ, भाग्योदय, राज्य अथवा व्यापारसे लाभ थोड़ा, हृदय अथवा मस्तिष्क सम्बन्धी विकार।

वृषभ स्वास्थ्य उत्तम, चित्तमें अनेक प्रकारकी अच्छी कल्पनाएँ उत्पन्न हों। स्त्री-सन्तान कुटुम्बादि सुख उत्तम, लाभ व्यय समान। व्यर्थ वादविवादसे चित्तमें अशान्ति। ऋण योग।

मिथुन स्वास्थ्य मध्यम, शीतज्वर (मलेरिया), शत्रुपीड़ा, लड़ाई झगड़े, स्वामी या आफीसरसे वैमनस्य, कुटुम्ब स्त्री पुत्रादिका सुख मध्यम, गत मासकी अपेक्षा लाभ उत्तम। शुभ कार्योंमें व्यय।

कर्क स्वास्थ्य उत्तम, व्ययाधिक्य, स्त्रीसे कलह, शत्रुसे लाभ, सन्तति सुख, व्यापार या आजीविकामें कोई उलझन उत्पन्न होकर हानि पहुँचने की सम्भावना है। मित्र मिलाप, यात्रामें कष्ट, कुटुम्ब-चिन्ता।

सिंह स्वास्थ्य मध्यम, मानसिक चिन्ता, स्त्री-कुटुम्बादि सुख मध्यम, विद्या शुभकृत्य तथा व्यापार सम्बन्धमें व्ययाधिक्य, शत्रु पीड़ा। यात्रा से लाभ, मासके अन्तमें राज्य या व्यापारसे साधारण लाभ हो।

कन्या स्वास्थ्य उत्तम, सन्तान कष्ट, कुटुम्ब तथा पड़ौसियोंसे झगड़ा, शत्रुवृद्धि, साधु समागम, मासके उत्तरार्धमें रक्तविकार, राज्य तथा व्यापारमें उन्नति, श्वेत वस्तुसे लाभ, शुभकार्य।

तुला स्वास्थ्य मध्यम, भाई बन्धुओंसे झगड़ा, स्त्री सन्तान सुख उत्तम, शत्रु पीड़ा, व्यापार तथा राज्यसे साधारण लाभ। मासके अन्तमें लाल वस्तुसे कुछ लाभ और स्त्रीकष्ट हो। ऋणयोग।

वृश्चिक स्वास्थ्य नेष्ट, रक्तविकार, वात-व्याधि, शत्रनाश, पराक्रम वृद्धि, लाभ साधारण, सन्तान वृद्धि, दीर्घ रोग, भृत्योंसे सुख, स्त्री सुख उत्तम, सद्विचार, बीमारी तथा शुभाशुभकार्योंमें व्यय।

धनुः स्वास्थ्य उत्तम, संयम और आत्मबलमें वृद्धि, व्यापारमें विशेषकर रुई कपास और श्वेत वस्तुसे लाभ, कुटुम्बीजनोंका सुख उत्तम। व्यय गत मासकी अपेक्षा थोड़ा हो। मासके अन्तमें शरीरमें शिथिलता, अशुभ समाचार श्रवण।

मकर उत्साह वृद्धि, स्वास्थ्य उत्तम, स्त्री कुटुम्बादि सुख मध्यम, धार्मिक कार्यों में यश, लाभ साधारण, व्यवसायमें वाधा, व्यय विशेष। मासके उत्तरार्धमें उदरविकार और शत्रुहानि।

कुम्भ बुद्धि अस्थिर, चित्तमें नाना प्रकारके संकल्प-विकल्प, स्वास्थ्य मध्यम, लाभ-साधारण, स्त्री तथा सन्तान कष्ट, यात्रा, राज्य सम्बन्धी कार्यमें व्यय, भूमि सम्बन्धी कार्य करने वालोंको यह मास उत्तम है।

मीन भाग्य वृद्धि, व्यापार व्यवसाय राज्य तथा यात्रासे लाभ तो थोड़ा हो परन्तु यश अधिक मिले। स्त्री कुटुम्बादि सुख मध्यम। स्वास्थ्य मध्यम, चित्तमें विकलता, व्यर्थ व्यय अधिक हो।

फाल्गुण शुक्ल १ से चैत्र कृष्ण ३० तक (ता० १६ फरवरी से १६ मार्च) पर्यन्त १२ राशियोंका फलादेश

मेष लाभ साधारण, स्त्री कुटुम्ब सुख उत्तम, सन्तति कष्ट, राज्य तथा व्यापारपक्ष मध्यम, शत्रु वृद्धि, नवीन कार्यसे हानि। मासके अन्तमें शत्रु की पराजय। स्वास्थ्य उत्तम, चित्तमें विकलता।

वृषभ स्वास्थ्य मध्यम, आत्मबल वृद्धि, लाभ साधारण, कुटुम्ब सुख साधारण, स्त्री-कष्ट, यात्रा, उदर विकार, व्यापार व्यवसाय तथा भाग्य की अवनति, व्यय अधिक, मित्रसे सन्तोष।

मिथुन स्वास्थ्य साधारण, धनलाभ सामान्य, अभियोगमें विजय, कुटुम्बमें कलह, सन्तान कष्ट, भाग्योदय में विलम्ब, शत्रु वृद्धि, शुभ-कार्यमें व्ययाधिक्य।

कर्क शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य मध्यम। व्यापार व्यवसायमें लाभ उत्तम, बन्धु-विरोध, राज्य भय, शत्रुसे लाभ, यात्रामें कष्ट, मासके अन्तमें वायु विकार एवं कार्य हानि।

सिंह चित्तमें अनेक प्रकारकी चिन्ताएँ उत्पन्न हों, स्वास्थ्य मध्यम, वायुविकार, अपचन, मलावरोध, सन्तान सुख, स्त्री कष्ट, शुभकार्यों में प्रवृत्ति। व्यापार द्वारा विशेषकर पीलीवस्तुसे लाभ, व्यय अधिक।

कन्या स्वास्थ्य उत्तम, लाभ साधारण। प्रवाससे लाभ, आत्मोन्नति, भाग्यवृद्धि, व्यापारसे अकस्मात् लाभ, स्त्री सुख, राज्यपक्ष उत्तम, व्यय अधिक।

तुला शरीर सुख उत्तम, लाभ थोड़ा। इस मासमें कोई नया कार्य आरम्भ नहीं करना चाहिए। यदि करें तो हानिकी सम्भावना है। स्त्री कष्ट, यात्रासे कष्ट, मनमें अशान्ति।

वृश्चिक शिरपीड़ा, रक्तपित्त विकार, मिथ्या-पवाद, बुद्धि अस्थिर, कुटुम्बसुख, उदरविकार, मानवृद्धि, मित्र मिलाप, बन्धुओंसे असन्तोष, राज्यपक्ष उत्तम, व्यापार व्यवसायमें लाभ उत्तम।

धनु: स्वास्थ्य मध्यम, कफवृद्धि, साधारण लाभ, सुखमें बाधा, सन्तान कष्ट, शत्रु-वृद्धि, यात्रा भलीभांति लाभप्रदहो, धार्मिक शुभकार्यों में प्रवृत्ति।

मकर आत्मबल वृद्धि, स्वास्थ्य मध्यम, उदर-विकार, स्त्री तथा सन्तान सुख, समय अनुकूल रहे। लाभ स्वल्प, व्यय विशेष। मासका उत्तरार्ध नेष्ट है।

कुम्भ शरीर कष्ट, चित्तमें अनेक प्रकारकी चिन्ताएँ उत्पन्न हों। पराक्रम वृद्धि, गत मासमें प्रारम्भ किये हुए कार्यमें सफलता प्राप्त हो। स्त्री तथा सन्तान कष्ट, शत्रुभय, यात्रा, व्ययाधिक्य, समय अनुकूल रहे।

मीन स्वास्थ्य उत्तम, स्त्रीपुत्रादिका सुख पूर्ण, पराक्रम वृद्धि, बुद्धि चञ्चल, व्यापार व्यवसायसे लाभ, भाग्योदय, वस्त्रालङ्कार प्राप्ति, राज्य-पक्ष उत्तम, अकारण अचानक व्यय अधिक हो।

सूचना—उपर्युक्त राशिफल प्रत्येक मनुष्यको शत-प्रतिशत ठीक बैठे यह बात अनिवार्य नहीं है। क्योंकि संसार के प्राणियोंको बारह भागों या १२ राशियोंमें विभक्त करके यह विचार लिखा गया है। देश काल परिस्थिति और अपने अपने जन्मलग्नकी ग्रहस्थितिके अनुसार कुछ अन्तर रहना स्वाभाविक ही है। एतदर्थ मासका ठीक ठीक सूक्ष्मफल तो गणित द्वारा अपने अपने वर्ष फलसे ही ज्ञात हो सकता है। मध्यम मानसे यह राशिफल भी मिल जाता है। अत: जिन लोगोंका जन्मपत्र वर्षफल बना हुआ नहीं है उनके हितार्थ यह त्रैमासिक राशिफल हमने बड़े विचारपूर्वक लिखा है। यदि आप हमारे द्वारा अपना सूक्ष्म यथार्थ मासिक अथवा जीवन भर का भविष्य जानना चाहते हैं तो सूक्ष्म शुद्ध गणनानुसार जन्मपत्र वर्षफल बनवाइये।



सन् १९४२ ई० में—
ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे संसारका भविष्य

[लेखक—श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी सम्पादक "श्रीस्वाध्याय"]

श्रीस्वाध्यायके इस हेमन्ताङ्कके साथ ही ४ दिनके अन्तरसे ईसाइयोंका नववर्ष सन् १९४२ ई० आरम्भ हो रहा है। इस वर्षके ग्रह-योगोंकी ओर यदि हम देखते हैं तो दूसरे मास फरवरीमें ही आकाशमें शनि-मंगलका भयङ्कर युद्ध होनेवाला है, आगे मार्चके आरम्भमें खग्रास चन्द्रग्रहण, अप्रैलके आरम्भमें मंगल-गुरुका युद्ध और जुलाईमें ५००० वर्षके अनन्तर महाभारत कालीन रोहिणी-शकटभेद पुनः होनेवाला है। इधर हमारे सम्राट् षष्ठजार्जको भी ४७वां वर्ष १४ दिसम्बर १९४१ ई० से आरम्भ हुआ है, तथा हर हिटलरको ५४वां वर्ष २० अप्रैल १९४२ ई० से आरम्भ हो रहा है—इनकी जन्मकुण्डली वर्ष-कुण्डली और जापान सम्राट्, प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट, मो० स्टेलिन आदि २ प्रधान पुरुषोंकी जन्मकुण्डलियों पर सम्यक्तया विचार करनेसे ज्ञात होता है कि यह वर्ष समस्त संसारके लिए विशेषतः यूरोपियन ख्रिस्ट जातियोंके लिए महान् अनिष्टकर सिद्ध होगा। वर्षारम्भके साथ ही संसारकी सभ्यता, संस्कृति, मानवता, राष्ट्रियता एवं भौतिक विज्ञानको विनाशकी भट्टीमें झोंकनेका उपक्रम आरम्भ हो जायेगा। इस वर्षमें प्राकृतिक कोपोंकी भी वृद्धि होगी। अनेक असामयिक अनपेक्षित घटनाएं घटेंगी।

यह तो हमने आजसे ६वर्ष पूर्व (जब वर्तमान महायुद्धका नाम भी नहीं था) सं० १९९० वि०के आरम्भमें ही एक विस्तृत भविष्यवाणी द्वारा समाचार पत्रोंमें लिखा था कि—"इन दश वर्षोंमें संसार की सभी महाशक्तियां क्षीण हो जावेंगी, कई राष्ट्र मिट्टीमें मिल जायेंगे" उस भविष्यवाणीका शीर्षक भी यही था। वह सब घटनाएं आज प्रत्यक्ष सामने आ रही हैं। वर्तमान संसार-संकट और महायुद्धका परिणाम जाननेके लिए प्रत्येक व्यक्ति अत्यन्त उत्कण्ठित रहता है। कई मित्र और पाठकगण हमें संसारकी परिस्थिति पर पुस्तकरूपमें भविष्यफल प्रकाशित करनेके लिए विशेष आग्रह कर रहे हैं। एतदर्थ हमने "श्रीस्वाध्याय" में ही अपनी तथा अन्य विशेषज्ञ विद्वानोंकी भविष्यवाणियां देनेका निश्चय किया है। आशा है इससे हमारे वे सब मित्र और श्रीस्वाध्यायके पाठकगण अवश्य सन्तुष्ट होंगे।

अब हम सन् १९४२ ई० में संसारके कुछ महान् राष्ट्रोंकी हलचल ज्योतिर्विज्ञानकी दृष्टिसे पाठकोंके सम्मुख रखते हैं—

इंगलैण्ड

इस वर्ष जर्मनी इंगलैण्ड पर भयानक आक्रमण की योजना तैयार करेगा। इस आक्रमणमें जर्मनीका भी बहुत विनाश होगा। इंगलैण्डको भारत, ब्रह्मा, सिंगापुर, मलाया, आस्ट्रेलिया आदिकी रक्षाके लिए बहुत कठिन परिस्थितिका सामना करना पड़ेगा। अमेरिकासे इंगलैण्डको पूरी सहायता मिलती रहेगी। ईरान या टर्कीके प्रश्नको लेकर रूसके साथ इंगलैण्डका मतभेद होगा। अफ्रिकामें इंगलैंड को भारी सेना भेजनी होगी; जिसमें अमेरिकाका भी सहयोग होगा। हिन्दमहासागर और प्रशान्त-महासागरकी रक्षाके लिए अमेरिका प्रत्येक प्रकारसे इंगलैण्डकी सहायता करेगा। सुदूर पूर्वकी चिन्ता इंगलैंडको विशेषरूपसे सतावेगी। ब्रिटिश साम्राज्य को सुरक्षित रखनेके लिए भारतके राज्याधिकारी पूरा भाग लेंगे। १९४२ ई० में भारतके एक बड़े महाराजा यूरोपके युद्ध-स्थलमें जाकर अपनी वीरता प्रदर्शित करेंगे।

जर्मनी

पर्याप्त हानिके अनन्तर सुविशाल रूस प्रदेश

पर जर्मनीको विजय प्राप्त होगी, परन्तु विजित रूसमें शान्ति-व्यवस्था स्थापित करनेके लिए जर्मनी असमर्थ रहेगा। जर्मन प्रजा या जर्मनीके अधिकृत प्रदेशोंमें क्षोभ, असन्तोषकी वृद्धि होगी। जर्मन नेताओंमें मतभेद होगा। मार्चके अनन्तर हर हिटलर अपने आपको बड़ी कठिन परिस्थितिमें उलझा पायेगा। इंगलैंड पर बड़ा भयानक अभूतपूर्व आक्रमण करेगा, पर इसमें उसको पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी। जर्मनीके विजित प्रदेशोंकी बहुतसी सेना युद्धमें काम आवेगी, इस कारण उन अधिकृत प्रदेशों में विद्रोह बढ़ेगा।

रूस

रूसमें भयङ्कर विनाश होगा। लेनिनग्राड, कीव, काकेसस, यूक्रेन, मास्को आदि सभी महत्त्वपूर्ण स्थान जर्मनीके अधिकारमें चले जावेंगे। कृष्णसागर और यूक्रेनमें भारी विनाश होगा। बाल्टिक और कृष्णसमुद्रमें रूसके समुद्री तथा हवाई बेड़ेको असह्य हानि पहुंचेगी। रूसके बीस-पच्चीस लाख सैनिक बन्दी हो जावेंगे। फरवरीके अनन्तर रूस बृटेनमें मतभेद होगा। अमेरिका भी रूससे अप्रसन्न होगा। सन् १९४२ के अन्तके साथ ही साथ बोल्शेविज्म या रूसके साम्यवादका भी अन्त ही समझिये। रूसका कुछ भाग एंग्लो अमेरिकन यूनियनके अधिकारमें रहेगा। स्टेलिनके अधिकार च्युत होने पर रूसका शासन-सूत्र जारके किसी वंशजके हाथमें सौंपनेका जर्मनीकी ओर से प्रयत्न होगा।

जापान

जापान रूस पर आक्रमण करके कुछ प्रदेश अपने अधिकारमें कर लेगा। सुदूर पूर्वमें अमेरिकाके साथ जापानकी भीषण टक्कर होगी। उसी समय अमेरिकाका पक्ष लेकर ब्रिटेन भी जापानसे लोहा लेनेको उद्यत होगा। दोनों ओरसे पर्याप्त विनाशके अनन्तर बृटेन और जापानमें सन्धि हो जानेकी सम्भावना है। प्रशान्त-महासागर और रसियन सीमाप्रांत पर जापानकी बहुत हानि होगी। डच ईस्ट इण्डीज, फीलिपाईन, फारमोसा और फ्रेंच इण्डोचायना जापानके प्रभावमें आजावेंगे। एंग्लो अमेरिकन यूनियन इस प्रभावको मिटानेका प्रयत्न करेंगे। फलतः दोनों ओरसे भीषण संघर्ष होगा। जापानी प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा। मंत्रिमंडलमें पुनः अचानक परिवर्तन होगा। सन् १९४२ का सारा वर्ष जापान सम्राट्के लिए चिन्ताकारक ही रहेगा। युद्धमें जापानको इस वर्ष हानि की अपेक्षा लाभ बहुत थोड़ा होगा। यद्यपि भारतकी ओर बढ़नेका भी जापान प्रयत्न करेगा, तथापि इस वर्ष उसे पूर्ण सफलता नहीं मिलेगी।

चीन और ब्रह्मदेश

सन् १९४२के अन्तमें चीनकी स्थिति एक पराधीन देश जैसी हो जावेगी। चीन जापानका प्रभुत्व या मैत्री स्वीकार करनेको उद्यत होगा परन्तु बृटेन अमेरिका इसमें बाधक सिद्ध होंगे। फिर भी चीनका बहुत बड़ा भाग जापानके अधिकारमें चला जावेगा। रूसका दबाया हुआ चीनी प्रदेश भी जापान ले लेगा। चीन का कुछ प्रदेश बरमाकी रक्षाके लिए बृटिश सरकार ब्रह्मदेशसे मिला देगी। बरमा या ब्रह्मदेशके लिए यह सारा वर्ष भय एवं हानिप्रद है; प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा। व्यापारमें भारी धक्का लगेगा। पूर्वके छोटे बड़े सभी द्वीपोंको यह सारा वर्ष भयप्रद है। बहुतसे टापुओंको जापान द्वारा क्षतिग्रस्त होना पड़ेगा और कुछ टापुओं पर जापान अधिकार जमा लेगा। परन्तु उन सबमें सुव्यवस्था रखना उसके लिए बहुत कठिन होगा, प्रशान्तमहासागरके प्रदेशोंकी रक्षाके लिए एंग्लो-अमेरिकन-यूनियनको विकट परिस्थितिका सामना करना पड़ेगा।

ईरान ईराक अफगानिस्थान और ईजिप्ट

बृटेन और जर्मनी ईरानमें अपनी २ दृढ़ता स्थापित करनेके लिए राजनैतिक शतरञ्जकी चाल चलेंगे। इधरसे बृटेन रूस तथा अमेरिकाकी ओरसे दबाव पड़ेगा और उधरसे जर्मनीका। जर्मनीके आक्रमण का भी भय रहेगा। ऐसी दशामें ईरानको बड़ी भयङ्कर

स्थितिसे निकलना पड़ेगा। यह सारा वर्ष ईरानके लिए अशुभ है। यदि शासकोंने बुद्धिमत्तासे काम न लिया तो देश रणक्षेत्र बन जायगा। ईराक और ईजिप्टके राजतन्त्रमें परिवर्तन होगा। सारा वर्ष भय एवं हानिकारक है। जल स्थल और वायुमार्गसे विशेष हानि होगी। अफगानिस्तान भी इस वर्ष भयसे बाहर नहीं है। एक बार तो अफगानिस्तानसे बृटेनको बड़ा भय उत्पन्न होगा; परन्तु अन्तमें वह एंग्लो अमेरिकन प्रभावमें आजायेगा। अफगान प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा। श्री० अमानुल्लाखां वापिस लौटकर अफगानिस्थानमें प्रवेश होने और शासनसूत्र अपने हाथमें लेनेका प्रयत्न करेंगे।

अफ्रिका

पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण अफ्रिका चारों ओरसे भयग्रस्त रहेगा। पश्चिमोत्तर किनारा युद्धके वातावरणमें घिर जानेसे बहुत हानि होगी। एंग्लो-अमेरिकन यूनियन इस हानिका डटकर प्रतिशोध करेगी।

भूमध्यसागर

भूमध्यसागरमें भयंकर समुद्री लड़ाइयां होंगी। दोनों पक्षोंकी अत्यधिक हानि होगी। जिब्राल्टर, माल्टा, साईप्रस, स्वेजनहर, अलेकजेण्डरिया आदिको विशेष आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। इसी प्रकार इटली और जर्मनीके भूमध्य प्रदेशोंको भी अपरिमित हानि उठानी पड़ेगी।

इटली फ्रांस स्पेन

इटलीको अपने अधिकृत प्रदेशोंकी रक्षाके लिए बड़ी कठिन परिस्थितिका सामना करना पड़ेगा। कृष्णसागर और भूमध्यसागरके किनारोंके प्रदेशोंमें इटलीकी सैनिक एवं आर्थिक हानि बहुत होगी। रूसमें कुछ सुविधाएँ देकर तथा भूमध्यसागरके किनारेका कुछ प्रदेश प्रदान कर जर्मनी इटलीको सन्तुष्ट करेगा। फ्रेञ्च प्रजाकी भावना बृटेनके विरुद्ध और जर्मनीके पक्षमें रहेगी। फ्रान्सके मन्त्रिमण्डलमें पुनः परिवर्तन होगा। मार्च तकका समय श्री० पेतांके लिए अनिष्टकर रहेगा। फ्रांसके कुछ प्रदेश इङ्गलेण्ड और अमेरिकाके अधिकारमें चले जावेंगे। मित्रराष्ट्र स्पेनको शत्रुप्रदेश घोषित करेंगे। वर्षके पूर्वार्धमें ही जिब्राल्टरके लिए स्पेन और इङ्गलेण्डमें संघर्ष छिड़ेगा। स्पेनकी प्रजा और राजनैतिक नेताओंमें मतभेद उत्पन्न होगा।

अमेरिका

यह तो हम सन् १९४० के आरम्भमें ही लिख चुके थे कि "अमेरिकाको भी लड़ाईमें आना पड़ेगा" ता० १७ मार्च १९४० के विश्व-बन्धुमें स्पष्ट लिखा था कि—"सन् १९४१ में अमेरिका युद्धमें सक्रिय भाग लेगा।"

अब पाठकोंने देख लिया है कि अमेरिका सन् १९४१ में ही प्रत्यक्ष न सही अप्रत्यक्षरूपमें तो युद्धमें संलग्न हो ही गया है। अब शीघ्र ही उसे प्रत्यक्षरूपमें भी उतरना ही होगा। प्रशान्तमहासागर और सुदूरपूर्वमें बृटिश अधिकारोंकी रक्षाका अधिकतर भार अमेरिका अपने ऊपर ले लेगा। अफ्रिकासे लेकर सुदूरपूर्वके प्रदेशों पर्यन्त प्रशान्तमहासागरमें बड़ी भारी उथल पुथल मचेगी। बृटेनका बहुतसा भूभाग अमेरिकाके संरक्षणमें रहेगा। १९४२ के पूर्वार्धमें अमेरिकन प्रजा करों (टेक्सों) के बोझसे तिलमिला उठेगी। इस वर्ष अमेरिकामें बड़ी बड़ी हड़तालें होंगी, आर्थिक हानि अधिक होनेसे प्रजामें असन्तोष बढ़ेगा। परन्तु प्रे० रूजवेल्ट दृढ़तापूर्वक इस असन्तोषको दबा देंगे। वर्षके पूर्वार्धमें ही जर्मनीकी कूटनीतिके कारण पश्चिम गोलार्धके प्रदेशोंमें मतभेद उत्पन्न होगा। संयुक्तराष्ट्र एवं पश्चिमगोलार्धके अमेरिकन प्रदेशोंमें मार्च जून और सितम्बरमें जर्मनीका आतङ्क बढ़ेगा। यह सारा वर्ष अमेरिकाके लिए भी श्रेयस्कर नहीं है।

भारतवर्ष

सीमाप्रान्त, ब्रह्मदेश, बङ्गाल, आसाम, सिन्ध और पश्चिमोत्तर भारतकी परिस्थिति अशान्त हो

उठेगी। शत्रुके आक्रमण एवं गृह कलह (साम्प्रदायिक झगड़े लूट मार) से प्रजा त्रस्त रहेगी। कांग्रेस तटस्थ उदासीन वृत्ति धारण करेगी। कांग्रेसी नेताओंमें मत भेद पड़ेगा और सम्भव है कि इस वर्ष कांग्रेसकी बागडोर महात्मा गांधीजीके हाथसे निकल जावे। गांधीजीकी अहिंसाका मूल्य बहुत घट जायगा। शासकों पर भयङ्कर आपत्ति आवेगी। भारतके वर्तमान वायसराय महोदयको यूरोप या हिन्दसे कहीं बाहर परामर्शके लिए जाना पड़ेगा और पुनः भारतकी बागडोर इन्हींके हाथमें आनेका योग प्रतीत होता है। भारतके कुछ बड़े २ देशी राज्य अपनी अपनी सैन्यका एकीकरण करके राष्ट्ररक्षार्थ एक विशाल सेना जुटावेंगे। इसका सेनापतित्व भी भारतके एक बड़े हिन्दू महाराजा ही करेंगे।

मार्चसे सिन्धमें विदेशी आक्रमण अथवा साम्प्रदायिक सङ्घर्षके कारण स्थिति बहुत भयानक होगी। इसी माससे मुस्लिम-लीगका अस्तित्व भी भयङ्कर स्थितिमें पड़ जायेगा। कई प्रभावशाली मुसलमान लीगसे अलग हो जावेंगे। मईके अनन्तर मुसलमानों और गुण्डोंके आतङ्कसे भारतमें बहुत अशान्ति उत्पन्न होगी। सिक्खों और मुसलमानोंका वैमनस्य भी उग्ररूप धारण करेगा। हिन्दू महासभा विशेष बल पकड़ने लगेगी। भारतके बन्दरगाहों और सीमाप्रान्तों पर भय उपस्थित होगा, परन्तु शासकोंकी सावधानीसे अधिक हानि न होने पावेगी। जूनके लगभग ही इंगलैण्डसे कुछ गोरे अधिकारी भारतका वातावरण देखने और इस भयङ्कर परिस्थितिमें कैसी सावधानीकी नीति बरती जाय– इसका अध्ययन करनेके लिए भारत आवेंगे और वे भारतके सभी मुख्य २ दलके प्रतिनिधियोंसे मिलेंगे।

भारत के ३-४ राजनैतिक और धार्मिक महा पुरुषोंके लिए यह वर्ष भयावह है। योग्य नेताका नेतृत्व न मिलनेसे भारतको महान् आपत्तियोंका सामना करना पड़ेगा। भारतके देशी नरेश बृटिश गवर्नमेंटकी पूर्ण सहायता करेंगे, परन्तु शासकोंकी नीतिसे उनका अन्तस्तल दुखी रहेगा। इस वैमनस्यको ब्रिटिश गवर्नमेंटका कोई बड़ा विश्वास-पात्र अधिकारी बीचमें पड़कर दूर करनेका प्रयत्न करेगा। नेपालका वातावरण भी अशान्त रहेगा, वह भी पूर्णरूपेण सैन्य संगठन करके उत्तर पश्चिममें अपनी सेना भेजेगा।

इस वर्ष खण्ड वृष्टि होगी। गुजरात काठियावाड़ कच्छमें आरम्भमें वर्षाकी न्यूनता रहेगी। मईसे जुलाई पर्यन्त वायुका उपद्रव अधिक होगा। भयानक आंधी तूफानोंसे समुद्रमें चलनेवाले जहाजोंको भी हानि पहुंचेगी। अगस्त सितम्बर अक्टूबरमें प्रायः वर्षा अच्छी हो जावेगी। उत्तर पश्चिम भारतमें वर्षाकी न्यूनता रहेगी। जुलाई या अगस्तमें भारतकी ३ बड़ी नदियोंमें भयङ्कर बाढ़ आवेगी। इस वर्ष भारतके किसी भागमें टिड्डीदल (शलभा) से भी खेतीको हानि पहुंचेगी। बाजार भाव अव्यवस्थित रहेंगे। देशके प्रत्येक भागमें थोड़े बहुत प्रमाणसे ज्वर, विशूचिका, सन्निपात, उदरशूल, हृद्रोग, अतिसार आदि रोग उत्पन्न होंगे जिससे प्रजाका स्वास्थ्य ठीक न रहेगा। स्त्रियों और बालकों की मृत्यु संख्या अधिक होगी।

शेष फल वही होगा जो हम "श्रीस्वाध्याय" के गताङ्कमें सम्वत् २००० वि० पर्यन्त संसारके भविष्यमें लिख चुके हैं। तात्पर्यतः यह वर्ष भारतके लिए भी श्रेयस्कर नहीं है। भावी आपत्तियोंका सामना करनेके लिए गताङ्कमें हमने जिन बातोंकी ओर सङ्केत किया है–उन पर यदि भारत आरूढ़ होगा तो अपना आदर्श स्थिर रख सकेगा।



कुम्भपर्व पर आर्थिक दृष्टि



[श्री १०८ आचार्यचरणोंने कुम्भपर्व पर जो विचार लिखे हैं; इन पर आशा है पाठक अवश्य ध्यान देंगे। इस बार तो प्रयागकुम्भके यात्रियोंको पहलेसे द्विगुण व्यय और द्विगुणित ही कष्ट उठाना पड़ेगा। क्योंकि रेलवेका सुप्रबन्ध नहीं है; महायुद्धके कारण गवर्नमेंट भारतके कोने-कोनेसे इतने बड़े जनसमूहको रेलद्वारा नहीं पहुंचा सकती। इसीलिए इसबार उसने पहले कुम्भ महामेलोंकी भांति न्यून भाड़ेवाले रिटर्न टिकट न करके प्रयागराजके लिए ड्यौढ़ा दुगुणा किराया बढ़ा दिया है; ताकि अधिक यात्री प्रयाग पहुंचनेका प्रयत्न ही न करें। मोटर लारियोंमें यात्रियोंका अत्यधिक यातायात होनेसे दुर्घटनाएं होना भी सम्भव है। फिर वहां यात्रियोंको खानपानकी आवश्यक वस्तुएं शुद्ध रूपमें नहीं मिल सकेंगी; जो मिलेंगी भी उनका मूल्य बहुत अधिक होगा। ऐसी दशामें यह कुम्भ निर्धन भारतको बहुत महँगा पड़ेगा। ऐसे अवसर पर धर्मप्राण भारतीय जनताको हम तो यही सलाह देंगे कि इस पर्वके दिन अपने अपने स्थान अथवा किसी समीपके तीर्थ पर जाकर, जो द्रव्य प्रयाग कुम्भ पर लगाना था वही द्रव्य या उसका कुछ अंश ही देश काल पात्रका विचार करके राष्ट्र-हितके किसी कार्यमें लगा देना उनके लिए अधिक श्रेयस्कर सिद्ध होगा। —सम्पादक]

भारतवर्षमें पर्वोंका विशेष महत्त्व प्राचीनकालसे ही है। यों तो सारेसंसारमें ही पर्वोंका महत्त्व होताही है। किन्तु पर्वदिन पर उत्सव मनानेका प्रकार अलग अलग होता है। भारतवर्ष अधिकतर धार्मिक दृष्टिको ही महत्त्व देता आया है। यों तो पर्व साधारणतया सुखकालका नाम है। पर्वशब्दकी व्याख्या करते समय प्राचीन आचार्योंने पर्वशब्दका अर्थ "कामना पूर्ण करनेवाला समय" ऐसा किया है। जिस समय किसी भी प्रकारकी कोई सुख प्राप्ति होती है, वह समय सभी प्राणिमात्रको अच्छा लगता है, इसी कारण उस समयमें लोग उत्सव मनाया करते हैं। पर्वके सम्बन्धमें विशेषरूपसे हमने अपने विचार श्रीराष्ट्रालोककी—

तेषु तेषु च पर्वसु पर्वमाहात्म्यकोविदाः।
पर्वेतिहासं सम्पूर्णं श्रावयेयुः स्वराष्ट्रियान्॥

इस कारिकाके "श्रीराष्ट्रसञ्जीवनभाष्य" में प्रकट किये हैं। अस्तु।

इस वर्ष एक महान् पर्व जोकि प्रयागराजमें माघ कृष्णा अमावास्याको आरहा है, इसके विषयमें पाठकों को कुछ बतलाना है। प्रत्येक पर्व पर पर्वके महत्त्व-ज्ञानके अनुरूप लोग एकत्रित होकर उत्सव मनाया करते हैं। हम पहले लिख चुके हैं कि भारतमें पर्वों पर अधिकतर धार्मिक दृष्टिसे ही विचार किया जाता है। धर्मप्राण देशोंमें ऐसा होना स्वाभाविक ही है। धार्मिक दृष्टिसे पर्वों पर उत्सव मनाने परभी आर्थिक हानि लाभ नहीं होते ऐसा कहना सत्यका अपलाप तथा आत्मवञ्चना मात्र होगा। कुम्भपर्व प्रयागराजमें १२ बारह वर्षके अन्तरसे आया करता है। उसका समय वृषराशिका बृहस्पति और मकरराशिका सूर्य इस प्रकार धर्मशास्त्रियोंने लिखा है। कई धर्मशास्त्रियों का मत है कि 'मेषराशिका बृहस्पति और मकरका सूर्य'हो तब यह कुम्भ पर्व प्रयागराजमें हुआ करता है। किन्तु हमारे देखते प्रयागराजके जितने भी कुम्भ हुए वे सब वृषराशिस्थ गुरुमें ही हुए, अस्तु। वर्तमान समयमें भारतीय सभी प्रकारके पर्वोंमें लोगोंके एकत्रित होने की दृष्टिसे सबसे बड़ा पर्व यह कुम्भ पर्व ही है। प्रयागराजमें तो करोड़ करोड़ पर्यन्त जनता एकत्रित होजाती है। अब देखना यह है कि इस प्रकार इतने बड़े जनसमूहके एकत्रित होनेसे आर्थिक हानिलाभ राष्ट्रको क्या २ होते हैं? धार्मिक दृष्टिसे तो पुण्य-प्राप्ति, यही विशेष है। आगे किसी लेखमें धार्मिक दृष्टिसे विचार करेंगे। इसी प्रकार कामिक दृष्टिसे भी विचार कभी आगे किया जायगा।

जनसमूह एकत्रित अधिकसे अधिक वहां होता है जहां आने जानेका, रहने-सहनेका, खाने-पीनेका तथा अर्थ प्राप्तिका सुभीता अधिकाधिक होता है।

इसके अतिरिक्त भी लोगोंके एकत्रित होनेके कई कारण हैं; परन्तु उनपर यहां विचार नहीं किया जायेगा।

पाठक वृन्द ! जब जब हम "दानमेकं कलौयुगे" इस वाक्यको सुनते हैं तो हमें भी ऐसी इच्छा उत्पन्न होती है कि हम भी अधिकसे अधिक दान करें। इसी प्रकार प्रत्येक भारतीय पुरुषका हृदय दान करनेके लिए अपनी शक्तिसे भी अधिक अभिलाषा निरन्तर रखता है। उसीका यह परिणाम है कि कुम्भ जैसे पर्व पर भारतीयोंके करोड़ों रुपये इधर से उधर हो जाते हैं। पुण्य लाभकी अपेक्षा रखनेवाला प्रत्येक समय यदि "दानमेकं कलौयुगे" के साथही साथ "देशे काले च पात्रे च" इस भगवद्वाक्यको तथा अपने राष्ट्रको ध्यानमें रक्खे तो भारत आज जैसा निर्धन नहीं रह सकता। कुछ कारणों पर थोड़ा विचार करिये। आजकल रेलगाड़ी तथा मोटरके चलनेसे यात्रियोंको सैकड़ों कोस इधरसे उधर पहुंचाते कुछ भी चिर नहीं लगता। इसी कारण आजकल घोड़ागाड़ी, बैलगाड़ी आदिसे प्रायः कोई भी यात्री यात्रा करनेको तैयार नहीं, फिर पैदल तो किसने जाना। हमारे प्राचीन भारतीय महर्षियोंने तो सबसे अधिक पुण्य पैदल यात्रा करनेवालेके लिए ही लिखा है। इसका कारण केवल यह नहीं है कि उस समयके अनुसार बैल या घोड़ा आदि प्राणियोंको कष्ट देनेसे पाप होता है यही मात्र। जिसकी श्रद्धा अधिक होगी वह धर्माचरण करते समय उतना ही अधिक कष्ट सहनेको कटिबद्ध रहेगा। किन्तु आजकल कुम्भके मेलेमें जानेवालोंमें धर्मप्राप्तिकी दृष्टिकी अपेक्षया मेलेसे मनोरञ्जनकी अपेक्षा अधिक रहती है। इसी कारण अज्ञ लोग इस मनोरंजन के ही लिए पैसेको पानीकी भांति बहादेते हुए मनमें तनिक भी नहीं सकुचाते। बातोंमें तो धार्मिक चर्चा ही अधिक चलाते हैं, अस्तु।

अब आप विचार करिये; इसका परिणाम क्या होगा ? कुम्भमें रेलगाड़ियोंको ही करोड़ों रुपये भाड़ेसे प्राप्त हो जाते हैं। राष्ट्रकी आर्थिक दृष्टिसे यदि देखा जाय तो इन करोड़ों रुपयोंमेंसे एक छदाम भी भारतके पल्ले नहीं पड़ेगा। सबका सब भारतसे बाहर सातसमुद्र पार पहुंच जाएगा। मोटरसे भी कुछ न कुछ भारतसे बाहर जाता ही है। कारण, मोटर जब भी मोल लेनी हो तो बाहरसे ही आयेगी और उसका भी मूल्य लाखों करोड़ोंकी संख्यामें विदेशोंमें चला जा रहा है। क्या प्रत्येक कुम्भ पर इस प्रकार करोड़ों रुपये विदेशमें चले जानेसे भारत दरिद्र नहीं होजायगा ? अब देखिये इसके अतिरिक्त यात्रियोंको खाना पीना आदि तो करना ही पड़ता है। इसी कारण व्यापारी लोग अर्थप्राप्तिके लिए यात्रियोंको सुविधा पहुंचानेके छद्मसे यात्रियोंसे दुगुने चौगुने वस्तुओंके भाव करके पैसे लूटते हैं। किन्तु धर्म-भीरू भारतीय यात्री उस समय महान् मूर्खकी भांति यात्रामें होनेवाले सैंकड़ों कष्ट; धनकी हानि आदि बातोंका कुछ भी ध्यान नहीं करता। हा ! इसी कारण उसका राष्ट्र कङ्गाल हो जाता है तथा दानपुण्य करनेकी भी दुबारा उसे सामर्थ्य नहीं रहती। क्या भारतीय अभी भी इस ओर कुछ ध्यान देंगे ? हमतो यह कहते हैं कि सबसे प्रथम किसी भी पर्वमें यात्रीने पुण्य प्राप्तिके लिए जाना है तो यह ध्यानमें रक्खे कि उसका एक भी पैसा राष्ट्रसे बाहर न जाने पावे। परतन्त्र राष्ट्रमें ऐसा होना अवश्य ही अति कठिन है, किन्तु प्रयत्न करनेसे अरबों रुपये बच सकते हैं।

हमारा कहना यह नहीं है कि लोग तीर्थों पर न जांय। किन्तु वे भारतीय प्राचीन महर्षियोंके आदर्श पर चलें तो उनका महान् कल्याण होगा। इस लिए हम कई दृष्टियोंसे विचार करनेके अनन्तर जिस निर्णय पर पहुंचे हैं उसका क्रम नीचे लिखते हैं :—

(१) किसी भी तीर्थ पर जाना हो तो पैदल जाओ।

(२) जो पैदल चलनेमें असमर्थ हैं वे घोड़ागाड़ी बैलगाड़ी पालकी आदि से यात्रा करें।

(३) दान करते समय देश काल पात्रका बहुत ध्यान रक्खें।

(४) जो लोग इन नियमोंको जानबूझकर अथवा अनजाने पालन नहीं कर सकते हों वे लोग अपने २

त्रैमासिक समर्घ-महर्घ विचार

अर्थात्

पौष शु० १० से चैत्र शु० ६ पर्यन्त भावोंकी घटाबढ़ी पर ज्योतिशशास्त्रसे विचार

(लेखक—दैवज्ञरत्न श्री पं० आनन्दस्वरूपजी ज्योतिषी)



[व्यापारियोंके लिए विद्वान् लेखकने यह लेख बड़े विचार पूर्वक लिखा है। आप इस विषय—तेजी मन्दी—के पूर्ण अनुभवी हैं। आशा है "श्रीस्वाध्याय" के पाठक (व्यापारी-वर्ग) आपके विचारोंसे अवश्य लाभ उठावेंगे। श्रीस्वाध्यायके प्रत्येक अङ्कमें आपके विचार प्रकाशित हुआ करेंगे। —सम्पादक]

रुई

पौष शुक्ला १ शुक्रवार १६ दिसम्बर १६४१ से पौष शुक्ला दशमी रविवार २८ दिसम्बर १६४१ तक रुख मंदेकी ओर रहेगा। इस मंदेमें माल खरीदना अच्छा रहेगा, क्योंकि पौष शुक्ला ११ सोमवार २६ दिसम्बर १६४१ से बाजारका रुख तेजीकी तरफ हो जावेगा और माघ कृष्णा ५ बुधवार ७ जनवरी १६४२ से माघ शुक्ला ११ मंगलवार २७ जनवरी १६४२ तक एकदम २५-३० टकेकी तेजी आजावेगी। इस तेजीमें माल बेचना चाहिए। माघ सुदि १२ गुरुवार २६ जनवरी १६४२ से फाल्गुण बदि ७ रविवार ८ फरवरी १६४२ तक १२-१५ टकेकी मंदी रहेगी। फागुन बदि ६ सोमवार ६ फरवरीसे फागन सुदि २ मंगलवार १७ फरवरी तक बाजारका रुख तेजी पर रहेगा। फागन सुदि ३ बुधवार १८ फरवरी से चैतवदि १२ शनिवार १४ मार्च तक रुईका रुख घटा-बढ़ी होकर मंदेकी ओर रहेगा। हर तेजीके उछालेमें बेचना अच्छा है। चैत्र कृष्णा अमावस्या १६ मार्चसे चैत्र शुक्ला दशमी शुक्रवार २७-३-१६४२ तक बाजारमें फिर तेजीका असर रहेगा और १०) के करीब तेजी आजावेगी।

(१) नोट—रुईके बाजारमें घटाबढ़ी इन तीन महीनोंमें बहुत रहेगी, किन्तु अन्तमें रुख तेजीकी ओर ही रहेगा। जो व्यापारी थोड़ा काम एक लाइन पर करेंगे वे अच्छा लाभ उठावेंगे।

(२) नोट—पौष कृष्णा प्रतिपदासे माघ कृष्णा अमावस्या तक मूंगफली, मूंग, जौ, मक्की, कालीमिर्च, मीठा (गुड़ शक्कर खांड) में अधिक तेजी रहेगी, अतः इन वस्तुओंका संग्रह करना चाहिये।

(३) नोट—माघ शुक्ला १ से चैत्र कृष्णा अमावस्या तक हींग, लोहा, एरंडा, तथा धातुकी वस्तु अधिक तेज रहें और मीठा मंदा रहेगा।

गेहूं अलसी

पौष शुक्ला १ शुक्रवार १६ दिसम्बर १६४१ से पौष शुक्ला १२ मंगलवार ३० दिसम्बर १६४१ तक गेहूं अलसीका भाव मंदेकी ओर रहेगा। इस मंदेमें माल खरीद करना चाहिये। पौष सुदि १३ बुधवार ३१ दिसम्बर १६४१ से माघ कृष्णा ७ शुक्रवार ६-

---

ग्राम, नगर और प्रान्तमें ही रहकर राष्ट्रके धार्मिक सामाजिक सुव्यवस्थाएँ शिक्षा आदिकी उन्नति एवं सुव्यवस्था करते हुए राष्ट्रको प्रत्येक प्रकारसे स्वतन्त्र करनेका प्रयत्न करें। इससे उनको जो पुण्य होगा वह उन सैंकड़ों कुम्भोंसे अधिक होगा।

यद्यपि आर्थिक दृष्टिसे कुम्भ पर पूरा २ विचार करके उसे लेख बद्ध किया जाय तो एक बड़ी पुस्तक बन सकती है। इस स्वल्पकाय लेखमें ये अति संक्षिप्त विचार आर्थिक दृष्टिसे विचार करनेके लिए सूचना मात्र ही हैं। विशेष यथावकाश आगे कभी लिखा जायगा।

—अ० वा० आचार्य

जनवरी १६४२ तक रुख तेज रहे। माघ कृष्णा ८ शनिवार १० जनवरी १६४२ से माघ शुक्ला ४ मंगलवार २० जनवरी १६४२ तक गेहूं में ।=) अलसी में ॥) तेजी रहेगी। माघ शुक्ला ५ बुधवार २१ जनवरी १६४२ से माघ शुक्ला ११ बुधवार २८ जनवरी १६४२ तक घटाबढ़ी, रुख मंदा। माघसुदि १२ ता० २६ जनवरी १६४२ से माघ शुक्ला पूर्णिमा रविवार १ फरवरी १६४२ तक गेहूंमें अचानक ≡) अलसीमें ।) मंदा रहे। फाल्गुण कृष्णा १ चन्द्रवार २ फरवरीसे फाल्गुण कृष्णा १३ शुक्रवार १३ फरवरी तक गेहूँ अलसीमें ।=) के करीब तेजी रहे। फाल्गुण कृष्णा १४ शनिवार १४ फरवरीसे फाल्गुण शुक्ला ३ बुधवार १८ फरवरी १६४२ तक घटाबढ़ी होकर रुख तेजी रहे। फाल्गुण शुक्ला ४ गुरुवार १६ फरवरी १६४२ से बाजारका रुख मंदेकी तरफ हो जावेगा और चैत्र कृष्णा अमावस्या सोमवार १६ मार्च १६४२ तक गेहूं अलसीके बाजारोमें काफी मंदा आजावेगा। इस समयमें हर बड़े बाजारमें माल बेचना अच्छा रहेगा। फिर चैत्र शुक्ला १ मंगलवार १७ मार्च १६४२ से चैत्र शुक्ला दशमी शुक्रवार २७ मार्च १६४२ तक सामान्य घटाबढ़ी होकर रुख तेजी-की ओर रहेगा।

नोट—५ जनवरी से १७ फरवरी तकके समयमें कई जगह पर खयालेके रौले आदि बातें उड़ेंगी और अकस्मात् तेजीके उछाले आवेंगे, अतः व्यापारियोंको चाहिये कि बहुत विचारपूर्वक थोड़ा काम करके लाभ उठावें।

इस अङ्कमें समयका अवकाश न मिलनेके कारण अधिक विस्तृत रूपमें नहीं लिखा जा सका है। आशा है आगामी अंकसे दैनिक तेजी स्टै० टा० के अनुसार और व्यापारिक लाइनके अमूल्य नियम तथा व्यापारिक विचारसे भी मंदी तेजीका विचार पाठकोंकी सेवामें भेजनेका उद्योग करूंगा।



व्यापारका भावी रुख

[लेखक—श्री पं० बिहारीलालजी दैवज्ञ]

[पं० बिहारीलालजी दैवज्ञ ज्योतिश्शास्त्र और अपने अनुभव द्वारा प्रत्येक वस्तुका महर्घ-समर्घ (तेजी मन्दी) बतलानेमें सिद्धहस्त हैं। रुईके तो आप विशेषज्ञ माने जाते हैं। अपनी इस विद्याके बल पर ही आपने बम्बई जैसे विशाल नगरमें पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त की है। "श्रीस्वाध्याय" पर आपका विशेष स्नेह है। इस अङ्कमें आपने बहुत कुछ उपयोगी सामग्री व्यापारियोंको देनी थी। किन्तु आप अकस्मात् रुग्ण हो गये; अतः अधिक नहीं लिख सके। हम आपकी "भावी-रुख" के कुछ विचार (अक्षरशः जैसेके तैसे ही) व्यापारी पाठकोंके लाभार्थ यहां दे रहेहैं। —सम्पादक]

माघ कृष्ण २ रविवार ता० ४ जनवरी ८ बजे दिनसे एक सप्ताहमें

योग—मकरका बुध शुक्र, बुधका अतिचारी होना, गुरु शुक्र व शनिका वक्र चलना। फल—भावमें तरह तरह के रङ्ग पलटेंगे।

वेध—ग्रहोंकी जो मंशा अब तक रुकी हुई थी वह इस सप्ताहमें प्रकट होगी, और इसका नाम होगा तेजी। अतएव रुई ८) १०) टका; चांदी पाट एरंडा मूंगफली १) १।) टका, सोना हैसियन, अलसी गेहूं ≡) ।) तेज होगा।

सारांश—सन् १६४२ के आरम्भके मुहूर्त्तका सौदा माल खरीद कर सन्तोषप्रद मुनाफाके साथ बेचनेका व्यापार करना ठीक जँचता है।

माघ कृष्ण ८ शनिवार ता० १० जनवरी ६ बजे रातसे एक सप्ताहमें

योग—गुरु शुक्र शनि तीन ग्रहोंका वक्रावस्थामें

चलना, बुधका पश्चिममें उदय होना, सूर्यका मकर राशिमें आना, कृष्णपक्षकी तिथि टूटना। फल—लड़ाई के लिए तसल्लीजनक समाचार मिले, वस्तुके भावमें अचानक ही नया रोला आना मालूम देता है।

वेध—ग्रहोंका इरादा बदल गया है जो हाल हकीकत गत १-२ सप्ताहमें हुई उससे उल्टी चाल यहां होगी। मतलब पहले तेजी लिख आये हैं मुमकिन है यहां मन्दी हो जाय, और रुई ८), १०) टका, चांदी पाट एरंडा मूंगफली १॥) २) टका, अलसी, गेहूं, सोना, हैसियन ।) ।=) की तादादमें फेरफार होते घटने लगता है।

सारांश—तेजी राशि व्यापारियों! पोतेका सौदा गत सप्ताहके उछालेमें काट, वही डबल बेच देना और यहां इस मौके तसल्लीके साथ खरीद करें। नफा जरूर उठाओगे।

माघ शुक्ल १ शनिवार ता० १७ जनवरी ९ बजे दिनसे एक सप्ताहमें

योग—धनिष्ठाका बुध, चन्द्रदर्शन द्वितीया रविवारको होना, पञ्चक ठण्डी रातमें लगे हैं; फल—भावोंके मुताल्लिक मामला ही ढीला रहेगा।

वेध—इस सप्ताहमें भी ग्रहोंकी राय मन्दीके तरफ की है, आंकड़ा उसी तादादमें समझें जितना गत सप्ताहमें लिख आये हैं।

सारांश—व्यापार प्रत्येक उछालेमें माथे बेचनेका करते हुए, आई-मन्दीके रियक्शनमें नफाके साथ खरीदते रहें।

माघ शुक्ल ७ शुक्रवार ता० २३ जनवरी ११ बजे रातसे एक सप्ताहमें

योग—बुधका कुम्भ राशिमें आना, शनिका मार्गी होना, शुक्रका अस्त होना, फल—रुई चांदीमें मोटी घटा बढ़ी चले। काटन व सिल्वरके सौदागरों! यहां व्यापार करनेका अच्छा चान्स है।

वेध—इस सप्ताहकी ग्रहगणना देखते, काफी परिवर्तन हुआ है अतएव रुई १०) १५), चांदी एरंडा मूंगफली पाट १॥) २) टका, सोना, हैसियन अलसी गेहूँ ।) ।=) की तादादमें घटाबढी होगी।

सारांश—इस घटाबढीके पहले ही नजराणा लगाना अच्छा है। तेजी मन्दी खानेवाले व्यापारियों! काम बहुत सावधानीसे करना।

माघ शुक्ल १३ शुक्रवार ता० ३० जनवरी १ बजे रातसे एक सप्ताहमें

योग—बुध वक्री होकर पश्चिममें अस्त हुआ, शुक्रका उदय होना, गुरु मार्गी हुआ, फल—रुई चांदी के भावमें अचानक ही मोटा पल्टा होगा। होशियार!

वेध—इस सप्ताहके ग्रह घटबढकी राय देते हुए भी असर तेजीका बतायेंगे, और रुई ८) १०) टका चांदी पाट एरंडा मूंगफली, १) १।) टका, सोना हैसियन अलसी गेहूं ≡) ।) की तादादमें बढते हुए मालूम देंगे।

सारांश—यहके गत सप्ताहमें ही माल पोते करने का संकेत कर आये हैं, खरीद किया हुआ माल इस मौके बेचकर बाजारसे अलग होजाओ।

फाल्गुन कृष्ण ४ गुरुवार ता० ५ फरवरी १२ बजे रातसे एक सप्ताहमें

योग—बुध वक्रावस्थामें मकर पर आया है, कृष्ण पक्षकी तिथि टूटी है। फल—अनाज व चांदी के लिये विशेष घटाबढी होना संभव है।

वेध—इस सप्ताहमें दोनों तर्फ ऊँचे नीचे भाव चलेंगे और आंकड़ेके हिसाबसे रुई १०) १२) टके, चांदी पाट एरंडा मूंगफली, १) १।) टका, सोना, हैसियन, अलसी, गेहूं ।) ।=) की तादादमें फेरफार लेंगे।

सारांश—उछालामें बेचकर मन्दीकी लाईनसे व्यापार करना ठीक मालूम देता है।

मकर सक्रान्ति और माघ मासका व्यौरा

(ता० १४ जनवरी से १३ फरवरी तक)

ग्रह गणितका प्रकरण देखते वस्तुके भावमें एक तर्फ कोई बात मालूम नहीं देती। योगायोगसे साधा-

रण घटबढके साथ भाव नरमाईके तरफ चालू रहे तो ताज्जुब नहीं। लेकिन ग्रह युद्ध और बाण-वेधसे रुईके भावमें मोटी तेजी होना पाया जाता है।

सूचना—जब अन्य वस्तुका तात्पर्य मन्दीके तर्फ जाता है, ऐसी स्थितिमें रुईके भावमें मोटी तेजी आना, व्यापारिक सिद्धान्तसे भिन्न पड़ जाता है, द्वयं यहां रुईके पाक आनेका भी समय चालू है, इस तरह द्वन्द्व समस्यामें कोई एक रास्ता काम देगा। ऐसी संदिग्ध स्थितिमें यही कि अगर रुई असलमें तेजी हो जाय तो और वस्तु भी तेजी समझना, और अन्य वस्तु मन्दी जाय तो रुईका तेजी मानना नहीं जँचता। कोई व्यापारी यह न समझें कि दुमुखी बात लिखी, लेकिन ज्योतिष व व्यापारिक सिद्धान्तके तत्वको प्रगट किया है।

फाल्गुन कृष्ण १२ गुरुवार ता० १२ फरवरी २ बजे दिनसे एक सप्ताहमें

योग—चन्द्रदर्शन सोमवारको होना, बुध पूर्वमें उदय हो रहा है। फल—चलती तेजीमें अचानक ही मन्दीका झोला आना प्रतीत होता है।

वेध—इस सप्ताहमें ग्रहोंकी मंशा साधारणतया मन्दीके तर्फमें है और रुई ८) १०) टका, चांदी, पाट, मूंगफली, एरंडा १) ।॥) टका, सोना, हैसियन, अलसी, गेहूं ≡) ।), की तादादमें घटने लगता है।

सारांश—गत सप्ताहसे ही मन्दीका इसाराकर आये हैं। अतएव हर ऊंचे भावमें बेचकर घटे भाव नफाके साथ सोदा क्लीयर करते रहें।

फाल्गुन शुक्ल ४ गुरुवार ता० १९ फरवरी ५ बजे प्रातः से एक सप्ताहमें

योग—बुधका मार्गी होना, मंगलका वृष राशिमें आना। शुक्र मार्गी हुआ है। फल— रुई व चांदीके लिए अच्छी घटा बढ़ीकी सूचना है।

वेध—ग्रहोंका रुख पलटा है और मंशा हर वस्तु के भाव तेजीकी ओर चलावे ऐसा मालूम देता है।

सारांश—गत सप्ताहमें मन्दीके मौके पर माल खरीद इस समय उछालेमें नफेके साथ बेचना ठीक है।

फाल्गुन शुक्ल १० बुधवार ता० २५ फरवरी ६ बजे शामसे एक सप्ताहमें

योग—चन्द्रग्रहण पड़ा है और तीन ग्रह एक ही राशिमें इकट्ठे हुए हैं। फल—बहुतसी वस्तुओंके भाव में काफी घटबढ़ होगी।

चैत्र कृष्ण २ बुधवार ता० ४ मार्च ८ बजे प्रातःसे एक सप्ताहमें

वेध—ग्रह गणना देखते यहां रुईको आदिले हरेक वस्तुके भावमें अच्छी तेजी आएगी और रुई १०) १५) टके, चांदी, एरंडा, मूंगफली पाट १) १।) टका, सोना हैसियन अलसी गेहूँ ≡) ।) की तादादमें बढ़ेंगे।

सारांश-यह कि पहले हीसे सौदा घटे भाव खरीदी का करो और इस मौके की तेजीमें मुनाफा सहित सौदा क्लीयर करो।

चैत्र कृष्णा १० गुरुवार ता० १० मार्च १ बजे रातसे एक सप्ताहमें

योग—वृष राशिमें तीन ग्रहोंका संघर्ष, कृष्णपक्ष की तिथि क्षय होना मीनका सूर्य वगैरह-वगैरह संयोग हुए हैं। फल—विद्रोहके सूचक होते हुए व्यापारमें भी कई एक रंग पलटेंगे।

वेध—ग्रहयोग व गणितसे भावका रंग पलट मालूम होता है, अर्थ यह निकलाके घटाबढ़ी जरूर होगी। आंकड़ेकी तादाद पहले सप्ताहमें जहां तेजीकी दी है उसीका आंकड़ा समझिये।

कुम्भ संक्रान्ति व फाल्गुण मासका ब्योरा
(ता० १४ फरवरीसे १३ मार्च तक)

ग्रहगणना वश इस महीनेमें पहिला हिस्सा साधारण घटबढ़में निकलना विदित होता है और पिछला हिस्सा अच्छी तादादमें फेरफार लेगा। आंकड़े के रूपमें रुई ३०) ४०) चांदी पाट एरंडा मूंगफली १॥) २) टका, हैसियन सोना अलसी गेहूं ॥) ॥=) की संख्यामें अपना सीन दिखायेंगे। प्रथम मन्दीका

भारतकी अवनति और उसके मूलकारण

[लेखक—अर्थशास्त्रका एक छात्र]

—*❀❀❀*:—

विदेशियोंकी तो बात ही अलग रही, भारतवासी भी आज यह कहनेमें गर्वका अनुभव करते हैं कि—हमारा प्यारा भारतवर्ष एक कृषि-प्रधान देश है। किन्तु यदि गूढ़ दृष्टिसे विचार किया जाय तो "इस कृषि-प्रधान" शब्दमें ही गहरा विषाद-सिन्धु निहित है। इसी शब्दके साथ भारतवर्षकी अवनतिका सच्चा इतिहास सम्बन्धित है। इतिहासके मर्मज्ञ इस गूढ़ सत्यसे भली प्रकार परिचित हैं कि, किसी समय हमारा देश केवल कृषि-प्रधान ही नहीं, वरन् कला-कौशल, वाणिज्य-व्यवसाय आदि सभीका केन्द्र था। वह भारतके लिए स्वर्णयुग था। विदेशी लोग इसे "सोनेकी चिड़िया" के नामसे पुकारते थे—किन्तु खेद ! जबसे यह देश केवल कृषि-प्रधान ही रह गया, इसके सब गुण अवगुणोंमें परिवर्तित हो गये। सुख, समृद्धि, सौभाग्य, मान, गौरव तथा आत्मबल सब शनैः २ किनारा कर गये। जो भारत एक दिन सर्व-श्रेष्ठ और जगद्गुरुके पद पर अधिष्ठित था वह आज दीन हीन तथा शिष्य कोटिमें भी आने योग्य नहीं माना जाता। डाक्टर प्राणनाथ झाके शब्द "भीरुता, अनुदारता, अज्ञता, अस्वतन्त्रता तथा दरिद्रता कृषि-प्रधान देशमें ही अपना निवास-गृह बनाती हैं" एक प्रकारसे ठीक ही जँचते हैं। अलग अलग अपने अपने खेतों पर काम करनेसे कृषकोंमें सम्मिलन शक्तिका ह्रास हो जाता है, प्रमाद तथा भाग्यवादितादि दोष सदाके लिए घर कर बैठते हैं।

भारत कृषि प्रधान कैसे बना ?

चिरकालसे भारत कृषि तथा व्यवसाय प्रधान माना जाता था, जैसा कि आगेके अवतरणोंसे सिद्ध होता है—

प्रोफेसर वीवर—

"रुईका महीन कपड़ा बुनने, रंग बनाने, बहुमूल्य धातु सम्बन्धी वस्तु बनाने, इत्र आदि निकालनेमें भारतीयोंकी कार्यदक्षता प्रसिद्ध थी"—

—Indian Industrial Commission 1916-18. P.P. 295-96.

"मिस्रियोंके ४००० वर्षके पुराने मुर्दे भारतीय मलमलसे लिपटे पाये गये हैं। रोममें भी भारतीय पदार्थोंको मँगाया जाता था। यूनानी लोग भारतीय मलमल पर मस्त थे।"

—I bid.

"प्राचीन कालमें भारतका लोह-व्यवसाय प्रफुल्लित दशामें था। स्थानीय आवश्यकताओंकी पूर्तिके साथ २ विदेशमें भी लोहेके पदार्थ भेजे जाते थे। भारतका लोहा संसार प्रसिद्ध था। १५०० वर्ष पुरानी दिल्लीकी प्रसिद्ध लोहेकी लाठ भारतीयोंकी चतुरताको सूचित करती है।"

—Ranade's Eassys on Indian Economics.

"योरोपीय व्यापारी भयङ्कर कष्ट तथा विपत्तियोंको सहन कर महीन, खूबसूरत पदार्थोंको खरीदने भारतवर्ष आते थे।"

—Murray: History of India P. 27.

"१७८७ में अकेले ढाकासे ३० लाख रुपयेकी मलमल इङ्गलैंडको गई थी।"

ऊपर लिखे अवतरणोंसे यह भली प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि ईसाकी १८ वीं शताब्दी तक भारतकी उत्पादन तथा व्यावसायिक शक्तियोंका संसारमें बोल-बाला था। १८ वीं शताब्दीके उत्तरार्धमें भारतीय व्यवसायके सम्बन्धमें इङ्गलैण्डमें एक भारी हलचल

उत्पन्न हुई, जिसके फल स्वरूप १८१३ में भारतके बने कपड़ों पर इङ्गलैण्डमें इस प्रकार प्रतिशत राज्य-कर लगाया गया—

	पौं०	शि०	पैं०	
कैलिको पर	८१	२	११	प्रतिशत
रुई पर	०	१६	११	,,
रुईके कपड़े पर	८१	२	११	,,
ऊनी कपड़े ,,	८४	६	३	,,
मलमल ,,	३२	६	२	,,

—Prosperous British India by Digby Page 90.

प्रसिद्ध ऐतिहासिक विल्सनकी सम्मति है कि—"१८१३ तक भारतका माल अँग्रेजी मालसे ५० से ६० प्रतिशत तक सस्ता था, यही कारण है कि इस पर ७० से ८० प्रतिशत तक नाशक या बाधक करका प्रयोग किया गया। यदि ऐसा न किया जाता तो पैसले तथा मैनचैस्टरकी मिलें खड़ी न हो सकती।"

—Indian Industrial Commission 1916-18 P.P. 297-98.

यह धक्का भारतीय व्यवसायोंको नष्ट करनेके लिए कुछ कम न था। भारतीय कारीगर अपने अपने कलाकार्योंको छोड़ कृषिकी ओर बढ़ने लगे। किन्तु इतने पर भी भारतीयोंने रुई, बरफ़ तथा प्रेसके कामोंमें कुछ सफलता प्राप्तकी। किन्तु इनकी यह सफलता भी विदेशियोंकी नजरोंमें खटकने से न बची। १८८२ में भारतीय व्यवसायों पर ३॥ प्रतिशतका व्यावसायिक कर (Excise duty) लगा ही दिया गया। इतना ही नहीं ट्रेनोंका किराया भी ऐसा पेचीदा रक्खा गया कि—जिससे कच्चा माल विदेशोंमें आसानी और सस्तेमें जा सके। उदाहरणार्थ—

आगरा तथा दिल्लीसे १८६७ तक बम्बईको गेहूं का किराया १० आना मन था; वही १६०८ तक ७ आना १ पाई मन रह गया।

१८६० से १६१२ तक हाथरससे बम्बईको गेहूंका किराया १० आना मनसे ७ आना मन रह गया।

१६०५ में हाथरससे कानपुर तक गेहूंका किराया १ आना ८ पाई मन था, १६०६ में वही ३ आना मन हो गया।

जब्बलपुरसे बम्बई ६१६ मील दूर है। १८६६ तक यहांका गेहूंका किराया ६ आना ६ पाई मन था, १६११ तक यह घटकर ६ आना मन ही रह गया।

साथ ही जब्बलपुरसे कानपुर जो सिर्फ़ ३४७ मील दूर है यहांका गेहूंका किराया ६ आना ३ पाई मन ही रहा।

इसका स्पष्ट अर्थ है कि भारतीय गेहूं सीधा यूरोप जाय और भारतीय उसे न खा सकें। अन्य कच्चे मालोंके किरायेका भी यही हाल है। जैसे—

आगरासे करांची तक कच्चे चमड़ेका किराया १८६५ में १५ आना ६ पाई मन था, यह १६१२ तक ८ आना ४ पाई मन रह गया।

अम्बालासे करांची तक १८६१ में १ रु० ५ आ० ३ पा० था, १६१२ में यही केवल ६ आ० ११ पा० मन रह गया। साथ ही अम्बालासे कानपुर तक १८६४ में ७ आना ७ पाई था, वह १६१२ तक मुश्किलसे ६ आना ६ पाई ही हो सका।

अब पाठक स्वयं विचार करें कि जिस देशमें व्यवसायका इस प्रकार गला घुट रहा हो, वहांके निवासी यदि सब छोड़-छाड़कर कृषिका ही आश्रय न लें तो भला करें भी क्या? अतः यह स्पष्ट है कि भारत कृषि प्रधान बना ही नहीं वरन् उसे बननेको विवश होना पड़ा।

भारत दरिद्र कैसे हुआ

व्यवसाय तथा वाणिज्यके इस प्रकार नष्ट हो जाने पर भारतीयोंका एक मात्र आधार कृषि तथा उत्पादन ही रह गया। १८६१ से १६०० तक केवल १० ही वर्षोंमें लगभग आधे भारतीयोंको अपने २ व्यवसायोंको त्याग खेतीके काममें घुसना पड़ा, किन्तु वाम-विधातासे इतना भी सहन न हो सका और उनका एक मात्र अवशिष्टाधार भू-स्वामित्व भी उनके हाथसे छीन

लिया गया। भारतके भूमि, जङ्गल, खान आदि सभी पर सरकारने अपना स्वामित्व स्थापित कर लिया। साथ ही जैसा ऊपर बताया जा चुका है, भारतीय कच्चे मालको विदेशोंमें पहुँचानेके लिए और विदेशके पक्के (तैयार शुदा) मालको भारतमें लानेके लिए पूर्ण सुविधा प्रदान की गई। फलस्वरूप केवल सन् १९११ में ११॥ करोड़ रुपयेकी धातुएं विदेश गईं और २६॥ करोड़की धातु निर्मित वस्तुएं विदेशसे बनकर भारतमें आईं। यही दशा अन्य पदार्थोंकी भी रही। इसका परिणाम स्पष्ट है। राजकीय व्यय तथा शासकोंके गुलछर्रोंका समस्त भार जो अब तक विविध व्यवसायों पर पड़ता था, अब केवल कृषि पर ही आ पड़ा। अब पाठक स्वयं विचार करें कि भूमि वही, उसकी उत्पादनशक्ति वही. किन्तु उस पर निर्भर रहने वालोंकी संख्या पहिलेसे कई गुनी बढ़ गई तथा अन्य अपव्ययोंका भी समस्त भार जो अनेकों जगह पर बटा हुआ था, केवल कृषि पर ही आ पड़ा। साथ ही उपजको विदेशोंमें भेजनेके लिए सुविधा भी अधिकसे अधिक मिलने लगीं, फिर भी भला उस कृषि पर ही निर्भर रहने वाले दरिद्र न होते तो होते भी क्या? निदान भारतीय दाने दानेको मुंहताज हो गये। इतना ही नहीं "बुभुक्षितः किं न करोति पापं" के अनुसार हर प्रकारके अनाचार तथा कुरीतियोंने भारतमें अपना अड्डा जमा कर इस हरे भरे उद्यानको वीरान ही बना डाला।

राज्य कर

भारतवर्षमें गौतमधर्म सूत्रके अनुसार उपजका १/१० भाग, वशिष्ठ धर्मसूत्रके अनुसार १/६ भाग और मनुधर्मसूत्रके अनुसार १/१२ भाग राज्य करके रूपमें लिया जाता था। इसमें कभी भी वृद्धि नहीं होती थी। अकबरके कालमें यद्यपि राज्य कर अधिकसे अधिक १/३ भाग लेना निश्चित हुआ था, किन्तु जो वसूल होता था वह १/६ से कुछ भी अधिक न था। आधुनिक कालमें राज्य कर बंगाल प्रान्तमें २५ प्रतिशत, मद्रासमें ३३॥ प्रतिशत, बम्बईमें ३३ प्रतिशत, उत्तरीय भारतमें ५० प्रतिशतके लगभग लिया जा रहा है। यह लगान कृषकोंके लाभ पर नहीं वरन् उपज पर लिया जाता है। ऐसी स्थितिमें कभी २ तो यहां तक देखा जाता है कि कृषकको उपजका व्यय और लगान देने भरको उपज पूरी नहीं होती और कुछ न कुछ अपने पाससे देना पड़ता है।

भू-स्वामित्व

अपनत्वसे ही ममत्वकी उत्पत्ति है। जब तक किसी वस्तु पर अपनेपन की छाप होती है, उस पर ममता रहती है। उस ममताके कारण ही मनुष्य उसको सुन्दर, गुणयुक्त, फलद तथा श्रेष्ठ बनानेमें प्रयत्नशील होता है; उसके प्रति एक प्रकारका उत्साह रखता है। उत्साह ही उन्नतिका उद्गम माना जाता है। किसी वस्तुमें परायेपनका आभास मात्र हो जाने या उसके अपनत्वमें किन्हीं कारणोंसे अनिश्चितता उत्पन्न हो जानेसे उस परसे ममत्व हट जाता है, उसकी उन्नतिका उत्साह विलीन हो जाता है। ऐसा होते ही मानव जीवनके चिरशत्रु—निरुत्साह, आलस्य, अकर्मण्यतादि सभी अपना प्रबल प्रभाव जमा बैठते हैं।

एक समय था जब भारतीय अपनी प्यारी भूमि पर अपना स्वामित्व समझते थे "न भूमिः राज्ञो-धनम्"। इसीसे उस पर उन्हें ममता थी और विविध उपायों द्वारा उसको धन धान्यसे पूर्ण बनानेका उत्साह रहता था। किन्तु वह समय पलट गया, भारतीयोंका भू-स्वामित्व भी उनके हाथसे जाता रहा, उस पर एक मात्र शासकोंका ही स्वामित्व हो गया। यही कारण है कि भारतीयोंको ममत्व उस परसे हट गया और वे उसकी उन्नतिकी ओरसे भी उदासीन हो गये। जो वस्तु आज हमारे पास है, कल न जाने किसके पास होगी, ऐसी वस्तुकी उन्नतिकी ओरसे उदासीनता आजाना स्वाभाविक ही होता है।

विद्या का ह्रास

विद्याके बलसे ही भारत किसी समय जगद्गुरु कहलाता था। सिकन्दर जब यूनानसे भारत पर आक्रमण करनेके लिए प्रस्थान करता है तो अपने

(शेष पृष्ठ ६३ पर)

आड़ू की खेती

(लेखक—श्री सन्तराम शर्मा)

धातुकरन अरु बलधरन मुझसे पूछे जोय।
'फल' समान या जगतमें है नहिं दूसर कोय॥

फलोंके गुण

औषधियोंका एक साधारण गुण यह है कि वह आंतोंके कामको संयत रक्खें और अजीर्ण न होने दें। फलोंमें यह गुण होता है कि वह अजीर्ण को दूर करते हैं। इसी कारणसे फलोंका व्यवहार करना औषधियोंसे उत्तम है। फलोंमें इन्द्रिय जुलाब की भी शक्ति होती है। वृक्कों (गुर्दों)का मैल निकाल डालते हैं। गठियेके रोगीको भी फल बड़े लाभदायक होते हैं। खट्टे फल या जिनमें इन्द्रिय जुलाबकी शक्ति हो—रक्तविकारको शीघ्र दूर करते हैं। जिनकी पाचनशक्ति निर्बल हो, आंतें अपना काम न करें, हृदयमें गर्मी बढ़ गई हो, उन्हें ताजे फलोंका सेवन करना चाहिये। फलोंके व्यवहारसे शरीरकी कान्ति बढ़ती है। इसी कारण मनुष्योंको स्वयं ही उत्तम रीतिसे अपने घरोंमें फलोंको उत्पन्न करना चाहिए, इससे बहुत गुण होते हैं। जैसे इसके द्वारा अपने प्रिय जनोंके स्वास्थ्यकी रक्षा करना और इसको बेचकर धन कमाना। फलोंमें आड़ू भी एक बड़ा सुन्दर-स्वादिष्ट-वीर्यवर्द्धक पुष्टिकारक फल होता है। जो बड़ी सूक्ष्म रीतिसे उत्पन्न किया जा सकता है और शीघ्र ही फल देता है।

यह फल भारतवर्षके सभी प्रांतोंमें उत्पन्न होता है। परन्तु कई सज्जनोंको यह भी ज्ञान नहीं कि यह देखनेमें कैसा होता है। हम अपने पाठकोंको इसके विषयमें कुछ परिचय देना चाहते हैं। आड़ूके फल बड़े छोटे गोल और लम्बोतरे होते हैं। रंगमें श्वेत-पीत-रक्त और धब्बेदार होते हैं। परन्तु इनका स्वाद भिन्न २ होता है। प्रायः भारतवर्षमें जितने प्रकारके आड़के वृक्ष हैं वह सभी यहां हीके नहीं हैं; अपितु दूर २ के देशोंसे मंगवाकर लगाये जाते हैं। चार वर्ष हुए कि महाराजा पटियालाने केलेफोर्निया (U. S. A.) से आड़ू के वृक्ष मंगवाये—जो शिमला प्रांतमें सोलनके समीप लगवाये गये। वह वृक्ष अभी ६-७ फुटसे अधिक ऊंचे नहीं; परन्तु फलके भारसे उनकी टहनियां भूमि पर झुक जाती हैं। उनका फल बड़ा ही स्वादिष्ट है। इन फलोंको अमेरिकन आड़ू कहते हैं। मैं केवल इन्हींके विषयमें कुछ सूक्ष्म रीतिसे लिखता हूं।

आड़ू गर्म और सर्द दोनों स्थानों पर उत्पन्न किया जा सकता है। इसी कारणसे इसकी देशी (मैदानी) और पहाड़ी दो जातियां बनाई गई हैं। यह दोनों जातियां अपने २ स्थान पर लगानेसे अच्छा फल देती हैं। इसलिये इसके वृक्षको लगाते समय निम्न बातोंका अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

मैदानी आड़ू

१००० फुटसे लेकर १५०० फुटकी ऊंचाई तक अच्छा होता है। परन्तु पहाड़ी आड़ू २००० फुटसे लेकर ५००० फुट तककी ऊंचाई पर अच्छा होता है।

आयु

आड़ूके वृक्ष दो-तीन ही वर्षमें फल देने लग जाते हैं और इसकी आयु बीस वर्ष की होती है।

भूमिकी पहिचान

आड़ूके लिये भूरे रंगकी मिट्टी जिसमें रेतकी विशेषता अधिक हो होनी चाहिये। जिस भूमिमें जल खड़ा रहता हो और नाईड्रोजन आदि भी कमहो वहां पर अच्छा नहीं होता। इसके लिये ग्रीष्म ऋतु में कुछ अधिक गर्मी और जल, शिशिर ऋतुमें थोड़ी

सरदी चाहिये। आड़ू दो प्रकारके होते हैं। एक तो वह जिसकी गुठली पकने पर जुदाहो जाती है, इसको अंग्रेजीमें फ्रीस्टोन (Freestone) कहते हैं। दूसरे जिसकी गुठली जुदा नहीं होती, उसको अंग्रेजीमें क्लिङ्गस्टोन (Clingstone) कहते हैं। इनमें बहुतसी ऐसी जातियां हैं जिनको व्यापारी लोग सुखाकर दूर देशोंमें भेजकर बड़ा लाभ उठाते हैं।

प्रिय नवयुवकों! अपने पिताकी समस्त पूंजी व्यय करके पढ़कर यदि तुमने विदेशीकी नौकरी की और इसीमें तुमने अपना मान समझा तो यह तुम्हारी बड़ी भूल है। पढ़कर स्वतंत्रतासे धन कमानेमें केवल लाभ ही नहीं परन्तु मान भी है। आपने मिस्टर स्टोकका नाम सुना होगा, जिसने शिमला प्रान्तमें कोटगढ़के समीप अपना बाग लगाया और लाखों रुपयोंकी वार्षिक आय निकाल ली है, अस्तु। अमेरिकन आड़ू पांच विभागोंमें बांटे जाते हैं।

१ सोसर (Saucer) फल चपटा रसदार रंग श्वेत व रक्त धब्बेदार।

२ हनी (Honey) फल चोंचदार, मधु समान मीठा, रक्त वर्ण।

३ स्पेनिश (Spanish) रंग लाल, वृक्ष बड़ा, गर्म भूमिमें अच्छा होता है।

४ चायनीज क्लिङ्ग (Chinese Cling) रंग श्वेत-पीला, पतला छिलका।

५ परशीयन (Persion) सब प्रकारके रंग, पत्ते शीघ्र गिर जाते हैं।

इसके अतिरिक्त यह भी जानना चाहिये कि सुखाकर दूरदेशमें भेजने योग्य कौनसे आड़ू होते हैं और वह किस समय पकते हैं। दूर २ भेजने योग्य आड़ू मईसे सितम्बर तक पकते हैं। जैसे ऐलवर्टी और जे-एच-हेल बिना ही सुखाये भेजे जा सकते हैं, परन्तु लोवल और म्यूर यह सुखाकर भेजे जाते हैं। इसी प्रकार हम दोनों प्रकारके फलोंकी जातियोंको नीचे लिखते हैं और वह उसी प्रकार एकके पश्चात् दूसरा फल पकाते हैं। मेफलावर—ऐलेगजेन्डर, हेल्सअर्लीवेवकोक, स्ट्रोबैरी, अर्लीक्रोफोर्ड, ऐलवर्टी, अर्ली इम्पीरियल, रोचस्टर, लकन्सहनी, इंगलिश ग्लैंडी, जे० ऐच० हेल, फीलिप्स क्लिङ्ग, ऐडवर्ड-सेंटजोन और चौम्पीयन, इनकी पहचान (रंगरूप आदि) लेखके बढ़ जानेके कारण नहीं लिखी गई।

आड़ू के वृक्षको उत्पन्न करने और लगानेकी विधी

जब गुठलीसे उगा हुआ वृक्ष अंगुली समान हो जाता है, तब उसकी जाति बदलने के हेतु पैबन्द की जाती है। पैबन्द कई प्रकारसे की जाती है। जब पैबन्दवाला वृक्ष एक वर्षका हो जावे तो उसको उखाड़कर दूसरी जगह लगाते हैं। वृक्ष भी कई प्रकार से लगाये जाते हैं ' आड़के वृक्षोंमें पन्द्रह फुट से लेकर पच्चीस फुट तकका अन्तर होना चाहिये। एक बीघेमें बीस वृक्षसे अधिक नहीं लगाने चाहियें।

वृक्षोंकी प्रतिवर्ष छांग करनी चाहिये। परन्तु यह कार्य किसी अनुभवीसे करवाना चाहिये।

छांगसे लाभ

छांग करनेसे वृक्ष सुन्दर बनता है, फल शीघ्र देता है और फल भी अधिक लगते हैं। पुरानी सूखी टहनियां (जो वृक्षके लिये बड़ी हानिकारक होती हैं) उन्हें काट देनी चाहिए। छोटे वृक्षसे अधिक फल नहीं लेने चाहियें। अन्यथा वृक्षकी आयु शीघ्र क्षीण हो जाती है। फल हाथ द्वारा तोड़े जाते हैं, भूमि पर गिरा फल शीघ्र सड़ जाता है।

पके फलकी पहचान

जिस समय फल रससे परिपूर्ण हो गया हो और अंगुलीसे दबानेसे दबता हो उस समय खाने योग्य जानना चाहिये।

सूचना—आड़ू के वृक्षके रोग और चिकित्सा आदि लेखके बढ़नेके कारण नहीं लिखी जाती। यदि किसी सज्जनको आवश्यकता हो तो 'मैनेजर श्रीस्वाध्याय" द्वारा पूछ सकते हैं।

हेमन्त !



संस्कृत साहित्यसे परिचय रखनेवाले पण्डितगण कृष्णभट्टका पाण्डित्य भलीभांति जानते हैं। किन्तु वे लोग भी उनके कवित्वसे बहुत थोड़ा परिचय रखते हैं। तथा उनके ऐतिहासिक जीवन के सम्बन्धमें भी प्रायः अनभिज्ञसे ही हैं। जिन्होंने व्युत्पत्तिवादकी टीका कृष्णभट्टी तथा निर्णय-सिन्धुकी टीका कृष्णभट्टी देखी है वे लोग केवल नैय्यायिक अथवा धर्मशास्त्री ही उनको समझ बैठे हैं। उनका काव्य ग्रन्थ तो हमने भो कोई नहीं देखा; किन्तु मुक्तक श्लोक जो हमें कुछ प्राप्त हुए थे—उनमें से 'हेमन्तवर्णन' यहां हम दे रहे हैं। देखिये कितना मार्मिक तथा सुन्दर है।

चक्रे चण्डरुचा समं रणमसौ हेमन्तपृथ्वीपति-
र्येये तत्र जिता दिवाकरकरास्तेतेऽमुना तत्क्षणात्।
कान्तायाः कुचभूधरे निदधिरे मन्येऽहमेवं तदा
नो चेद्दीनकरः कथं दिनकरस्तप्तौ च तन्वीस्तनौ ॥

[इस हेमन्तपृथ्वीपतिने सूर्यके साथ जब युद्ध किया तब सूर्यके जिन २ करों (किरणों) को इसने जीत लिया उन २ को उसी क्षण इस हेमन्तराजने कान्ताके कुचरूपी पर्वतमें सुरक्षित किया। मैं तो ऐसा ही समझता हूं। अन्यथा हेमन्तसमयमें दिनकर दीनकर (निस्तेज) क्यों हो गया ? और तन्वी (सुकुमार स्त्री) के स्तन तप्त कैसे हुए ?]

पाठकवृन्द ! टीका टिप्पण तो साहित्य-रसिक लोग स्वयं ही कर लेंगे। हमने तो हेमन्तका एक चमत्कारपूर्ण वर्णन देखकर इस हेमन्ताङ्कमें दिया है। अधिक की आवश्यकता नहीं।

इसी हेमन्तके पवनके सम्बन्धमें प्राचीन एक आर्या भी हमें अत्यन्त रुचिकर जान पड़नेसे पाठकोंके लिए यहां दे रहे हैं। इसको प्रायः संस्कृतके सभी पण्डित जानते हैं। महान् विद्वान् अप्पय्य दीक्षितने अपने सुप्रसिद्ध अलङ्कार ग्रन्थ कुवलयानन्दमें दी हुई है।

सीत्कारं शिक्षयति व्रणयत्यधरं तनोति रोमाञ्चम्।
नागरिकः किं मिलितो ? नहि नहि सखि ! हैमनः पवनः ॥

[एक सहेली अपनी सहेलीसे कहती है कि—"यह तो स् स् स् (सीत्कार) करना सिखाता है और अधरोष्ठको क्षत-विक्षत करता है तथा रोमाञ्च उत्पन्न करता है।" इसपर दूसरी सहेली पूछती है कि—"कोई नागरिक मिला क्या ?" किन्तु चतुर नायिका अपनी सहेलीसे इसका उत्तर चतुराईसे यों देती है कि—"हे सखि ! ऐसी बात नहीं यह तो हेमन्त ऋतुके पवनकी बात है।"] चतुर नायिकाने कितना सुन्दर हेमन्त पवन का वर्णन नागरिकापन्हव द्वारा किया है। रसिक पाठक अधिक सब कुछ स्वयं ही जानते हैं।

भारतीय स्त्रियोंकी दशा

[लेखक—वैद्यभूषण आयुर्वेद विशारद राजवैद्य श्री पं० माधव शर्मा जी A.I.S.]

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः (मनुः)

यह थी भारतकी प्राचीन नारी महत्ता। नारीका महत्त्व तथा उसका दायित्व भारतने सबसे प्रथम समझा तथा उसे लक्ष्मी रूप माना था। परञ्च वर्तमान समयमें हमें जहां तक ज्ञात हुआ है उससे यही सिद्ध होता है कि सब देशोंसे अधिक मृत्यु-संख्या भारतवर्षमें है। भारतीय जन समुदायमें अल्पायुष्व सब देशोंसे अधिक बढ़ रहा है, इसके कारणों पर फिर किसी समय प्रकाश डाला जायगा। स्त्रियोंकी अवस्था तो पुरुषोंसे भी शोचनीय होती जा रही है। केवल प्रसूति रोगसे प्रति वर्ष लगभग दो लाख तक स्त्रियोंकी मृत्यु हो जाती है। तथा राजयक्ष्मा आदि रोगोंसे भी पुरुषोंसे द्विगुणित संख्या कालके गालमें जानेवाली स्त्रियोंकी ही है। जो स्त्रियां जीवित भी रहती हैं वे भी ६० प्रतिशत रोगिणी रहती हैं। इसी कारण हम भारतीय लोग शारीरिक मानसिक तथा आध्यात्मिक बल ज्ञानसे शून्य होकर दिनोंदिन अवनति-पथके पथिक बन रहे हैं। हमारी माताओं तथा बहनोंके इस प्रकारके स्वास्थ्यहीन एवं रोगाक्रान्त होनेसे प्रथम तो सन्ततिका होना ही असम्भव है। ऐसी परिस्थितिमें यदि सन्तान हो भी जाय तो वह नीरोग चिरायुः तथा वीर कैसे हो सकती है ?

स्त्रियोंका स्वास्थ्य—

स्त्रियोंका स्वास्थ्य विशेषतः मासिक धर्म (ऋतु) पर निर्भर है। मासिक धर्म ठीक समय पर तथा भली प्रकारसे न होनेसे ही बांझपन होता है। बांझपन कई प्रकारका होता है—काक वन्ध्यात्व, पुत्र-वन्ध्यात्व, कन्यावन्ध्यात्व, मृतवत्सात्व आदि २। स्त्रियोंके सम्पूर्ण रोग प्रायः मासिकधर्ममें गड़बड़ी होनेसे ही उत्पन्न होते हैं, अस्तु।

शुद्ध आर्त्तवके लक्षण

मासान्निष्पिच्छदाहार्त्ति पंचरात्रानुबन्धि च।
नैवाति बहुलं नाल्पमार्त्तवं शुद्धमादिशेत्॥
शशासृक् प्रतिमं यच्च यद्वा लाक्षारसोपमम्।
तदार्त्तवं प्रशंसन्ति यद्वासो न विरंजयेत्॥

एक मासमें (२८ से ३२ दिन तक) आता हो। दाहसे रहित ५ दिन तक रहता हो। चिकनाईसे रहित न अधिक न थोड़ा, ऐसा आर्त्तव (रक्त) शुद्ध होता है। जिस आर्त्तवका वर्ण (रंग) शशके रुधिरके समान या लाखके रंगके समान हो तथा वस्त्र पर पड़ा उसका धब्बा धोनेसे स्वच्छ हो जाता हो, तो समझना चाहिये कि वह आर्त्तव शुद्ध है, अन्यथा अशुद्ध होगा। यह अशुद्ध आर्त्तव ही पुत्र न होनेका कारण है। शास्त्रोंमें सन्तति हीनताको ही वन्ध्यात्वके नामसे कहा है। दोष भेदसे कामशास्त्र व आयुर्वेदके विद्वानोंने वन्ध्याके कई भेद माने हैं। १०, ६, ६, ४, ३ इस प्रकारसे मतभेदकी अलग अलग संख्यायें ग्रन्थोंमें पाई जाती हैं। यहां केवल स्थूल रूपसे तीन वन्ध्याओंके लक्षण लिख देते हैं।

जन्म वन्ध्याके लक्षण

स्तन बहुत छोटे २, पुरुषोंके समान सीधी छाती, मासिकधर्म बहुत थोड़ा तथा कई कई महीनोंके अनन्तर होना या कभी न भी होना, गर्भाशय विकृत छोटे मुंह वाला और आकार में भी छोटा होता है। ऐसी स्त्रीका स्वभाव पुरुषसे मिलता जुलता होता है। यह ऊसर भूमिकी भांति बीज धारण नहीं कर सकती; इनकी जननेन्द्रियां भी प्रायः दोषपूर्ण होती हैं। ये जन्म वन्ध्यायें प्रायः असाध्य होती हैं। ऐसी बहनोंको चाहिए कि चिकित्साके चक्रमें न पड़कर

सर्व शक्तिमान् परम-पिता परमात्माका भजन करें और आत्मज्ञ विवेकी महात्माओंके सत्सङ्ग द्वारा पूर्व-जन्म कृत पापोंका प्रायश्चित्त करें।

काकवन्ध्याके लक्षण

काकवन्ध्या उस स्त्रीको कहते हैं जिसको एक ही बार सन्तान होकर दूसरी बार गर्भधारण न हुआ हो। ऐसी स्त्रीकी चिकित्सा करनेसे पुनः गर्भधारण हो सकता है। एक सन्तान उत्पन्न होनेके अनन्तर किसी रोगविशेषके हो जानेसे आर्त्तव या गर्भाशयमें दोष आ जाता है जिससे स्त्री काकवन्ध्या हो जाती है।

मृतवत्साके लक्षण

जिस स्त्रीकी सन्तान बराबर होती रहे; किन्तु जीवित न रहे—उसे मृतवत्सा वन्ध्या कहते हैं। साधारणतया बांझपनके ये निम्न कारण होते हैं—

१—ऋतु या वीर्य विकार। २—बहुमैथुन। ३—अयोनिमैथुन। ४—विपरीतासनसे मैथुन। ५—मैथुन करते ही तत्काल उठ बैठना। ६—पति पत्नीमें प्रेमका अभाव। ७—पापाचार। ८—गर्भाशयका आठ प्रकार से स्थान भ्रष्ट या मांस वृद्धिका होना। ९—अत्यन्त व्रतोपवास। १०—वेगावरोध।

चिकित्सा क्रम

प्रायः यह रोग पूर्व संचित पापोंसे होता है; अतः प्रथम पापोंका प्रायश्चित्त कर लेना चाहिए। उपरान्त ऊपर लिखे दश कारणों पर ध्यान देना चाहिए। (इन कारणोंकी विवेकपूर्ण छानबीन की जावे तो एक बड़ा ग्रन्थ बन सकता है) बुद्धिमान् प्रत्येक कारणको सावधानीसे देखकर उनको दूर करनेकी चेष्टा करें। यदि स्वयं ऐसा न कर सकें तो किसी योग्य चिकित्सकसे चिकित्सा करायें। चिकित्सासे सब प्रकारकी वन्ध्याएँ ठीक हो सकती हैं। केवल भगवान्की दया चाहिए। इस सम्बन्धमें अन्यान्य विषय पर प्रकाश यथावसर डाला जायेगा।

भारतकी अवनति और उसके मूलकारण

(पृष्ठ ५८ का शेष)

गुरु सुकरातसे निवेदन करता है कि "मैं भारतसे आपको क्या उपहार लाऊं?" सुकरात बड़े उत्साहसे उत्तर देता है कि "ऐ सिकन्दर! तू मेरे लिए भारतसे एक ऐसा योग्य गुरु लाना जो मुझे ज्ञानोपदेश कर सके।" ऐसी अनेकों कथा भारतीय विद्याके सम्बन्धमें मिलती हैं। भारतमें रचित वेद, शास्त्र, पुराण, मीमांसादिमेंसे किसी एकके सूक्ष्मांशका अध्ययन-मनन करके ही आजकलके सभ्य तथा उन्नत देशोंमें ऐसे २ धुरन्धर विद्वान् माने जाने लगे हैं कि उन देशोंके निवासी उन पर गर्व करते हैं। किन्तु खेद कि उसी भारतमें विद्याका ऐसा ह्रास हो गया कि जिन्हें वास्तवमें विद्वान् कहा जा सके बहुत ही अल्प संख्यामें मिल सकेंगे। जो शिक्षा पद्धति भारतमें प्रचलित है उसने ऐसा हानिकर प्रभाव इस देश पर डाला कि वास्तविकताका नाम ही मिटा दिया। विद्या वही है जो मनुष्यको मनुष्यत्वका ज्ञान करादे कहा भी है—"विद्या विहीनः पशुः" किन्तु यहां आजकल विद्या पढ़ी जाती है डिप्लोमा लेने या पापी पेटकी ज्वाला शान्त करनेके लिए। इस शिक्षासे क्या लाभ हुआ यह स्पष्ट है। सच्ची शिक्षा सात्विक वातावरणमें ही मिल सकती है, तामसी वातावरणमें नहीं। पाठक स्वयं विचार करें कि वर्तमान कालीन लाखों डिप्लोमा प्राप्तोंमेंसे कितने विद्याका वास्तविक महत्त्व जान पाये हैं।

मेरी दृष्टिमें यही है भारतकी अवनतिका सच्चा तथा संक्षिप्त इतिहास। रोगका निदान ही उसकी शान्तिका मुख्य अंग माना जाता है। बिना निदानके उपचार करना अनधिकार चेष्टा है। अतः यदि इस निदानसे विद्वान् महानुभाव सहमत हुए तो भविष्यमें इसके उपचारों पर भी शनैः शनैः प्रकाश डालने का प्रयत्न किया जायगा।

ज्वालामुखीमें वनौषधियां

(लेखक—आयुर्वेदाचार्य कविराज पं० श्रीकण्ठदत्त नन्दकिशोर शर्मा वैद्यवाचस्पति)

—*****:—

ज्वालामुखी हिमालयकी सुन्दर अधित्यका है। इसकी ऊंचाई समुद्रतलसे २००० फुटके लगभग है। यहां पर सब ऋतुएँ अपना २ सुन्दर रूप पूर्णतया प्रदर्शित करती हैं। इसी कारणसे यहां पर प्रसिद्ध २ वा अत्युपयोगी पर्वतोंकी तलैटियोंमें होने वाली सभी औषधियें मिलती हैं। जैसे—वासा, कुमारी, सम्भालु, विल्व, अग्निमथ, पृष्ठपर्णी, शालपर्णी, दोनों कटेरियें आदि २। इस लेखमें सभी औषधियोंका वर्णन करना कठिन है; इस लिए अत्यन्त उपयोगी ३ औषधियों का ही संक्षिप्त विवेचन किया जायेगा। पर्वत प्रदेशकी यह कहावत प्रसिद्ध है कि—

"जित्थू वणां वसूटी वरयां।
ओत्थू माणू किथां मरयां ॥"

कहते हैं कि एक बार पुलिस द्वारा दो पर्वतीय मानुष बन्दी करके लाये गये थे; वह कारागार में थे—वहां पर उन्होंने किसी अकालमृत पुरुषको देखकर यह शब्द कहे थे। क्योंकि उस स्थान पर वासा निर्गुण्डी और वच यह तीनों औषधियां प्रचुर परिमाणमें उगी हुई थीं। परन्तु उपर्युक्त कहावत किस प्रकार चरितार्थ होती है, या किस प्रकारके प्रयोगोंसे यह औषधियां समस्त शारीरिक और मानसिक व्याधियोंको नष्ट करती हैं; इस बातको कोई भी नहीं जानता और नाहीं इस कहावतकी प्रत्यक्ष व्यवहारमें परीक्षाकी गई है। यद्यपि यह औषधियां समस्त रोगोंको एकाकी रूपमें नष्ट नहीं कर सकतीं; तथापि बहुतसे रोगोंकी यह प्रधानतम औषधियां हैं। इस लेखमें सामान्य परिचय देकर (औषधियोंका) फिर सम्मिलित रूपमें शास्त्रीय योगों द्वारा प्रसिद्ध रोगों पर इनका व्यवहार बतलाया जावेगा।

वासाको संस्कृतमें— वासा, सिंहास्य, वासक, वसादनी, आटरूष, सिंहमुखी, वृषा, सिंही, भिषङ्माता। हिन्दीमें— वसूटी, अडूसा। बङ्गलामें— वाकस। गुजरातीमें—आडुशी। अरबीमें—हूफारीनकून और लैटिनमें—अधोटा वासिका कहते हैं।

परिचय - यह वनस्पति प्रायः सर्वत्र ही मिल जाती है। हमारे प्रांतमें अत्यधिक होती है। इसकी यहां पर दो जातियां मिलती हैं—श्वेत और कृष्ण। क्षुपकी ऊंचाई १॥ फुटसे ५-६ फुट तक होती है। पत्र समान स्थान पर एक दूसरेके सामने होते हैं; नाड़ीजाल विषम होता है; पत्र इसके ६ इञ्च तक लम्बे, १॥ से ३ इञ्च तक चौड़े होते हैं। श्वेतवासाके पत्र हरितवर्ण और कृष्णवासाके कुछ श्यामहरित रोमयुक्त थोड़े लम्बे और चौड़े होते हैं। लाल वांसा यहां पर नहीं मिलता है। फाल्गुन माससे वैशाख तक फूल आते रहते हैं; जो कि विचित्र आकारके सिंहकी भांति मुख फैलाएसे होते हैं। यह बहुवार्षिक वनस्पति है।

सम्भालु:—संस्कृत नाम—निर्गुण्डी; सिन्धुवार आदि।
हिन्दी—सम्भालू, वणा। बंगला—निषिंदा।
लै०—विटैक्स निर्गुण्डी ट्राईकोलिया।

परिचयः—यह प्रत्येक स्थान पर मिलती है। तीन २ या पांच २ पत्र एक पत्रनालमें जुड़े रहते हैं। वर्ण श्यामहरित, लम्बाई २-३ इञ्च, चौड़ाई आधेसे १ इञ्च तक होती है। इसका तरु शिशु (पौदा) गुल्माकार होता है; जिसकी ऊंचाई आठ फुट तक होती है। पुष्पमंजरीमें नीलवर्ण लगते हैं (हमारे यहां यही प्रकार मिलता है) मंजरी ३ इञ्च तक लम्बी होती है।

वचाको संस्कृतमें— वचा, उग्रगंधा, षड्ग्रंथा, गोलोमी, शतपर्विका। अरबीमें उदलजूब और अंग्रेजी में—स्वीटफ्लागरूट कहते हैं।

इसके तरु शिशु (पौदे) बहते हुए जलके आसपासया मध्यमें अथवा बहुत जलीयस्थान पर होते हैं।

कुमारीकी भांति पत्र नीचे मूल परसे ही पृथक् २ होने लगते हैं, टहनी आदि कोई नहीं होती; अधिकतर मूलसे फैलती है। ऊंचाई १–२ फुट होती है, पत्रकी चौड़ाई एक इञ्च तक होती है। इसकी प्राकृतिक क्यारीके बीच खड़े होनेसे रमणीय और तेज गंध आती है — जिससे एकबार तो चक्करसा ही आजाता है। यह भी बहुवार्षिक ही वनस्पति है।

वासाके गुण

वासको वातकृत्स्वर्यः कफपित्तास्रनाशनः।
तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुशीतस्तृडर्तिहृत्॥
श्वासकासज्वरछर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः॥

अर्थात्—अड़ूसा वातनाशक, स्वरशोधक, कफ, पित्त-रक्तविकार शामक, कड़वा, कसैला, हृदयगति नियामक, हलका, ठंडा, प्यास रोकने वाला, खांसी, श्वास, ज्वर, उलटी प्रमेह और यक्ष्मा नाशक है।

सिन्दुवार—

सिन्दुकः स्मृतिदस्तिक्तः कषायः कटुको लघुः।
केश्यो नेत्रहितो हंति शूलशोथाऽऽममारुतान्॥
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्म ज्वरान्नीलापि तद्विधा।
सिन्दुवारदलं जंतुवातश्लेष्महरं लघु॥

अर्थात्— व्रण स्मरणशक्ति बढ़ाने वाला, कड़वा, कसैला, चरपरा, हलका, केशोंको काला करने वाला, नेत्ररोग हर, शूल, शोथ, आमदोष, वातरोग, पेटके कीड़े वा व्रणोंमें होने वाले कीटाणुओंको नष्ट करने वाला, कोढ़, अरुचि, कफके रोग, ज्वर इन सबको नष्ट करता है। नील सम्भालुके भी यही गुण हैं— इसके पत्ते कृमि नाशक वातकफ हारक तथा हलके होते हैं।

वचा—

वचोग्रगंधा कटुका तिक्तोष्णा वन्हिवांतिकृत्।
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी॥
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान् हरेत्॥

वचा तेज़ गंध वाली, चरपरी, कड़वी, उष्ण, वमन कारक, अग्निदीपक, मलबंध, पेटका अफारा, शूल इनको नष्ट करती है। मूत्र और मलको निकालती है। अपस्मार, श्लैश्मिक—उन्माद, प्रेतबाधा, कृमि चुनूने (अति सूक्ष्म उदरकीट) आदि तथा वायु इनको नष्ट करती है।

वासाके प्रयोग—

(१) वासाघनसार ४ रत्तीसे १ माशा तक दिनमें ३ बार ठंडे जलसे दें। वसंत और शरदृतुमें होनेवाले विकारोंको शांत करता है। ज्वरके अतिरिक्त यदि और कोई पैत्तिक या श्लैष्मिक रोग हो तो शहद ३ माशाके साथ देवें, यह हमारा अनुभूत है।

(२) सर्वत्र पुष्पवासाया रसः क्षौद्रसितायुतः।
कफपित्तज्वरं हन्ति सास्रपित्तं सकामलम्॥

वासा स्वरस १ तोला, शहद १ तो०, खंड ६ माशे मिलाकर पीनेसे कफ पित्तज्वर; नाक मुख आदिसे खून बहना और कामला रोग नष्ट होते हैं।

(३) ....वृषस्य च
..................सिद्धाः स्नेहा ज्वरच्छिदः।

घी ऽ१ सेर, वासाक्वाथ ऽ४ सेर, प्रक्षेपार्थ वासा-पत्र, पुष्प, मूलत्वक् ऽ। इनसे निर्मित घी १–२ तोला की मात्रामें खानेसे जीर्णज्वरको नष्ट करता है।

(चक्रदत्त)

(४) वासामूलत्वक् १ तोला घोटकर मिश्री मिला कर गोदंतीभस्म १ रत्ती या गुड़चीसत्त्व १ माशाके साथ देनेसे गर्भिणीके वातपैत्तिक (मलेरिया) ज्वरको नष्ट करता है। गर्भिणीके लिये जहां कुनीन प्रभृति सद्योलाभप्रद तीक्ष्ण औषधियें नहीं दी जासकती हैं— वहां यह १ सप्ताहके भीतर उत्तम लाभ करती है।

(५) वासायां विद्यमानायां माशायां जीवितस्य च।
रक्तपित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदति॥

(चक्रदत्त)

श्रीचक्रपाणिजीने अनुभवकोष चक्रदत्तमें इस श्लोक द्वारा वासाका अपरिमित महत्त्व प्रकट कर दिया है।

(६) रक्तपित्तमें— वासाघनसार, वासापुष्पखंड, वासापत्रपुटपाक वा स्वरस इनका अपरिमित प्रयोग किया जाता है। वासा पुष्पखण्डकी विधि—गुलकंद के समान ही है। मात्रा १ तोला, दिनमें ३—४ बार

(७) वासापत्रपुटपाकके रसकी मात्रा दिनमें ३ छटांक तक देना वैद्योंने निश्चितकी है। यह शहदके साथ देना चाहिये।

(८) उपर्युक्त प्रकारसे घी तैयार करके यक्ष्मामें देवें। यक्ष्मा, उत्कट कास, श्वास और पित्तविकृति जनित पाण्डुरोगको शान्त करता है। इसका लाभ १ मास सेवन करके ही देखना चाहिए।

(९) वासापत्र और हलदी दोनों बराबर २ गामूत्रमें पीस कर लेप करनेसे शुद्धशरीरी रोगीका साधारण कुष्ठ ३ दिनमें नष्ट होता है ऐसा श्रीचक्रपाणि जीका अनुभव है।

(१०) गुदकीलमें मस्से होने पर अड़ूसेके पत्तोंकी पोटली द्वारा सेक देनेसे लाभ होता है।

(११) मसूरिकामें वासा बहुत प्रयोग किया जाता था, ऐसा चक्रदत्त आदि ग्रन्थोंसे प्रतीत होता है। आजकल प्रायः इस रोगकी औषध चिकित्सा की ही नहीं जाती है।

(१२) वासावलेह कास तथा जीर्णज्वरकी प्रसिद्ध महौषधि है।

(१३) वासाक्षार १–२ रत्ती शहदसे शुष्क और आर्द्र दोनों प्रकारकी खांसी नष्ट करता है।

(१४) कुष्ठमें पान और आलेपके द्वारा वासाका अधिक प्रयोग किया जाता है।

(१५) इसके अतिरिक्त पंचतिक्तघृत, वृषादिघृत (कुष्ठ) वासादिकषाय कई प्रसिद्ध योग हैं, जोकि आजकल भी प्रयुक्त होते हैं।

(१६) वासामूले कटिवद्धे नारी सूते द्रुतं सुतम्।

वासामूलको डोरीमें बांध कर प्रसवकालमें गर्भिणीकी कटिमें बांधनेसे शीघ्र प्रसव होता है।

(१७) मेधाके लिये—

वासामूलतुलाक्वाथे तैलमात्राप्य साधितम्।
हुत्वासहस्रमश्नीयान्मेध्यमायुष्यमुच्यते॥

विस्तारभयसे बहुत न लिख कर अब सिन्दुवार के प्रसिद्ध और लाभप्रद योग लिखते हैं—

(१) सिन्दुवार पत्र २॥ तोलेका कषाय बना कर मरिच चूर्ण १ माशा डाल कर पिलानेसे कफज्वर, जंघाओंकी निर्बलता और कानमें कम सुनाई देना यह नष्ट होते हैं। (चक्रदत्त)

(२) सिन्दुवार पंचागका तैल तैयार करे; इसके प्रयोगसे नासूर, सभी प्रकारके फोड़े, कानकी सेली, पामा, विचर्चिकादि क्षुद्रकुष्ठ नष्ट होते हैं। (चक्रदत्त)

(३) आंख दुखने पर ताजास्वरस १–२ बूंद आंखोंमें डालनेसे एक बारमें ही आराम हो जाता है। यदि १-२ माससे आंख दुखती हो तो ६ दिन तक दिनमें ३ बार प्रयोग करें।

(४) नहरुआरोगमें सिन्दुवारस्वरस घी मिलाकर देनेसे लाभ होता है।

(५) क्षयरोग, वातिकोन्माद, क्षीणस्मृतिमें निर्गुण्डीघृत प्रयुक्त करें।

(६) वातिकशोथमें इसका सेक त्वरित लाभ करता है; यह सभी पर्वतीयोंका अनुभव है।

(७) गर्भवती तथा अन्य निर्बल वा दीर्घ रोगियोंको निर्गुण्डीकषाय द्वारा परिषेक करनेसे वात व्याधियां शांत होती हैं और व्याधिके कीटाणु नष्ट होते हैं। हमारे प्रांतमें इस स्नानका बहुत प्रचार है।

(८) निर्गुण्डी क्वाथ ग्रहणी-शूल—उदरमें होनेवाले कृमियोंको तथा प्लैहिक रोगोंको शान्त करता है।

वचा

(१) ····सद्यः प्रज्ञाकरी वचा।

वचाकषाय दूध मिलाकर पीनेसे बुद्धि बढ़ाती है। इसे ६ माशासे बढ़ाना चाहिये, नहीं तो वमन हो जाया करेंगी।

भोजन इसके पच जाने पर सायङ्कालको (केवल दूधसे भात) करना चाहिये।

(२) यः खादेत् क्षीरभक्ताशी माक्षिकेण वचारजः।
अपस्मारं महाघोरं सुचिरोत्थं जयेद् ध्रुवम्॥

वचाचूर्ण ३ माशासे बढ़ाकर १ तोला तक ले जायें। शहतसे प्रयोग करायें। जितना चूर्ण रोगी पचा सके वहीं तक बढ़ायें। दूध भात खानेको दें। इस प्रकार पुराना अपस्मार भी नष्ट हो जाता है।

(३) मूर्छावस्थामें—वचाचूर्णकी नस्य देवें।

(४) वमन करानेके लिये ३ तोला वचाका कषाय शहत मिलाकर देवें।

(५) प्रेतबाधाओंमें और आगन्तुक विषम ज्वरोंमें इसका धूप दें। इस धूपसे व्रणज कीटाणु भी नष्ट होते हैं (घी गुग्गल और शहत मिलाकर धूप देवें।)

(६) बालकके जन्मके बाद वचा ब्राह्मी कुठ सुवर्ण-भस्म समभाग १ रत्ती चूर्ण शहदके साथ घी मिलाकर चटानेसे बुद्धि बढ़ती है।

(७) जब बालकको अंगूठा चूसनेकी आदत पड़ने लगती है उस समय निपल चूसनेके लिए न देकर वचाकी गांठ सूत्रसे या वस्त्र आदिसे बांध देनी चाहिये, ताकि उसे बार बार चूसता रहे; इससे बुद्धि बढ़ेगी, स्वर शुद्ध होगा और बालावस्थामें होने वाले श्लैष्मिक रोग न हो सकेंगे।

(८) बालकोंके रुक २ कर बोलने पर वचा, कुल-ञ्जन, ब्राह्मी, बादाम सम भाग चूर्ण करके बराबर खांड मिलाकर दूध या शहदके साथ देनेसे अटकना दूर हो जाता है और बुद्धि बढ़ती है। यह प्रयोग दीर्घ-काल (६-७ मास) तक कराना चाहिये। ऐसे बालकों-को गानेका अभ्यास डलवाना चाहिये।

(९) वचा रसायन—

पञ्चकर्म द्वारा शुद्ध पुरुष ताजी श्वेतवचाका कल्क बनाकर सहस्रसम्पाताध्यायोक्त यजुर्वेदके मन्त्रोंसे होम करके फिर १ तोलाके लगभग पिंडको दूधमें घोलकर पीवे। जब औषधि जीर्ण हो जाये (उत्क्लेश आदि शांत हो जायें) तब दूध घी भात यह वस्तुयें यथा रुचि खायें। यह प्रयोग १२ दिन करे इससे श्रवण शक्ति बढ़ जाती है। २४ दिनके प्रयोगसे स्मृति बढ़ती है। ३६ वासर प्रयोगसे शतायु होता है। ४८ दिनके प्रयोगसे सभी शारीरिक मानसिक दोष दूर हो जाते हैं; दृष्टि दूर तक सूक्ष्म पदार्थोंको देख सकती है, शतायुः हो जाता है। (सुश्रुतसंहिता)

मैंने इस रसायनका अशुद्ध शरीर पर ही होमादि-के बिना ही १२ दिन प्रयोग किया था, जिससे कोई वर्णनीय लाभ नहीं हुआ। इसलिये बिना विधानसे इसका प्रयोग निष्फल होता है। इस रसायनको कुटी-प्रावेशिक विधानसे रहकर सेवन करना चाहिए।

(१०) वचाघृतं सुवर्णं च विल्वचूर्णमिति त्र्यम्।
मेध्यमायुष्यमारोग्यपुष्टिसौभाग्यवर्धनम्॥

वचा, स्वर्णभस्म, विल्वमूलत्वक् चूर्ण, घीमें मिलाकर खानेसे मेधा आयु, आरोग्य, शरीरपुष्टि और श्री आदिकी वृद्धि होती है।

यह मैंने संक्षेपसे तीनों औषधियोंके प्रसिद्ध और लाभप्रद कतिपय उपयोगोंका वर्णन किया है। यदि विस्तारसे औषधियोंके गुणानुसार पृथक् २ प्रयोगों-का (शास्त्रमें आये हुए समस्त समष्टि व्यष्टि प्रयोगोंका) वर्णन करना हो तो एक छोटी पुस्तक ही लिखी जा सकती है। मेरा उद्देश्य तो ज्वालामुखीमें होने वाली इन तीनों औषधियोंकी कहावतकी सत्यता प्रकट करना था, कि—

"जित्थू वणां वसूटी वरयां
ओत्थू माणू कियां मरयां"

वह प्रकट होगया है। इतना अधिक लाभ पहुं-चानेवाली सर्वसुलभ बहुत ही कम औषधियां होंगी

विराट नगर

[लेखक—महामहोपाध्याय श्री पं० मथुराप्रसादजी दीक्षित साहित्याचार्य विद्यावारिधि]

—*※※※*:—

[यह लेख विद्वान् पाठक तथा गम्भीर अन्वेषक ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे ही। हम यहां निवेदन कर देते हैं कि इस लेखके विषयमें हमारा कोई अन्वेषणपूर्वक अध्ययन नहीं है, अत: इस लेखमें प्रकाशित विचारोंका उत्तरदायित्व हमारे सुयोग्य विद्वान् श्री० महामहोपाध्यायजी पर ही है। महामहोपाध्यायजी संस्कृत साहित्यके विद्वानोंमें एक विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपके कई ग्रन्थ छप कर प्रकाशित भी हो चुके हैं। प्रस्तुत लेखके सम्बन्धमें अन्यान्य सुयोग्य विद्वान् अपने २ गवेषणापूर्ण लेख यदि हमारे पास भेजेंगे तो उन्हें भी हम "श्रीस्वाध्याय" में स्थान देंगे। —सम्पादक]

प्राचीन कालमें विराट् नगर अत्यन्त प्रसिद्ध मत्स्यदेशका एक सुशोभित नगर था। वहांकी प्रजा राजभक्त सच्चरित्रा और सदाचारिणी थी। वहांका राजा सदाचारी न्यायशील धर्मात्मा और पाण्डवोंका पक्षपाती था। क्योंकि जिस समय युधिष्ठिरने अज्ञात वासके लिए कौन देश उपयुक्त होगा ? यह अर्जुनसे पूछा– उस समय अर्जुन तत्तद्देशोंका वर्णन करने लगा। समस्त देशोंके वर्णन करनेके बाद युधिष्ठिरने कहा कि हम लागोंके लिए विराट् नगर अत्यन्त उपयोगी होगा। क्योंकि बहांका राजा सच्चरित्र न्यायानुगामी और पाण्डवों पर विशेष प्रीति रखनेवाला है। राजा युधिष्ठिरको निश्चय था कि यदि हम लोगोंका रहस्य विराट् नरेशको मालूम होगा तो भी विराट् नरेश उस रहस्यको छिपाये रहेंगे। दूसरे उधर कौरवोंका आवागमन भी नहीं है। समय आ पड़ने पर विराट् नरेश हम लोगोंकी सहायता भी कर सकता है। वह बड़ा ही सच्चरित्र न्याय पक्षपाती शान्त दान्त उदार धर्मात्मा है। दूसरी बात यह थी कि मत्स्यदेश द्वैत-वनके समीपमें था। अतएव विराट् नगरमें अज्ञात रूपसे प्रवेश करनेके लिए सुविधा भी थी। इसी कारण विराट् नगरमें अज्ञातवाससे एक वर्ष बिताया जाय यही सबकी सम्मति हुई। तदनन्तर पुरोहित धौम्यको लौटाकर वनमालासे निकलकर पाण्डवोंने प्रथम मत्स्य देशमें प्रवेश किया और फिर विराट् नगरमें प्रवेश किया। उस समय विराट् नगरकी शोभा इन्द्रप्रस्थादिक प्रधान नगरोंसे कम न थी। विराट् नगरके विजय करनेका साहस किसीके हृदयमें नहीं होता था। अर्जुन भीमादिक राजसूय यज्ञके समय समस्त भारतका विजय कर आये थे। परन्तु विराट् नगरके तरफ मुख नहीं किये थे। कर्ण अकेला ही समस्त भारतका विजय कर आया था, परन्तु विराट नगरके तरफ जानेका उसे भी साहस न हुआ। हम यह नहीं कहते कि कर्णार्जुन भीमादिकोंसे विराट्नरेशका सामर्थ्य अधिक था। परन्तु वहांका सुसङ्गठन ऐसा था कि जिससे उसके जीतनेके लिए लोहेके चनोंका सामना करना ही कौरव और पाण्डवोंको प्रतीत होता था। कीचकके नामसे कौरवोंके हृदयमें आतङ्क जमा हुआ था और कीचक भी साधारण व्यक्ति न था, उसको दश हजार हाथियोंका बल था। उसके सौ भाई थे। अतएव उसके जीते जी कभी कौरवोंके हृदयमें उधर चढ़ाई करनेका विचार भी न हुआ।

उत्तर शङ्ख श्वेत ये तीन विराट्नरेशके पुत्र थे। उत्तर बाणविद्यामें बड़ा ही प्रवीण था। अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रोंका जाननेवाला था। निदान गोग्रहणके समय कौरवोंने जब विराट् नगरको घेर लिया उस समय अर्जुनको सारथी बनाकर भीष्म द्रोण कर्ण अश्वत्थामादिक महारथियोंके साथ संग्राम करनेको उत्तर गया था। उसके हृदयमें साहस न था, अतएव वह वहांसे पराङ्मुख भी होने लगा था। परन्तु उसी संग्रामको देखकर हृदयसे भय निकल जानेके बाद उसी उत्तरने भीष्मपर्वमें अपूर्व साहस दिखाया था।

दूसरा पुत्र 'श्वेत' नामक महापराक्रमी था। हम दृढ़तापूर्वक यह कह सकते हैं कि यह श्वेत भीष्म द्रोण कर्ण भीम अर्जुन इत्यादिकोंसे पराक्रम साहस

और बाणविद्यामें कम न था। इसने भीष्मके हृदयमें आतङ्क जमा दिया था। जो भीष्मपितामह परशुराम को भी पराजित कर दिये थे वही भीष्म महारथी विराट् पुत्र श्वेतसे पराङ्मुख हुए थे। महाभारत भीष्म पर्व ४८ अध्याय।

एकाह्ना निर्दहेद्भीष्मः पाण्डवानामनीकिनीम्।
शरैः परमसंक्रुद्धो यदि श्वेतो न पालयेत् ॥ ४३ ॥
पितामहं ततो दृष्ट्वा श्वेतेन विमुखीकृतम् ॥ ४४ ॥

भावार्थ—क्रोधमें आये हुए भीष्मपितामह एक ही दिनमें समस्त पाण्डवोंकी सेनाको मार देते, यदि विराट् पुत्र श्वेत भीष्मसे पाण्डव सेनाकी रक्षा न करता। इतना ही नहीं किया किन्तु उसने भीष्मको भी संग्रामसे विमुख कर दिया था। तदनन्तर विमुख भीष्मको देखकर कौरवोंकी सेनामें भय पैदा हो गया था।

तीसरा पुत्र शंख था। जिसने बड़े बड़े महारथियों के हृदयको भयसे कम्पायमान कर दिया था। जिस ने द्रोण ऐसे महारथियोंको और कृपाचार्य कृतवर्मादिकोंको दिखा दिया था कि विराट् नगरमें बाण विद्या कितनी उच्च कक्षा तक पहुंची है। स्वयं विराट् नरेश भी बाणविद्याके अच्छे ज्ञाता महारथी थे। आज हम उसी विराट् नगरका अनुसन्धान करना चाहते हैं। वह वीर जननी न्यायानुगामी राजासे संरक्षित विराट भूमि कहां थी? यद्यपि महाभारतके अनन्तर समस्त भारतभूमि वीर शून्या सी हो गई। समस्त देश अस्त व्यस्तसे हो गये। राजा परीक्षितका एकच्छत्र राज्य होनेसे देशोंकी सीमा नष्टप्राय हो गई। परन्तु कौन देश कहां पर है यह महाभारतसे तथा व्यवहार और प्रसिद्धिसे अब भी पता लगता है। विराट नगर या मत्स्यदेशके विषयमें कई एक महानुभावोंकी विभिन्न सम्मति है। कुछ लोग जम्बू काश्मीरके पास पर्वत तरायीके प्रदेशको मत्स्य और उसी प्रदेशमें विराट नगर था ऐसा मानते हैं। इसके दृढ़ प्रमाण वे कुछ नहीं देते हैं, केवल सुनी सुनाई किम्वदन्तिमात्रको प्रमाण मानते हैं जो कि अकिञ्चित्कर और अग्राह्य है।

सुप्रतिष्ठित पण्डित माधवरामजी सप्रेने हिन्दी महाभारतमीमांसामें बताया है कि विराट भूमि और मत्स्यदेश जयपुरके पास था। आपने पूनाकी "मेसर्स गणेश विष्णु चिपलूणकर आणि कम्पनी" के प्रधान संचालक लेखक—ग्वालियरके रिटायर्ड चीफ जस्टिस तथा बम्बई विश्व-विद्यालयके आनरेरी फेलो—राव बहादुर सी० वी० वैद्य एम० ए०, एल-एल० बी० के मराठी "महाभारतमीमांसा" के आधार पर लिखा है। हिन्दी-विश्वकोशकारने भी जयपुरके पास विराट-नगरको लिख मारा है, उसने 'जयपुर' के पास एक छोटा सा 'माछी' नामका ग्राम है, उसको लिखा है कि यही मत्स्यदेश था। प्रमाणके लिए कुछ भी किसीने भी नहीं लिखा है। अपनी मनगढन्तोंसे ही अमुक स्थान पर विराट देश था यह निश्चय कर डाले, और इस निश्चय करनेमें बड़ी ही भूल कर गये हैं। उसी भूलके अनुयायी म० म० गौरीशङ्कर हीराचन्द ओझाजीने भी यही लिखा है कि जयपुरके पास विराटनगर था, अस्तु। हम दृढ़तासे कहते हैं कि यदि महाभारतको अच्छी तरह देखकर निश्चय किये होते तो कदापि ऐसा भ्रम नहीं होता। अस्तु— प्रथम यह देखना चाहिये कि क्या ग्रामके नामसे देशका अथवा देशके नामसे ग्रामका कभी भी परिवर्तन हुआ है? अथवा हो सकता है? उत्तर होगा नहीं। तो मत्स्य-देश माछी नामक एक ग्रामसे कैसे परिवर्तित हो सकता है? हां, यदि मत्स्य नामक नगरसे मत्स्यदेशकी प्रसिद्धि प्रथमसे ही होती किंतु परिवर्तन नहीं हुआ होता तो माना जा सकता था कि प्रथम मत्स्य ग्राम विशाल रूपमें होनेके कारण देशके नामसे भी प्रसिद्ध था। जैसे विराट नामसे राजा और नगर प्रसिद्ध था, और आन्हिकसूत्रावलीमें तथा महाभारतमें विराटको देश परिगणनमें भी माना है। समयकी अनुकूल अवस्थामें विकाश और प्रतिकूल अवस्थामें ह्रास अवश्य हो जाता है, परन्तु महान् देश छोटेसे ग्रामके नाममें परिवर्तित हो जाय यह कदापि नहीं हो सकता है। थोड़ी देरके लिए मान भी लिया जाय कि महाभारतके बाद प्रथम मत्स्यदेशाधिपतिके नामसे मत्स्य नामक विशालनगर हुआ और वही कालान्तरमें कुटिल कालकरालकी महिमासे छोटा सा माछी नामक आज गामड़ा होगया है। परन्तु यह कल्पना तभी

हो सकती है कि यदि मत्स्यदेशका उधर जयपुर प्रदेशमें कोई दृढ़तर प्रमाणसे होना सिद्ध होता होय तो अगत्या ऐसी भी कल्पना की जा सकती है। परंतु यहां तो महाभारतके तथा व्यवहारोंसे और कुछ प्रसिद्ध ग्राम नामोंसे मालूम होता है कि यह मत्स्यदेश और विराटनगर इन्द्रप्रस्थ से उत्तर थे।

हिन्दीमहाभारत समालोचना ४१० पृष्ठमें जहां देशोंका वर्णन आया है वहां पर मत्स्यदेश को उत्तर तरफ बताया है, उत्तर पूर्व दक्षिण पश्चिम ये सब सापेक्ष्य होते हैं। यों तो प्रत्येक ग्राम किसीकी अपेक्षा पूर्व है और वही ग्राम दूसरेकी अपेक्षा पश्चिम है। उदाहरणके लिये-प्रयागसे काशी पूर्व है, परन्तु वही काशी पटनासे पश्चिम है तो हम काशीको पूर्व अथवा पश्चिम दिशामें निर्धारित नहीं कर सकते हैं। इस लिये निर्धारण प्रत्येक पुरुष अपनी अपेक्षासे करता है, अर्थात् जो कोई किसी नगरको पूर्व अथवा पश्चिम कहता है वह अपने निवास स्थानसे कहता है। तो मत्स्यदेश या विराट-नगरको उत्तर देशोंमें माना है तो उसका यह तात्पर्य है कि वह मत्स्यदेश और विराटनगर इन्द्रप्रस्थ (देहली) से उत्तर हैं। जयपुर और माछी ग्राम ये दोनों देहलीसे पश्चिम और दक्षिणके कुछ कोणको लिये हुए हैं। तो जो देश स्पष्ट रूपसे दक्षिणकोण पर हो, उसे उत्तर कहना यह दिनको रात्रि कहनेके ही समान है।

प्रमाण नं० २—कौरव पाण्डवोंकी जब सन्धि नहीं हुई तब श्रीकृष्णचन्द्रजी द्वारिकाको चले गये थे, और लड़ाईकी आयोजना स्वयं विराट नरेश करने लगे थे, क्योंकि पाण्डवोंकी समस्त सम्पत्ति कौरवों के अधिकारमें चली गयी थी. पाण्डवोंके पास कोई ऐसा साधन नहीं था कि जिससे फौजको एकत्रित करके उसके खर्चका भार उठा सकते, अतएव स्वयं विराटनरेश युद्धके पक्षमें थे। उनका पक्ष था कि अवश्यमेव युद्ध करना चाहिये और कौरवोंका अन्याय है, विजय निश्चयसे हम लोगोंकी होगी। आपाततः तो यही प्रसिद्ध है कि कृष्णके कारण ही संग्राम हुआ, परन्तु वस्तुगत्या युद्धके लिए द्रुपद, धृष्टद्युम्न और विराट नरेश ही पूरा जोर दे रहे थे, देखिये महाभारत उद्योग पर्व—

द्वारिकां तु गते कृष्णे युधिष्ठिरपुरोगमाः।
चक्रुः सांग्रामिकं कर्म विराटश्च महीपतिः॥
५ अ० १२ श्लोक॥

अर्थ—कृष्णचन्द्रके द्वारिका चले जानेके बाद युधिष्ठिरके पीछे चलनेवाले भीमादिक और विराट नरेश संग्राम सम्बन्धी काम करते हुये, अस्तु।

ये विराटनरेश उत्तराखण्डमें पर्वत प्रान्तमें रहते थे। इनका राज्य अम्बाला प्रदेशसे लेकर कालिका शिमला तक उत्तरमें, और मयलोग लुधियाना प्रान्त में पश्चिम तक फैला हुआ था। क्योंकि प्रधान नगर इनका विराट नामक शहर था और उसका विस्तार बहुत ही बड़ा था, जोकि विराट प्रदेशसे प्रसिद्ध था अतएव आन्हिकसूत्रावलीकारने विराटको देश परि-गणनामें पृथक् ही बताया है और इनका राज्य विराट और मत्स्य दोनों देशोंके नामसे प्रसिद्ध था। इनका वर्णन मत्स्यदेशाधिपति नामसे भी कई जगह महा-भारतमें आया है—जिसका आगे मैं वर्णन करूंगा। यह मत्स्यदेश और इनका राज्य पर्वतप्रदेशमें ही था।

देखिये महाभारत उद्योग पर्व १९वां अध्याय—

तथैव राजा मत्स्यानां विराटो वाहिनीपतिः।
पर्वतीयैर्महीपालैः सहितः पाण्डवानियात॥ १२॥

जैसे दूसरे द्रुपदादिक राजा अपनी २ सेना लेकर आये, इसी तरह मत्स्यदेशोंका राजा सेना सहित विराटनरेश पर्वत प्रदेशके राजाओंके साथ पाण्डवोंके पास आया। ये विराटनरेश एक अक्षौ-हिणीके साथ आये, अस्तु।

अब इससे स्पष्ट हो जाता है कि उत्तर प्रदेश ही में मत्स्यदेश था, क्योंकि पर्वत प्रदेशमें रहनेवाले अपने छोटे २ सामन्तोंके साथ उस समस्त सेनाके नायक विराटनरेश पाण्डवोंके पास आये। और पर्वतीय यह नाम उत्तराखण्डके पर्वत प्रदेशमें उत्पन्न होनेवाले तथा रहनेवालोंका ही नाम है। पाणिनीय व्याकरणमें लिखा है—"पर्वताच्छ" जिसका यह तात्पर्य है कि जो पर्वतमें उत्पन्न हो अथवा रहता हो उसे पर्वतीय कहते हैं। यद्यपि विन्ध्याचल पर्वतमें

उत्पन्न होनेवाले जिला मिर्जापुर प्रान्तके, तथा कामरूप कामाक्षा प्रान्तके बङ्गाल देशीय पर्वतोंके रहनेवाले भी पर्वतीय कहे जा सकते हैं, लेकिन पङ्कजादिक शब्दोंकी तरह उत्तर देशकी पर्वत श्रेणिमें उत्पन्न तथा रहनेवालोंको ही पर्वतीय शब्दसे कहते हैं, तात्पर्य यह है कि—जैसे पङ्कज शब्दसे कमल ही कहा जाता है; यद्यपि कीचमें उत्पन्न हुए इस अर्थसे सिंघाड़ा, शेवाल भी कहे जा सकते हैं; क्योंकि ये भी कीचसे उत्पन्न होते हैं, परन्तु पङ्कज शब्दसे शेवालादिका ग्रहण नहीं होता है किन्तु कमल हीका ग्रहण होता है। इसी तरह पर्वतीय शब्दसे उत्तर प्रदेशकी पर्वत श्रेणीके उत्पन्न होने वाले तथा रहनेवाले लोगोंका ही ग्रहण होगा। अब भी पर्वतीय कहनेसे उत्तर प्रदेशीय पर्वतके ही लोगोंका बोध होता है। देखिये महाकवि कालिदासजीने भी रघुवंशके चतुर्थ सर्गमें लिखा है। जब कि रघु राजा पूर्व, दक्षिण, पश्चिम दिशाओंका विजय करके उत्तर दिशामें पहुँचे, तब वहां उत्तरदिशामें पर्वतीयोंके साथ संग्राम हुआ—

तत्र जन्यं रघोर्घोरं पर्वतीयैर्गणैरभूत्।
नाराचक्षेपणीयाश्मनिष्पेषोत्पतितानलम्॥
॥ ७७ ॥ सर्ग ४ ॥

जब राजा रघुने उत्तर दिशाकी तरफ चढ़ाई की उस समय पर्वतीयगणोंके साथ संग्राम हुआ। यद्यपि काश्मीर प्रदेशकी तरफ पर्वतश्रेणीके लोगोंको भी पर्वतीय कह सकते हैं और उसी प्रान्तमें मत्स्यदेशको भी कह सकते हैं लेकिन यह ठीक नहीं है, निदान—काश्मीर प्रदेशको काश्मीर नामसे कहते हैं, काश्मीर देश अपने नामसे स्वतः प्रसिद्ध है, दूसरे काम्बोजदेशका राजा अखरोटोंके वृक्षोंके साथ नम्र होगया अर्थात् रघुकी आधीनता स्वीकार करली। अखरोट काश्मीरप्रदेशमें होता है। और उसके बाद पूर्वतरफ अयोध्याका लक्ष्य करके आनेमें कालिका शिमला प्रान्त ही आता है। दूसरे पर्वतीय संज्ञा सोलन, शिमला और काश्मीर टिहरीके उत्तरीय हिमालयके सभी लोगोंका नाम हो सकता है। हम पर्वतीय शब्दसे विराटनगर अथवा मत्स्यदेशको नहीं कहते हैं, किन्तु हमारा तात्पर्य यह है कि पर्वतीय संज्ञा उत्तर प्रदेशके हिमालय प्रान्तीय पर्वतोंके रहनेवालोंको पर्वतीय कहते हैं। यहां पर्वतीयोंके साथ रघुका संग्राम हुआ। फारस देशके बाद उत्तरकी तरफ आते हुए काम्बोजदेश आया, उसके बाद हिमालय प्रदेशमें संग्राम हुआ। काम्बोज और कामरूप देशके मध्यमें पर्वतीयोंके साथ संग्राम हुआ था। उत्तरीय पर्वत श्रेणीके रहनेवालोंको ही पर्वतीय कहते हैं अब यह निर्विवाद सिद्ध है। अस्तु।

सम्भव है मत्स्यदेश बहुत दूर तक विस्तृतरूपमें रहा होगा, परन्तु विराट नगर कालिका अम्बालाके मध्यमें ही कहीं पर था, निदान—आज भी आपामर वृद्धसे लेकर छोटे २ बालकों तक प्रसिद्ध है कि सोलनसे ढाई मीलकी ऊँचाई पर करोल नामकी एक छोटी सी पहाड़ी है। इसको 'करोलका टिब्बा' नामसे कहते हैं। उसके ऊपर एक गुफा है, उस गुफाके थोड़ा सा ही अन्दर जाने पर पानीका सलाव मिल जाता है। गुफामें पैठते ही सीढ़ियों पर थोड़ा २ पानी मिलता है। उस पानीकी गहराई हाथ सवा हाथके करीब रहती है। दश बारह कदम चलनेके बाद फिर पैछप्पा जमीन आजाती है। परन्तु उसके भीतर अँधेरा और सेलावकी ठण्ड इतनी रहती है कि जिससे ज्यादा दूर जाना कठिन हो जाता है। चार फरलांग जाने पर तङ्ग रास्ता आजाता है। ऊँचास भी थोड़ी रहती है; भीतर जाने पर सांप बिच्छुओंका भय मालूम देता है। वहां पर बिलस्त भरके एक बिच्छूको मैंने देखा और वहींसे लौट आया। उस गुफाको लोग कहते हैं कि यह पाण्डवोंके समयकी गुफा है, उसका जल बहुत ही उत्तम और स्वादिष्ट है। वह जल पञ्जोर (पञ्चपुर) में एक बावड़ी बनी है उसमें निकलता है, उस गुफासे पञ्जोर चालीस मील की दूरी पर है, परन्तु भीतरी रास्तासे लगभग पन्द्रह बीस मील होगा। उस जलको पाण्डव लोग या जिन्होंने बसाया वे लोग पञ्जोरको लै गये थे। और पञ्जोरनगर पांचों पाण्डवोंके नामसे बसा था, पञ्जोरका नाम संस्कृतमें पञ्चपुर† होता है। संस्कृतसे प्राकृतमें

†क ग च ज त द प य वां प्रायोलुक्।
प्रथमद्वितीययोस्तृतीयचतुर्थौ। आद्‌गुणः।

अथवा यों कहिये अपभ्रंश नामोंमें जो परिवर्तन होता है उस ग्रामर (व्याकरण) के अनुसार पुर शब्द-की पकार लुप्त (सायलेंट) हो जाती है और पञ्च शब्द-के चकारको जगह पर जकार होजाता है। इस तरह पंज उर होजाने पर अ उ मिलकर ओ होजाता है। अर्थात् पंज शब्दके जकारका अकार और पुर शब्दके पकारका लोप होने पर अवशिष्ट उकार मिलकर ओकार होजाता है, इस तरह यह पंजोर शब्द पञ्चपुर-का अपभ्रंश है। अस्तु

यह पञ्चपुर नगर पांचो पाण्डवोंके प्रकट होने पर बसा था ? अथवा जिस समय उत्तराका अभिमन्यु के साथ विवाह हुआ था उस समय बसा था ? अथवा संग्राम हो जानेके बाद अवशिष्ट पाण्डवोंके नामसे विराट नरेशकी प्रजाने बसाया था ? यह ठीक २ अनु-सन्धान करके कहना तो कठिन है, परंतु संभवतः यही प्रतीत होता है कि उत्तराके विवाह-समयमें ही यह नगर बसा था। इसी पञ्जोर नगरमें एक बावड़ी बनी है उसके आसपास तथा कुछ दूर तक प्राचीन महलोंके चिन्ह और प्राचीन कालीन पत्थर पड़े हुए मिलते हैं, कई खण्डहर पासमें हैं जिनके देखनेसे इतना अवश्यमेव पता लगता है कि यहां किसी समयमें कोई बड़ा शहर था। इस बावड़ीका जल बहुत ही ठंडा और मधुर है, इस बावड़ीके जलका और करोल-टिब्बेकी गुफाकी बावड़ीका एक ही स्रोत है जो कि गुफाके भीतर २ है। उसका प्रत्यक्ष रूपसे कई बार प्रमाण मिला है। निदान—करोलके टिब्बे पर 'वान' नामके कई वृक्ष हैं। ये वान नामक वृक्ष पहाड़ पर ही होते हैं, ये पञ्जोरसे तीस पैंतीस मील आसपास नहीं है, परन्तु कई बार पञ्जोरकी बावड़ीमें 'वान' नामक वृक्षकी पत्तियां देखी गई हैं, जिससे यह पूर्ण निश्चयं होता है कि ये पत्तियां करोल टिब्बेकी बावड़ीसे गुफाके मार्गसे बह कर पञ्जोरकी बावड़ीमें आई हैं। क्योंकि वानके वृक्ष सोलन तक कहीं पर नहीं हैं और पञ्जोर सोलनसे पैंतीस मीलकी दूरी पर है। इससे यह निश्चितरूपसे सिद्ध है कि करोल टिब्बेकी बावड़ी और पञ्जोरकी बावड़ीका गुफाके मार्गसे एकही सम्बन्ध है।

इससे यह सिद्ध होता है कि पञ्जोर (पञ्चपुर) जोकि पांच पाण्डवोंके नामसे बसाया गया था, वहां से लेकर करोल तक एक ही राजाका राज्य था। मैं यह नहीं कहता हूं कि यह राज्य यहीं तक अथवा इतना ही था। संभव है दूर देश तक वह राज्य विस्तृत था और वह राज्य मात्स्यराज्यसे ही प्रसिद्ध था, इस विषयका प्रमाण मैं प्रथम दे आया हूं।

यह मत्स्यदेश तथा विराट नगर देहली (इन्द्र-प्रस्थ) से उत्तर तरफ ही था इस विषयको महाभारत के ही प्रमाणोंसे मैं दिखाता हूं —

महाभारत उद्योगपर्व ५०वां अध्याय—

संजय धृतराष्ट्रसे यह बता रहा है कि हे महाराज ! पूर्वदेशके और उत्तरदेशके बहुतसे राजा आए हैं जिनके साथ मिल कर धर्मराज युधिष्ठर लड़नेके लिये तैयार हुआ है, उन्हीं पूर्वदेशके और उत्तरदेश के राजाओंके वर्णनमें मत्स्यदेशाधिपति विराट-नरेशका नाम आया है।

> य आसीत् शरणं काले पाण्डवानां महात्मनाम्।
> रणे तेन विराटेन भविता वः समागमः ॥४०॥
> एते चान्ये च बहवः प्राच्योदीच्या महीक्षितः।
> शतशो यानुपाश्रित्य धर्मराजो व्यवस्थितः ॥५०॥

जो विराटनरेश अज्ञातवास समयमें महानुभाव पाण्डवोंका रक्षक हुआ था उस विराटनरेशके साथ संग्राममें आप लोगोंका अर्थात् भीष्म द्रौणादिका समागम होगा। तात्पर्य यह है कि विराटनरेश पाण्डवोंका प्रथम अज्ञातवास समयमें रक्षक हुआ था, वह इस समय युधिष्ठिरकी तरफसे आप लोगोंके साथ लड़ेगा, इसी प्रकरणमें कतिपय अन्य राजाओं का वर्णन करके फिर संजय कहता है कि ये तथा और भी बहुतसे पूर्व तथा उत्तर दिशामें उत्पन्न होने वाले राजा पाण्डवोंके साथ हैं, जिनका आश्रय लेकर धर्मराज युधिष्ठिर तैयार हो गया है। तात्पर्य यह है कि विराट नरेशको उत्तर तरफके राजाओंके परि-गणनमें बताया है। अब देखना यह है कि देहलीसे उत्तर तरफ अम्बाला कालिका सोलन प्रदेश पड़ता है, और देहलीसे पूर्व तरफ कहीं पर विराट नगर अथवा

मत्स्य देश होगा ऐसो न संभावना ही है और नाही किसीका ख्यालहै, काशीराज इत्यादिक पूर्व दिशाके और विराट नरेशादिक उत्तर दिशाके रहनेवाले राजाओंको संजय बता रहा है। तो इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि मत्स्य देशाधिपति विराट नरेश अम्बाला कालिका प्रान्तके ही रहनेवाले थे। क्योंकि देहलीसे उत्तर तरफ यह प्रदेश है। जयपुर प्रान्त देहलीसे उत्तर तरफ नहीं है, किन्तु पश्चिम दक्षिण कोणमें है। अस्तु। अब सन्देह यह होता है कि देहलीसे उत्तर तरफ मत्स्य देश था। यह सिद्ध हो जाने पर भी अम्बाला कालिका प्रान्तमें ही विराट नगर तथा मत्स्य देश था यह कैसे माना जा सकता है ?

उत्तर—हम यह प्रथम बता आये हैं कि मत्स्यदेश बहुत बड़ा प्रदेश था, सम्भव है कि वह शिमला तथा अन्य देश तक विस्तीर्ण रहा हो, परन्तु विराट नगर अम्बाला कालिका प्रान्तमें ही था। क्योंकि गोग्रह समयमें जबकि पाण्डवोंका पता लगानेके लिए कौरव चढ़कर आये थे उस समय कौरवोंका और विराट नरेशका संग्राम हुआ था, दोनों तरफके रथी तथा महारथी भीष्म द्रोण कर्ण दुर्योधन इत्यादिक एवं विराट शङ्ख श्वेत उत्तर इत्यादिक रथ पर सवार होकर ही संग्राम किये थे। उन रथोंके संचालनके लिए सोलन तथा शिमला उपयुक्त स्थान नहीं था और कालिका अम्बाला प्रदेश युद्धके लिए तथा रथोंकी गतिके लिए अत्यन्त ही उपयुक्त था। अतएव यह स्पष्ट हो जाता है कि देहलीसे उत्तर तरफ पर्वत प्रान्त में रथोंसे युद्ध लायक अम्बाला कालिका प्रान्त ही है। अतएव यह सिद्ध है कि विराट नगर अम्बाला प्रान्त में था।

प्र० नं० ४—अब आप मार्कण्डेय-पुराणको देखिये। मार्कण्डेय पुराणके ५१ इक्यावनवें अध्यायमें लिखा है कि

वाराहः केतुमाले च मत्स्यरूपस्तथोत्तरे।

वाराहवतारधारी विष्णुभगवान्की मूर्ति केतुमाल देशमें पूजी जाती है, और मत्स्यावतारधारी विष्णु भगवान्की मूर्ति उत्तर देशमें पूजी जाती है। अथवा यों कहिये कि केतुमाल देशमें वराहावतार हुआ और उत्तरमें मत्स्यावतार हुआ। इसीसे इस प्रदेशको मत्स्य देश कहते हैं। जोहो, इससे यह निश्चित रूपसे सिद्ध है कि मत्स्यदेश उत्तर दिशामें पर्वतश्रेणीके प्रान्तमें था और वहीं पर समतल भूमिभागमें विराट नगर था। जिसके उपयुक्त कालिका अम्बाला प्रान्त था। यह उक्त प्रमाणोंसे निश्चित रूपसे प्रतीत होता है। अस्तु अब हम मत्स्य देशके नामकी प्रसिद्धिका कारण दिखाते हैं। आजसे तकरीबन दो हजार वर्ष पहले जम्बू द्वीपके इतिहासके विषयमें जम्बू द्वीप प्रज्ञप्ति नामकी एक पुस्तक लिखी है उसमें लिखा है कि संवर्त्तक मेघों के जलके कारण समस्त संसारके वृक्षादिक तथा वनस्पति जल गये और उस समय बारह सूर्योंके मिलकर तपनेके बराबर सूर्यमें सन्ताप होगया जिससे बचे बचाये सब वृक्ष वनस्पति औषधि सूखगये जल भी दुर्लभ हो गया। उस समय बहुलांश लोग अन्नजलके बिना मर गये। कुछ लोग उत्तराखण्डमें हिमालय प्रान्तमें चले गये। वहां भी इतना प्रखर सन्ताप होता था कि जिससे उनका मध्यान्ह समयमें चलना फिरना असम्भवसा था। नदीके किनारे कन्दराओंमें रहते थे, रात्रिसमयमें बाहर आते थे और प्रातःकाल सूर्यके निकलनेके कुछ कालतक नदियोंमें से मछली निकाल कर वहीं धूपमें डाल देते थे और फिर सायंकाल आकर सभाल लेते थे यही उनका प्रति दिनका आहार था, यही उनकी दिनचर्या थी। कुछ कालके बाद (दुःषम सुषम) बुरे समयके साथ अच्छे समयके आनेपर क्रमशः भारतवर्षमें सुकाल होने पर धीरे धीरे लोग आ गये। सम्भवतः इन मत्स्योंके बदौलत लोगोंकी रक्षा हुई थी और उत्तर पहाड़ परकी झीलोंमें ही इन मत्स्यों की उपलब्धि हुई थी। इसीसे इस प्रान्तका नाम मत्स्यदेश, हुआ। इससे यह भी निश्चित रूपसे सिद्ध होता है कि जितने देश हुए उनमें सबसे प्राचीन मत्स्य देश था अथवा यों कहिये कि मत्स्यदेश ही प्रथम हुआ, उसके बाद दूसरे देश हुए। जो हो, यह अवश्यमेव सिद्ध होता है कि उत्तर दिशामें हिमालय

प्रान्तसे लेकर समतल भूमिभाग तक जहांतक उस समय आय लोग आकर बस गये थे उस देशका नाम मत्स्य देश था। फिर कालान्तरमें समतल भूमिभागमें विराट नगर बसा था।

प्र०नं० ५—अब मैं उस स्थानके कतिपय महाभारत के प्रमाणोंको उद्धृत करके दिखाता हूं कि जिससे निर्विवाद यह सिद्ध हो जायगा कि अम्बाला प्रान्तमें विराटनगर था। मैं यह नहीं कहता हूं कि अम्बाला ही विराटनगर था, किन्तु अम्बालाके प्रान्तमें कहीं पर विराटनगर था और मत्स्यदेश अधिक विस्तार रूपमें था। देखिये वनपर्व जहांसे पाण्डव लोग अपनेको छिपा कर अज्ञात रूपमें बसनेका इरादा कर रहे हैं, उस वनपर्वके तिरासिवें अध्यायसे लेकर तिरानवे अध्याय तकके उपयुक्त कुछ वचनोंको दिखाऊंगा। जिससे निर्विवाद यह सिद्ध हो जायगा कि अमुक प्रान्तमें अथवा अमुक देशमें मत्स्यदेश तथा विराट नगर था, अस्तु। प्रथम पाण्डव लोग कुरुक्षेत्रसे चल कर मथुरापुरीको गये, जहां विष्णु-भगवान् सदा वास करते हैं।

सततं नाम राजेन्द्र ! यत्र सन्निहितो हरिः ॥श्लो० १०॥

भागवत—

मथुरा भगवान् यत्र नित्यं सन्निहितो हरिः।

हे राजेन्द्र ! जहां पर विष्णु भगवान् सदा ही रहते हैं वह मथुरापुरी है। इसी महाभारतके वचन का अनुग्राहक भागवतका वचन है, इसका भी यही तात्पर्य है। फिर मथुरापुरीसे चल कर पारिप्लव नामक तीर्थको गये, तदनन्तर शालूकिनी नामक तीर्थ को गये और उसके बाद फिर पञ्जाबको गये। पञ्जाब में जाकर भोजन इत्यादिमें तथा यम नियमके पालने में साधुवृत्तिसी धारण करली थी कि जिससे हम लोगोंको कोई पाण्डव न समझे तथा दुर्योधनके गुप्तचर (खुफिया पुलिस) पाण्डव न समझ कर पीछा करना छोड़ दें। अस्तु— तदनन्तर पञ्जाबसे पूर्व दिशाकी तरफ पाण्डव लोग आए और फिर मत्स्यदेशमें प्रवेश किया। अब देखिये पञ्जाबसे पूर्व दिशाकी तरफ आनेमें अम्बाला जगाधरी इत्यादि स्थान ही पड़ता है, और फिर पूर्व दिशाकी तरफ मुंह करके चलनेके बाद दो-चार रोजमें ही अम्बाला जगाधरी आजाता है। देखिये महाभारत वनपर्वमें इस तरह वर्णन आया है—

ततः पारिप्लवं गच्छेत्तीर्थं त्रैलोक्यविश्रुतम् ॥२२॥

श्री महामुनिराजजी राजा युधिष्ठिरजीको तीर्थोंको बताते हुए कहते हैं कि हे राजन् ! इसके बाद आप पारिप्लव नामक तीर्थको जाइयेगा। यह तीर्थ बहुत ही उत्तम है, और यह तीर्थ तीनों लोकमें प्रसिद्ध है। तात्पर्य यह कि इस तीर्थपर देवता भी तीर्थबुद्धिसे आते हैं।

ततः शालूकिनीं गत्वा तीर्थसेवी नराधिप ! ॥१॥४

हे राजन् ! तदनन्तर आप शालूकिनी नामक तीर्थको जाइयेगा। आपका तीर्थवास करनेमें बड़ा ही प्रेम है। शालूक तीर्थ रोपड़के पास है।

ततः पंचनदं गत्वा नियतो नियताशनः ॥१६॥

तदनन्तर फिर आप पञ्जाबको जाइयेगा।

शालूकिनी तीर्थस्थान पर जाकर फिर इसी पञ्जाबमें पाण्डव लोग आए। इस देशमें कुछ काल इतस्ततः ठहर कर रहन सहनमें परिवर्तन कर दिये, यम नियमादिकोंका पालन करने लगे, भोजनमें भी परिवर्तन कर दिये, समयमें तथा वस्तुमें नियम कर दिये। इस तरह नियताशन होकर रहने लगे। अतएव कौरवोंके गुप्तचरोंका पीछा छूट गया। कौरवोंके गुप्तचर क्या अब इनको इनके पार्श्वचर भी सहसा पहिचान नहीं सकते थे। आचार विचार व्यवहार रहन सहन सब इनकी पूर्वकालसे दूसरे ही प्रकार की होगई। तदनन्तर ये पूर्व दिशाकी तरफ गये। महाभारत वनपर्व—

प्राङ्मुखाः प्रययुर्वीराः पाण्डवा जनमेजय ! ॥३६ अ०६३॥

हे जनमेजय ! फिर पञ्जाब देशके बाद ये लोग पूर्वदिशाका लक्ष्य करके चले। तदनन्तर मत्स्यदेशमें प्रवेश किया। इससे भी यही प्रतीत होता है कि मत्स्य-देश अम्बाला कालिका आदि पर्वत प्रदेशमें था।

अनुभवसिद्ध जनरल - चांस

[ले०—ज्योतिषरत्न श्रीराजाराम जैन सामुद्रिक विशेषज्ञ सम्पादक—'भविष्यदर्पण']

गतांकमें 'आषाढ़ी पूर्णिमाको पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र और गुरुवार अतः १ वर्ष मन्दी' ऐसा लिखा था, साथ ही यह भी लिखा था कि प्रायः कई क्षेत्रोंमें पूर्णिमाको सूर्यास्तकालमें पूर्वोत्तर या पूर्व दिशाकी वायु चलेगी तथा आठों प्रहर बादल भी रहे, तदनुसार अलीगढ़से बनारस पर्यन्त प्रायः– इसी दिशाकी वायु चलनेके फलस्वरूप खेती भी श्रेष्ठ ही होगी जबकि बिहार, उड़ीसा देवरिया गोरखपुर उपजका स्थान नहीं अपितु खपतके स्थान हैं, किन्तु फिर भी इस वर्ष उधर वर्षासे अधिक नाश तथा अलीगढ़ प्रान्तसे आगे ज्यों-ज्यों बढ़ते जाओ अर्थात् दिल्ली पंजाबमें वर्षाकी कमी रही है, वहाँ उपजकी भी कमी रहेगी। तथा 'श्रीस्वाध्याय'' पृष्ठ ५२ कालम २ पंक्ति २५ में लिखा है कि "भाद्रपद मासमें पांच रविवार, जिनकी जग जाहर तरवार।" तथा १६ अगस्तको सिंह संक्रान्ति ग्रहलाघवानुसार पांचवें वार छठे नक्षत्रमें भूखी लगी, प्रातः लगने वाली सक्रान्तिको भूखी कहा जाता है, फलस्वरूप भाद्रपद मासने तेजीका चमत्कार दिखा दिया तथा ३० अगस्तको शुभवारा सोमवारा चन्द्रदर्शन और वह भी ४५ मुहूर्ता ७२ घण्टेको तेजीका अस्तित्व ही समाप्त कर देगा, फलस्वरूप वैसा ही हुआ। केतकी गणितानुसार सर्वाङ्ग शुद्ध कर्के गुरु ६ सितम्बरको आया, आते ही शुष्क एवं निर्मल स्थानोंमें वर्षा करी, यही इसकी सत्यताका प्रत्यक्ष प्रमाण है, तथा भावोंमें तूफानी मन्दी करके दिखा दी जो कि ''भविष्य दर्पण'' मासिक पत्र में स्पष्ट रूपसे मन्दा ही छापा गया है। प्रायः ग्रन्थोंमें कर्के गुरुः तेजी कारक ही लिखा है किन्तु मैं अपने मित्र दैवज्ञों से प्रार्थना करूंगा कि इसका उत्तर केवल यही है कि जो समय से पहले आवेगा – या अधिक दिन अथवा कम दिन रहेगा उसका अनादर होना अनिवार्य है—फलस्वरूप देहली जंकशन पर समयसे पहले आई रेल गाड़ी को सिगनल पर ही रोक दिया जाता है, यही अपमान और मन्दीका कारण है। अब आगे भी ३ मई सन् ५५ को भी कर्के गुरुः होगा तब भी श्रेष्ठ मन्दी नहीं अपितु श्रेष्ठतम मन्दी स्थायी रूपसे चलावेगा, यह तो समय ही बतायेगा अधिक क्या लिखें।

"विद्वानेव हि जानाति विद्वज्जन परिश्रमम्''।

विजया दशमी शुभवारी गुरुवारी श्रवण नक्षत्र युक्त घोर मन्दी कारक है। यहाँ इस दिन जो व्यापारी जो भी अधिक मन्दी वस्तु खरीद लेगा उसका भाग्य अच्छा समझा जावेगा। करणग्रन्थानुसार शन्यस्त बादल वर्षा हवाका जोर प्रायः प्रत्येक स्थानमें दिखादे आश्चर्य नहीं। आज ही गुरु हर्षलकी युति १२ ४७ P. M. पर योगसे विपरीत फल अर्थात् श्रेष्ठ तेजी उन्हीं वस्तुओंमें करेगी जो कि ६ से १५ सितम्बर तक अचानक धमसे गिर गई थी। ता० ८ अक्तूबरको करणग्रन्थानुसार बुध वक्री होगा जो कि बादल हवाके जोरमें बस्तु मात्रकी लायन पलट देगा, अर्थात् पीछे से चली आने वाली मन्दी समाप्त हो जावेगी। २७ मार्च सन् ५४से धनु राशि पर चला आने वाला भौम साढ़े छः मास में अपनी अपमानित अवस्थामें (अधिक दिन रहनेके कारण) वस्तुओंका अपमान अर्थात् वस्तुओंमें मन्दी कराता रहा। ता० १० अक्तूबरको अपनी उच्च राशिमें जाते ही बादल वर्षा हवाका जोर, अपना और अपनी अधिकृत वस्तुओंका सम्मान कराये बिना न रहेगा। अतः कमसे कम चार दिन अर्थात् शरद् पूर्णिमा पर्यन्त चांदी सोना गुड़ सरसों अरहर मटर लालमिर्च लालरंग शेयर्स जूट पाट बारदाना रुई रेशम ऊन कपड़ा तेवड़ा चना खेसारी ग्वार उड़द मूंग मोठ मसूर लोंग कालीमिर्च दाल चीनी तम्बाकू पारा लाख चपड़ाकी मांग एक दम बढ़ा देगा। १ अक्तूबरको टायम ६।१ A. M. से १२।१२ P. M. पर्यन्त पात योग समस्त शुभ कार्यों के लिये सर्वथा बर्जित है, कोई शुभ कार्य यात्रा आदि करने वाले दुष्ट फल प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे, अतः इस समय से पहले किया कार्य मध्यम किन्तु इस कालके प्रारम्भ हो जाने पश्चात् उक्तावधिमें किया गया कार्य निश्चय ही नाशको प्राप्त होगा, चाहें तो अनुभव कर देखें. अविश्वासियों को चैलेंज है। इस अवधिमें यहां प्रायः सभी वस्तुयें तेज होंगी, बादल वर्षा पूर्णिमाको हों तो अवश्य ही आगे तेजी

होगी । अश्विनी पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) अपने नक्षत्र अश्विनी से रहित है अतः अगला मास खाद्य वस्तु मात्रमें तेजी लावेगा ।

कार्तिक मासमें —पांच बुधवार हैं अतः खाद्य वस्तु मात्र तेज होगी, क्यों ? बुध बनिया ग्रह है अतः वणिकोंका सम्मान किये बिना न रहेगा, इस मासमें नये भावोंका दिग्दर्शन होगा । द्वितीयाका क्षय बढ़ते चले आने वाले भाव धमसे गिर जावेंगे । १५ अक्तूबरको वक्री शुक्र बादल वर्षा चांदी सोनामें तेजी ला सकता है, जबकि रुई रेशम कपड़ा जूट पाट कंतान हेशियन बारदाना ऊन रेशम कालीमिर्चमें लम्बी लायन तेजीकी बना रहा है । गुड़में निश्चित रूपसे श्रेष्ठ मन्दा होगा । करणग्रन्थानुसार आज ही बुध भी अस्त होगा जो कि चांदी सोनाको न जाने किधर ले जावे अतः रुख देखकर कार्य करें । जब जब तिथि चतुर्थीको चांदी तेज या मन्दी रहती है वही लायन एकादशी तक प्रायः चलती है । केतकी गणितानुसार १७ अक्तूबरको शुक्र गुरुका नवम पंचम योग मन्दीका प्रतीक है । तुला संक्रान्ति ग्रहलाघवानुसार तीसरे वार पांचवें नक्षत्रमें तिथि षष्ठी और रविवारमें १५ मुहूर्ता लगेगी बस यों समझिये कि गिलोय (गड़ूची गुर्च) नीम पर ही चढ़ गई अर्थात् तेजीका ढोल पिटवा देगी । गुड़ विशेष तेज होगा १७ अक्तूबर की शामसे ढाई दिनमें चांदी तेज होगी । रात्रिको ११ बजे मंगल हर्षलकी प्रति युति मन्दी कारक है । १६ अक्तूबर को केतकी गणितानुसार बुध वक्री शनि अस्त तथा मंगल गुरु प्रति युति घोर मन्दा लावे आश्चर्य नहीं । अष्टमी मंगलवारी और पुष्यनक्षत्र युक्त रेशम रुई कपास कपड़ा बारदाना जूट पाट कंतान कुष्ठा कालीमिर्च नारियल की जटा रस्सी मूंज पतेलके भावोंमें असाधारण तेजीका योग बना है—

दीपावलीके मुहूर्तमें जो वस्तु तेज या मन्दी रहे वह वस्तु पौषी-अमावस तक प्रायः उसी लाइन पर चलती है जैसे मिट्टी के दीपकसे चांदी सोना, रुईसे ओढ़ने बिछाने की चीजें खील से अन्नादि तेलका प्रभाव तिलहन पर, खांड के खिलौनों से गुड़ खांड पर प्रभाव होगा । तारीख २० १०-५४को रात्रिमें स्टेण्डर्ड टाइमसे ३–४५ प्रातः परगात योग लगेगा । जोकि २१-१०-५४कोम-३२ प्रातःतक रहेगा । इसका फल पहले लिखा जा चुका है । २३ अक्टूबरको केतकी गणितानुसार बुधास्त पश्चिममें बाजारकी लाइनको पलट देगा । नरक चतुर्दशी (यमदीपदान) की मन्दीमें गुड़ खरीदो । दिवालीके मुहूर्तकी तेजीमें बेचो । डबल बेचो दीपावली मंगलवारी पुनः सम्वत २००८ की भांति आगई है अतः व्यापारी महोदय सावधान । मंगलवारी परै दिवारी, हंसे किसान रोय व्यापारी । अर्थात् किसान मारकेटमें माल लाकर तेज भावोंमें बेचकर प्रसन्न होगा व्यापारी(भड़सारी) भड़सार करके (स्टाक करके) मर जायगा । दीपावली का विस्तृत फल "भविष्य दर्पण" में पढ़ियेगा । प्रतिपदा बुधवारी खाद्य वस्तुओं में भयानक तेजी लाने की अपूर्व क्षमता रखती है । तथा सोना चांदी ४५ दिनमें मन्दा करेगी । शुक्ला २ को शुभवारा गुरुवारा ४५ मुहूर्ता चन्द्र दर्शन भयंकर मन्दीका द्योतक है सावधान । शुक्ला ४ रविवारी मूल नक्षत्र युक्त घोर दुर्भिक्षकारी सिद्ध होगी । २ नवम्बरको करणग्रन्थानुसार शुक्रास्त पश्चिममें (शुक्र वक्री होकर अस्त) अतः चांदी, सोना, गुड़ मन्दे ओढ़ने बिछानेकी सारी वस्तुएं एक दम विशेष तेज होंगी । अन्य वस्तुयें भिन्न भिन्न लायन पकड़ेंगी । ३ नवम्बर को करण ग्रन्थानुसार बुधोदय प्राक् भावोंमें ज्वार भाटा या मन्दी, सिक्केमें परिवर्तन, बादल वर्षा निश्चय ही एक दिन पहले से ही प्रारम्भ हो जावेगी । आज ही पात योग टाइम २१।५५ रात्रि से तारीख ४ नवम्बरको ३।१६ प्रातः तक रहेगा फल पहले लिखा चा चुका है । शुक्ला ८ से १६ दिन यमदंष्ट्रा (यमकी दाढ़) दिन कहे गये हैं । इस कालमें पथ्यकारक भोजन करना चाहिए अन्यथा स्वस्थ मनुष्य रोगी तथा रोगी मनुष्योंके प्राण संकटमें पड़ जाते हैं । गुरुवारको अष्टमी उपरान्त नवमी अतः गुड़ खांड तेज होंगे । ग्रहलाघवानुसार शुक्ला दशमीका क्षय केतकी गणितानुसार बुधोदय प्राक् सर्व वस्तुएं प्रायः तेज करेगा । शुक्ला ११ को जहां-जहां बादल बिजली गर्जना इन्द्रधनुष सूर्य चन्द्र पर कुण्डल सूर्य चन्द्रमा बादलों से निकले तो आषाढ़ मासमें तथा चातुर्मासमें श्रेष्ठ वर्षा होती है, तथा आने वाले ज्येष्ठ मासके कृष्ण पक्षमें भी (कृत्तिकायां रविः) वर्षा होनेकी आशा रखनी चाहिए । यह मेघ गर्भाधान की पहली तिथि शास्त्रों में कही गई है, तथा चैत्र मास

पर्यन्त गर्भाधान काल कहा गया, यहांसे चैत्र मास पर्यन्त जिस तिथिको जहां-जहां उपरोक्त लक्षण होंगे ठीक १९५ दिन बाद वहां वर्षा होगी। कृष्णपक्षके गर्भाधानसे आगे शुक्ल पक्षमें तथा शुक्लपक्षके गर्भाधानसे आगे कृष्ण-पक्षमें वर्षा होती है, तथा रात्रिमें हुआ गर्भ दिनमें, दिन में हुआ गर्भ आगे रात्रिमें वर्षा करेगा। प्रातःकालका गर्भ सायंकाल, सायंकालका गर्भ प्रातःकाल, दोपहर का गर्भ अर्धरात्रिको, अर्धरात्रिका गर्भ दोपहर को। इसी प्रकार घण्टोंका भी निकाला जा सकता है। किन्तु गर्भा-धानके दिन ३० सैण्टसे अधिक वर्षा हो जाने पर या ओलापात होने पर गर्भाधान नष्ट हुआ जानना चहिए। ज्योतिष विद्या पर अविश्वास करने वालोंको चैलेंज है कि वे परीक्षा कर देखें। शुक्ला १२ को रातदिन आठों प्रहर निर्मलता रहे तो पुष्पबन्ध हुआ जाने, किन्तु बादल आदि हो पुष्प खुला हुआ जानना चाहिए। करण ग्रन्थानुसार मार्गी बुध गुड़ आदि सर्व रस मन्दे चांदी सोना में विचित्र तेजी होगी। ८ नवम्बरको केतकी गणितानुसार शुक्रास्त पश्चिममें मार्गी बुधः चांदी सोनामें तेजी। रुई, रेशम, कपड़ा, ओढ़ने बिछाने की चीजोंमें मन्दा होगा। कार्तिकी पूर्णिमा कृतिका रहित भारी तेजीकी सूचक है। व्यापारी मात्र उपरोक्त फलको सच्चा पाकर प्रसन्न हुए बिना न रहेगा, कारण मन्दीकी मार ने व्यापारियोंको भी मन्दा कर दिया है अब यह तेजी आनेसे व्यापारियोंके मुखसे तेज (ओज) टपकने लगेगा, किन्तु खबरदार तेजी बहुत समय नहीं ठहरेगी। प्रभुकी कृपासे जंगलमें मंगल (सुमायश) होगा। विशेषको तो श्री भगवान्‌जी ही जाने, अतः लाभ हानिका पूर्ण उत्तर दायित्व अपने ही ऊपर जानकर बाजारकी पोजीशनको टेलीफोन, अखबार द्वारा समझते हुए व्यापार करें। क्योंकि ज्योतिषी सर्वज्ञ नहीं अपितु "भ्रान्तिर्मनुष्य धर्मः" इस सूत्रको ध्यानमें रखें।

त्रैमासिक व्यापार-रुख

चांदी, रुई, गुवार, मटर, गुड़, शेयरकी लम्बी लाइन

[ले०—श्रीगणेश दैवज्ञ]

७ अक्टूबर १९५४ से प्रारम्भ—

ता. ७ अक्टूबर से ८ को बन्द बाजार तक तेजी रहेगी। ता. ९ से १२ तक आये उछाले बेचना और घटे खरीदना, बाजार दुतर्फा चलेगा। मन्दी आये परन्तु ठहरेगी नहीं। ता. १३ से १८ तक बाजारोंमें अच्छी तेजी चलेगी, भाव बढ़ते ही चले जायेंगे, उपरोक्त वस्तुओंके नफा खाते चलना चांस हैं। ता. १९ को बाजार देखना जिधर बाजार चले उधर ही चलती गाड़ीमें सवार हो जाना, ता. २१ तक एक लाइन बाजार चलेगा, ता. २२ से २६ तक की लाइन बनेगी, ता. २२ का बाजार देखना आवश्यक है। ता. २७ से २९ तक अच्छी तेजी, ता. ३० को दोनों तरफ बाजार चले, ध्यान तेजीका ही रखना।

नवम्बर १९५४

ता १ से ४ तक अच्छी तेजी। ता. ५-६ दुतर्फा बाजार चलेगा। ता. ८ से १० तक मंदीके झटके लगेंगे, इनमें माल खरीदना चाहिये, ता. ११ से १५ तक हर घटे भाव खरीदो और नफा खाते रहो तेजी चाहे कितनी भी आये, परन्तु आयेगी अवश्य, ता. १६ से १७ के बंद बाजार तक नजराने लाभ दायक। ता. १५ के १२ बजेके करीब बाजार पलटेगा, सायंकाल तक जिधर बाजार चले उधर ही ता. १६, १७ को बाजार निश्चय चलेगा। ता. १८ से २० के बन्द बाजार तक तेजी बाजारोंमें अवश्य आयेगी, ता. २२ को मंदी का झटका लगेगा, ता. २३ से २५ को सायं ४ बजे तक अच्छी तेजी आ जायेगी। ता. २६, २७ दोनों दिन बाजार फिर डावां-डोल हो जायेगा, परन्तु ता. २६ को तेजी आकर ता. ३० को बाजार मन्दे रहेंगे।

दिसम्बर १९५४

ता. १ को बाजारोंमें मंदीकी अच्छी हवा रहेगी। ता.

त्रैमासिक व्यापार - भविष्य

[श्री हेमंतकुमार शर्मा साहित्यालंकार]

हमने अपने गत लेखमें लिखा था कि अगस्त मास में मंदे की लाइन बनेगो। किन्तु हमारा यह विचार बिल्कुल गलत निकला तथा १० अगस्तसे २६ अगस्त तक इतनी तेजी आई कि गुवार ६॥।) से ८।।), सरसों जेठ वायदा १७) से २०।), रुई ३२० एफ ७०) से ७७) प्रतिमन भाव हो गया। १ सितम्बरसे ६ सितम्बर तक हमने तेजीकी लाइन लिखी थी। किन्तु बाजार पहले ही तेज हो चुके थे। इन दिनों में बाजार डांवाडोल रहा तथा कुछ मंदा ही आया। हमें इस गलतीका दुख है आशा है। कि भविष्यमें अधिक सावधानी द्वारा लिखे जानेके कारण ऐसी गलती न होगी।

वास्तवमें भविष्यका संपूर्ण ज्ञान तो अखिल-ब्रह्मांडके स्वामी अंतर्यामी भगवान्‌के अतिरिक्त और किसे हो सकता है? मनुष्य तो अपनी बुद्धिके अनुसार, हमारे प्राचीन विद्वानों तथा ऋषियों द्वारा प्रतिपादित ज्योतिष शास्त्रकी सहायता द्वारा भविष्यका ज्ञान प्राप्त करनेकी चेष्टाका अधिकारी मात्र है। अपने भाग्य तथा ग्रहदशाके अनुसार मनुष्य अपनी इस चेष्टामें सफल असफल होता रहता है तथा व्यापारमें हानि या लाभ उसे होता है।

अत: सबसे पहला कर्तव्य तो व्यापारी मात्रका यह है कि व्यापार आरम्भ करनेसे पहले अपनी ग्रहदशाका ज्ञान प्राप्त करें। यदि अपनी ग्रहदशा अच्छी हो तो बिना किसी ज्योतिषीके बताए हुए चांसके ही, अपनी समझके अनुसार जो भी काम वह करेगा, उसमें लाभ ही लाभ होगा। यदि ग्रहदशा अच्छी न हो तो चांस सोलह आने ठीक होते हुए भी कोई मनुष्य लाभ प्राप्त नहीं कर सकता। चाहे वह कितना ही यत्न करे, उसके रास्तेमें कोई न कोई विघ्न पड़ता ही रहेगा। ऐसे समयमें मनुष्यको अपना समय शांति तथा धैर्यसे व्यतीत करना ही श्रेयस्कर है।

हमारा विचार था कि १० सितम्बरसे मंदेकी लाइन चालू होगी क्योंकि बृहस्पति तथा वरुण कर्क राशिमें इकट्ठे हो गए हैं। हमारा यह विचार सत्य प्रतीत होता है। आज १६ सितम्बरको, यह लेख लिखते समय, जैतो मंडीमें गुवार माघ वायदा ६॥) से ८॥), सरसों जेठ वायदा २०।) से १८।) तथा रुई ३२० एफ़ ७७॥) से ७६॥।) हो चुकी है। हमारे विचार में २१ सितम्बरसे भारी मंदेकी लाइन बनेगी तथा १० अक्टूबर तक बाजार मंदे होते चले जाएंगे। 'श्रीस्वाध्याय' का यह अंक जिस समय आपके पास पहुंचेगा, उस समय तक इस विचारकी परीक्षा आप कर चुके होंगे। गुवार, गुड़, सरसों, मटर तथा अनाज, इन सब वस्तुओं पर मंदेका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। किन्तु रुई, सोना तथा चांदीके विषयमें हम अपना विचार निश्चित नहीं कर सके। विशेष योग—७ अक्तूबरको प्रातःकाल मंदे लगाएं। गुरु वरुणकी अंशात्मक युति होनेके कारण ३ बजे के लगभग विशेष मंदा आएगा।

१० अक्तूबरको मंगल महाराज अपनी सर्वोच्च राशि

२, ३, को बाजार तेजी का समर्थन करेंगे। ता. ४ से ता. ६ के ४ बजे तक साधारण मंदीके झटके से लगेंगे। ता. ६ को सायं ४ बजेसे तेजी चालू होगी, ता. ८ को सायंकाल ६ बजे तक रहेगी। ता. ८ की रात्रि से ता. १० को बंद बाजार तक मंदी वाले सटोरियोंकी धाक जम जाये। ता. ११ से १६ तक बाजारोंमें तेजी वालोंको अच्छा पैसा मिल जायगा। ता. १७ से १८ के बंद बाजार तक मंदीके झटकोंमें खरीदो और ता. २१ को मध्याह्न १ बजे तक तेजीमें रहो और नफा खाते रहो। ता. २१ को १ बजे पीछे बाजार की लाईन पहिचानों, जिस प्रकार बाजार चले इसी प्रकार ता. २२, २३ को बाजार चलेगा। ता. २३ को ३॥ बजे सायंकाल बाजार तेजीकी तरफ पलटा खा जायेगा। ता. २४, २५ को सायंकाल तक तेजी का नफा खालेना चाहियें। ता. २७ को बाजारमें मंदी आये तो खरीदो वर्ना नजराना लगाकर व्यापार करो, ता. २८, २९, को तेजी ही रहेगी, ता ३०, ३१ दुतर्फा बाजार चलता रहेगा। ता. १ से ३ जनवरी १९५५ घटे भाव खरीदो और हाथों हाथ नफा ले लो। शेष अगले अङ्क में।

—

मकर में प्रवेश करेंगे। बुध पहले ही तुला राशि पर शनिसे आ चुका है । अतः यहांसे बाजार तेजीकी तरफ पलटा खाएगा । बिके हुए मालका नफा खाकर १०-११ अक्तूबर से मालकी खरीदारीका काम आरम्भ कर देना चाहिए। ऊपर लिखी सभी वस्तुओंमें तेजी अच्छे रूपसे आएगी। विशेषकर गुड़में ५) मनकी भारी तेजी आनेका योग है। तथा चनोंमें भी २) मनकी तेजीका योग है । मंदड़िए व्यापारियोंको चाहिए कि अपना सब व्यापार सेटल करके शांति तथा धैर्यके साथ अपने घर बैठे रहें, अन्यथा उनको भारी नुकसान उठाना पड़ेगा । यह तेजीकी लाइन १७ नवंबर तक चालू रहेगी। १७ नवम्बरको गुरु महाराज वक्री होंगे, तथा २४ नवम्बरको मंगल राशि परिवर्तन करेगा। अतः हमारे विचार में १७ नवम्बर तक लिए हुए माल का नफा खा लेना चाहिए।

यदि हमारी ऊपर लिखी हुई भविष्यवाणीसे आपको लाभ हो तथा आगे के लिए हमारी सम्मति जानना चाहें तो श्रीस्वाध्यायकी मारफत पत्र लिखकर पूछ सकते हैं। इस विषयमें हम यह बात भी आपको बतला देना आवश्यक समझते हैं कि चांस बतानेकी न तो हम कोई फीस लेते हैं और न ही आपके नफेमें से किसी प्रकारका हिस्सा मांगने की हमारी आदत है। हमें तो ज्योतिष शास्त्रके अध्ययनका शौक है तथा हम स्वयं भी व्यापार करते हैं । अतः अपने प्रेमी व्यापारियोंकी सेवा बिना किसी लोभ लालचके ही करते रहते हैं।

दिसम्बर मासमें व्यापारमें बहुत उथल-पुथल होगी, एतदर्थ सभी व्यापारियों को चाहिए कि नफा साथ की साथ खाते रहें। गुवार तथा सरसों मटर चनोंमें रुख तेजी का रहेगा। चांदी तथा रुईमें अधिक हलचल होगी । तथा रुईमें मंदी का रुख रहेगा। बुध ता० १ दिसम्बरको अस्त होगा यह गुवार, सरसों, मटर चनोंमें अच्छी तेजी लाया करता है। १० दिसम्बर शामको चन्द्रमा केतुके सामने आयेगा । एतदर्थ मन्दे का झटका आना चाहिए। ११ दिसम्बर शामसे १६ दिसम्बर तक गुवार, सरसोंमें अच्छी तेजी आनी चाहिये। १७ दिसम्बरको शुक्र तथा शनिकी अंशात्मक युति होगी यह रूई-चांदीमें मन्दी अवश्य लायेगा । २५ दिसम्बरको गुरुवार सरसों मन्दा खुल कर तेज होंगे । फिर ८ जनवरी को गुरु तथा हर्षल की युति होगी इसके बाद मन्देकी लाईन चलेगी।

त्रैमासिक पर्वव्रतादि निर्णय

अक्टूबर १९५४ ई०

ता. १५ शुक्रवार—श्री गणेश ४ (करवाचौथ) व्रत-चन्द्रोदय । स्टैण्डर्ड टाइम रात्रि ६।११ ।

१७ रविवार—तुला संक्रान्ति ८।४२ उ० मु० १५ ।

१९ मंगलवार—अहोई अष्टमी ।

२२ शुक्रवार—रमा एकादशी व्रत ।

२३ शनिवार—सायंकाले गोवत्सपूजन ।

२४ रविवार—प्रदोषव्रत धन १३ श्रीधन्वन्तरि जय.

२५ सोमवार—रूपचतुर्दशी नरकहरा १४ ।

२६ मंगलवार—दीपमालिका श्रीमहालक्ष्मी पूजन ।

२७ बुधवार—अन्नकूट गोवर्धन पूजन, वष्टिकाकर्षण ।

२८ गुरुवार—भ्रातृटिक्का यम २ दवातकलम पूजन

नवम्बर १९५४ ई०

ता० ३ बुधवार—गोपाष्टमी ।

५ शुक्रवार—आमला ९ अक्षया कूष्माण्ड ९ ।

६ शनिवार—हरिप्रबोधिनी एकादशीव्रत स्मार्त्त-

७ रविवार—११ व्रत वैष्णवोंका चतुर्मास समाप्ति ।

८ सोमवार—सोम प्रदोष व्रत ।

९ मंगलवार—वैकुण्ठ चतुर्दशी व्रत ।

१० बुधवार—सत्यव्रत कार्तिकी पूर्णिमा मेला-
[पुष्करराज भीष्मपंचक समाप्ति कार्तिक स्नानसमा. ।

१३ शनिवार—श्रीगणेश ४ चन्द्रोदय ९।३८ ।

१६ मंगलवार—वृश्चिक संक्रान्ति मु. ४५ ।

१७ बुधवार—श्रीमहाकाल भैरवाष्टमी ।

२० शनिवार—उत्पन्ना एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंका

२१ रविवार—उत्पन्ना ११ व्रत वैष्णवोंका ।

२२ सोमवार—सोम प्रदोष व्रत ।

२५ गुरुवार—अमावास्या ।

२७ शनिवार—चन्द्रदर्शन ।

दिसम्बर १९५४ ई०

ता० १ बुधवार—स्कन्द षष्ठी ललिता ६ चम्पा ६ ।

६ सोमवार—मोक्षदा एकादशीव्रत श्री गीताजयन्ती ।

७ मंगलवार—भौम प्रदोष व्रत ।

९ गुरुवार—सत्यव्रत पूर्णिमा श्रीदत्त जयन्ती ।

१३ सोमवार—श्रीगणेश ४ व्रत चन्द्रोदय ९।२० ।

१५ बुधवार—धनुः संक्रान्ति मु० ३० पुण्यकाल
[अगले दिन ।

२० सोमवार—सफला एकादशी व्रत स्मार्त्त गृहस्थोंका

२१ मंगलवार—सफला ११ व्रत वैष्णवोंका ।

२२ बुधवार—प्रदोष व्रत ।

२५ शनिवार—शनैश्चरी अमावास्या ।

२६ रविवार—चन्द्र दर्शन ।

जनवरी १९५४ ई०

ता० १ शनिवार—जन्मदिन श्री गुरुगोविन्दसिंहजी ।

४ मंगलवार—पुत्रदा एकादशी व्रत ।

प्राप्ति स्वीकार

निम्नलिखित पुस्तकें हमें समालोचनार्थ अभी प्राप्त हुई हैं; इनकी आलोचना आगामी अङ्कमें प्रकाशित होंगी ।

'श्रीसनातनधर्मालोक' (दूसरा नवीन भाग) मूल्य ४।) ले०—श्री पं० दीनानाथजी शास्त्री सारस्वत विद्याभूषण ।

'शतकत्रयम्' मू० १) लेखक कविरत्न श्री पं० तेजभानुजी ।

'नामबन्धस्पन्दनम्' मूल्य ॥=) लेखक—श्रीपं० हंसराज जी कपिल ज्यौतिषाचार्य, हरियाना (होश्यारपुर) ।

'Perpetual market Forecast & Business Astrology' मूल्य १०॥) लेखक श्री पं० गंगाप्रसाद जी ज्योतिषाचार्य, मुरार (मध्यभारत) ।

निम्नाङ्कित ५ अंग्रेजी पुस्तकों के लेखक और प्रकाशक विजयवाड़ा के श्री प्रो० के० एन० स्वामी हैं—

1. Nehru's Exit ? मूल्य ३) रु०
2. Will congress clear out ? मूल्य ४) रु०
3. World prophecies For 1953-54
4. Fate of Kashmir मूल्य २)।
5. Pakistan Goes Red ? मूल्य २) ।

इनमेंसे कुछ पुस्तकोंकी एक-एक प्रति ही प्राप्त हुई हैं, अतः नियमानुसार उनकी दूसरी प्रति प्राप्त होने पर ही समालोचना हो सकेगी ।

फलित विशेषज्ञोंसे निवेदन

भारतमें अब भी ज्योतिशशास्त्रमें फलित-विभागके जानने वाले कुछ ऐसे अनुभवी विद्वान् हैं जो अपनी अनुभवसिद्ध प्रक्रिया द्वारा सभी भावों वा एक दो भावका चमत्कृत फल बता सकते हैं। परन्तु आश्रयके अभावमें साधन-सुविधा वा प्रोत्साहन न मिलनेसे वे आगे बढ़कर प्रकाशमें न आ सके और अनेक अपने अनुभवोंको साथ ही लेकर समाप्त हो गये। फिर भी खोजने पर कहीं-कहीं छिपी हुई विभूतियाँ मिल जाती हैं। हम चाहते हैं कि ऐसे सब फलित-विशेषज्ञोंका संगठन हो और उनको आवश्यक सहयोग, प्रोत्साहन देकर प्रकाशमें लाया जावे। जिस प्रकार डाक्टरी एवं आयुर्वेदमें कोई चिकित्सक किसी विशेष एक रोगका विशेषज्ञ (कोई दांतोंका ही एक्सपर्ट वा स्पेशलिस्ट होता है, कोई आंखका, कोई क्षय वा टी.बी. का तो कोई गुप्त रोगोंका) होता है। इसी प्रकार ज्योतिष फलित-विभाग में भी कुण्डलीके १२ भावोंके अलग-अलग विशेषज्ञ होने चाहिएँ और उन्हीं विषयोंपर अपने अनुभवके स्वतन्त्र ग्रन्थ भी प्रकाशित होने चाहिए। सभी विषयोंमें एक ही व्यक्ति विषेषज्ञ नहीं हो सकता "नहि सर्वः सर्वं विजानाति" विदेशोंमें जिन वैज्ञानिकोंने उन्नति की है, उन्होंने एक-एक विषयके अन्वेषणमें ही अपना जीवन लगा दिया तब सफलता मिली। इससे हमारा यह तात्पर्य नहीं कि प्रत्येक ज्योतिषी केवल एक भावके अतिरिक्त दूसरेका स्पर्श ही न करे। वे प्रत्येक भाव पर अन्वेषण विचार-विमर्श कर सकते हैं, पर किसी एक विषय पर अपना अनुशीलन अधिक बढ़ाकर उसके विशेषज्ञ बननेका प्रयत्न अवश्य करें। जैसे वैद्य डाक्टर सब रोगोंकी चिकित्सा करते हैं, पर उनमेंसे कई विशेष रोगके विशेषज्ञ भी माने जाते हैं।

'श्रीस्वाध्याय' के नववर्षके इस प्रथम अङ्कसे ही हमने किसी एक सज्जनकी जन्म कुण्डली विचारार्थ देने का निश्चय किया है, ताकि फलितके विशेषज्ञ विद्वान् उस कुंडलीके १२ भावोंका निर्णय हमारे पास लिख कर भेजें। किसी भाव पर उनका विशेष अनुभव हो तो वह भी हमें लिख दें। उस व्यक्तिके जीवनकी भूत वर्तमान और भविष्यकी घटनाओंका मिलान करने पर शास्त्रीय पद्धतिसे जिनका फल यथार्थ घटित होगा, उन्हें संस्था की ओरसे पुरस्कृत किया जावेगा।

नीचे जो जन्म-कुण्डली दी जा रही है, इसके प्रथम द्वितीय पंचम सप्तम नवम दशम और ग्यारहवें भाव पर विचार विशेष रूपसे अपेक्षित हैं। इस व्यक्तिको सूर्य चन्द्र मंगलकी विंशोत्तरी महादशाएं कैसी रहनी चाहिएं ? कुण्डली-फल-विचार सम्पादक 'श्रीस्वाध्याय' सोलन (हिमाचल प्रदेश) के नाम पर भेजना चाहिए। विचारणीय कुण्डली यह है—

श्री संवत् १९५९ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ गुरुवार, पुष्य नक्षत्र, ता० २० नवम्बर सन् १९०२ ई० जन्म समय रात्रि स्टे० टा० ९ – ३०, लग्न ३।७ जन्म स्थानके उत्तर अक्षांश २२।१७ पलभा ४।५५ और ग्रीन्विचसे पूर्व रेखांश ७२।३० हैं।

५ मं | ३ ने.
६ | ४ चं. | २
७ कु. रा. | १ के.
शु सू. ८ ह. | श. १० | १२
९ | ११

स्पष्ट ग्रह

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	ह.	ने.
७	३	४	६	९	७	९	६	७	२
४	१४	२२	२२	१८	२	०	०	२७	१०
५	५	१०	५	५	१०	५१	५८	१०	५
०	०	५	१	४	५	५२	०	३०	१५

—

लेखकोंसे निवेदन—

आगामी 'हेमन्ताङ्क' के लिए सब लेख मार्गशीर्ष शु० १५ ता० ९ दिसम्बर १९५४ तक हमारे पास पहुंच जाने चाहिएँ। इस अवधिके अनन्तर आने वाले लेख प्रकाशित न हो सकेंगे। इस बार श्री पं० गिरिधारीलालजी दैवज्ञ-भूषण और श्री पं० गंगाप्रसादजी ज्यो० के लेख बहुत विलम्बसे आनेके कारण ही इस अंकमें प्रकाशित नहीं हो सके।

— सम्पादक

चांदी सोना गुवारकी तेजी मन्दी

[श्री फूलचन्द जैन]

अपने अनुभवके आधार पर अक्टूबर मासमें १५ दिनकी दैनिक तेजी मन्दी चांदी सोना गुवारकी यहां दे रहा हूं। व्यापारी वर्ग इनका मिलान करके सत्यासत्यकी सूचना श्रीस्वाध्याय सम्पादकजीको देवें ताकि यदि उनकी आज्ञा हुई तो आगामी अङ्कमें तीन मासका विचार दे सकूंगा।

ता० १४ शुक्रवार तेज होकर मन्दा बन्द।
१६ शनिवार पर्याप्त तेज होकर मन्दा।
१८-१६ सोम-मंगल मामूली तेज होकर मंदा।
२० बुधवार तेज होकर मन्दा बन्द।
२१ गुरुवार मामूली तेज होकर फिर मंदा।
२२ शुक्रवार — ,, ,,
२३ शनिवार तेज होकर डबल मन्दा बन्द।
२४ सोमवार मन्दी होकर तेजी।
२६ मंगलवार तेज होकर मन्दा।
२७ बुधवार तेज होकर मन्दा फिर तेज।
२८ गुरुवार मामूली तेजी होकर काफी मंदी।
२६ शुक्रवार थोड़ा तेज होकर काफी मन्दा।
३० शनिवार—तेज होकर डबल मंदा।

एक अनुभूत प्रयोग —मक्खनलाल

जिस स्त्रीको गर्भ स्थिति न होती हो उसके पति तथा उसकी जन्मकुण्डलियों और दशान्तर्दशादिसे सन्तान बाधक ग्रहोंका निर्णय योग्य विद्वान् दैवज्ञसे करवाकर तदनुसार मंत्र यंत्र औषधिका प्रयोग करें। साथ ही मासिक धर्म (ऋतु स्नान) के बाद चौथे दिन गऊकी बछियाके गोबरको कपड़ेमें डालकर एक तोला रस निकाल कर तीन दिन तक पीना चाहिये। तीन चार मासिक स्नान के अनन्तर गर्भस्थिति हो जाती है।